www.deshbandhu.co.in खबरें लगातार...

राष्ट्रीय संस्करण

पत्र नहीं मित्र

देशबन्धु

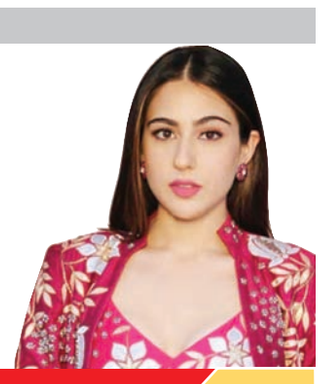

नई दिल्ली, सोमवार, 5 फरवरी, 2024 | वर्ष-16 | अंक -301 | पृष्ठ - 10 | मूल्य - 3.00 रुपए

ओम बिरला ने अनन्तशयनम आयंगर की श्रद्धांजलि अर्पित 02

- रेकी कर लग्जरी कार चोरी करने वाले गिरोह... 04
- कार सेवकों को राष्ट्र चेतना मिशन ने किया सम्मानित 04
- बिलावल भुट्टो का पारंपरिक राजनीति को... 07
- श्रीलंकाई नौसेना ने 23 मछुआरों को किया गिरफ्तार 07

भूल जाना और खुद को आगे बढ़ाना जरुरी है : सारा खान 10

सार संक्षेप

बेरोजगारी की गारंटी हैं मोदी : प्रियंका गांधी

नई दिल्ली। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने बेरोजगारी को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर हमला करते हुए कहा कि वह चुनाव आते ही गारंटी की बात करने लगते हैं लेकिन सच यह है कि मोदी रोजगार नहीं, बेरोजगारी की गारंटी हैं। श्रीमती वाड्रा ने कहा, देश में करीब 30 लाख सरकारी पद खाली हैं। हमारे करोड़ों युवा नौकरियों का इंतजार कर रहे हैं लेकिन पिछले 10 साल में भाजपा सरकार ने इन पदों को भरने के लिए दिखावे के सिवा कुछ नहीं किया।

घरों के बिजली का बिल शून्य करने की ओर बढ़ रहे : मोदी

गुवाहाटी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस बार के बजट में पेश वर्ष 2024-25 के अंतरिम बजट में रूफटॉप सोलर योजना को रविवार को बड़ी घोषणा बताया और कहा कि सरकार घरों का बिजली का बिल शून्य करने की दिशा में बढ़ रही है। श्री मोदी ओडिशा और असम के दो दिन के दौरे के अंतिम दिन रविवार को गुवाहाटी के खानापारा में आयोजित एक कार्यक्रम में 11,600 करोड़ की परियोजनाओं के उद्घाटन और शिलान्यास कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

उत्तराखंड में यूसीसी का विरोध तेज, प्रेस वार्ता की

देहरादून। उत्तराखंड में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी 6 फरवरी को विधानसभा सत्र में यूसीसी पटल पर रहने वाले हैं। विधानसभा से पास होने के बाद जल्द ही यह कानून बन जाएगा। वहीं दूसरी तरफ यूसीसी का विरोध भी तेज हो गया है। यूनिफार्म सिविल कोड के विरोध में देहरादून के पलटन बाजार स्थित जामा मस्जिद में मुस्लिम सेवा संगठन ने एक प्रेस वार्ता की, जिसकी अध्यक्षता शहर काजी मोहम्मद अहमद कासमी ने की।

'कलिंग कला महोत्सव' 9 से होगा शुरू

नई दिल्ली। कलिंगा कला महोत्सव 'लीजेंड्स ऑफ एंशिएंट भारत एंड बियॉन्डः इंस्पायरिंग लाइव्स एक्सपीरियंस इन द 21 सेंचुरी' थीम के साथ 9 फरवरी से 11 फरवरी तक आयोजित किया जाएगा। इसमें इला पांडा सेंटर फॉर आर्ट्स (आईपीसीए) अपनी भागीदारी दे रहा है। आठवें संस्करण में 60 प्रदर्शक, प्रमुख कलाकार और छह चर्चा सत्र होंगे।

सड़क दुर्घटना में एक ही परिवार के 4 लोगों की मौत

जम्मू। जम्मू-कश्मीर के उधमपुर जिले में रविवार को एक सड़क दुर्घटना में एक ही परिवार के चार सदस्यों की मौत हो गई और एक अन्य घायल हो गया।

विधि आयोग की सरकार से सिफारिश

नुकसान की भरपाई पर ही मिले दंगाइयों को जमानत

सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाना पड़ सकता है भारी

नई दिल्ली, 4 फरवरी (एजेंसियां)। सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाना अब उपद्रवियों को भारी पड़ सकता है। विधि आयोग ने कहा है कि सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाने

■ बार-बार होने वाली नाकेबंदी पर लग सकेंगी रोक

में शामिल लोगों को नुकसान के बराबर धनराशि जमा करने के बाद ही जमानत मिलनी चाहिए। विधि आयोग ने सरकार से कहा है कि जमानत देने की शर्त के रूप में अपराधियों को उनके द्वारा क्षतिग्रस्त की गई सार्वजनिक संपत्ति का अनुमानित मूल्य जमा करने के लिए बाध्य करने से इस तरह की घटनाओं पर निश्चित रूप से रोक लगेगी। विधि आयोग ने सरकार से उन मौजूदा कानूनों में संशोधन सिफारिश की। ऐसा करने का मकसद राष्ट्रीय राजमार्गों या सार्वजनिक स्थानों पर बार-बार होने वाली नाकेबंदी को रोकना और ऐसे कृत्यों के लिए जिम्मेदार किसी भी व्यक्ति या संगठन पर सार्वजनिक या निजी संपत्तियों को हुए नुकसान के बाजार मूल्य के बराबर भारी जुर्माना लगाया जाना है। विधि आयोग ने सिफारिश में कहा कि लंबे वक्त तक सार्वजनिक जगहों को अवरुद्ध करने से निपटने के लिए एक नया व्यापक कानून बनाया जाए या संशोधन के जरिए भारतीय दंड संहिता या भारतीय न्याय संहिता में संबंधित विशेष प्रावधान जोड़ा जाए।

आयोग की 248वीं रिपोर्ट में मणिपुर का भी जिक्र

रिटायर्ड जस्टिस ऋतुराज अवस्थी की अध्यक्षता वाले भारत के 22वें विधि आयोग की रिपोर्ट में कहा गया है कि अपराधियों को जमानत देने की शर्त के रूप में डैमेज पब्लिक प्रॉपर्टी की कीमत जमा करने के लिए मजबूर करना निश्चित तौर पर प्रॉपर्टी को नुकसान से बचाएगा। दरअसल, आयोग ने इस संशोधन के लिए बड़े पैमाने पर हुई झड़पों का हवाला दिया है। इनमें 2013 के मुजफ्फरनगर दंगों, जाट (2015) और पाटीदार (2016) आरक्षण आंदोलन, भीमा कोरेगांव विरोध (2018), सीएए विरोधी प्रदर्शन (2019), कृषि कानून आंदोलन (2020) से लेकर पैगंबर मोहम्मद (2022) पर की गई टिप्पणी के बाद हुई हिंसा और पिछले साल मणिपुर में चल रही जातीय हिंसा शामिल है।

आयोग ने अधिकार समूहों को किया आगाह

आयोग ने अधिकार समूहों और राजनीतिक दलों को भी इस तथ्य को लेकर आगाह किया है कि उनके अधिकार का प्रयोग संयम और शांतिपूर्वक किया जाना चाहिए। इस संबंध में इसने लोक संपत्ति नुकसान निवारण अधिनियम, 1984 का हवाला दिया, जिसका उद्देश्य सार्वजनिक संपत्ति पर बर्बरता के कृत्यों को अपराध बनाना है।

केरल की तरह अलग कानून बना सकते हैं

रिपोर्ट में बताए गए जुर्माने का मतलब उस राशि से है, जो डैमेज हुई प्रॉपर्टी की मार्केट वैल्यू के बराबर होगी। अगर इस प्रॉपर्टी की वैल्यू निकाल पाना संभव न हो, तो इसका टोटल अमाउंट अदालत तय कर सकती है। इतना ही नहीं, पैनल ने कहा कि इस बदलाव को लागू करने के लिए सरकार एक अलग कानून ला सकती है। पैनल ने बताया कि केरल में निजी संपत्ति को नुकसान की रोकथाम और मुआवजा भुगतान अधिनियम बनाया गया है। सरकार इसे भारतीय न्याय संहिता के लागू प्रावधानों में बदलाव करके या जोड़कर भी वसूल सकती है।

केजरीवाल का भाजपा पर तंज

भाजपा में चले जाओ तो सारे खून माफ

■ आप नेता ने कहा, मैं भाजपा में नहीं जाऊंगा

■ हाल ही में क्राइम ब्रांच का मिला था नोटिस

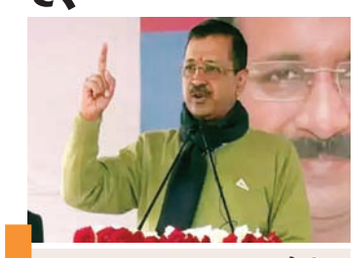

मुझ पर दबाव बनाया जा रहा है कि भाजपा में शामिल हो जाऊं, लेकिन मैं ऐसा कुछ नहीं करने वाला हूं। मैं कभी झुकने वाला नहीं हूं : अरविंद केजरीवाल

नई दिल्ली, 4 फरवरी (देशबन्धु)। दिल्ली के मुख्यमंत्री रविवार को दिल्ली में चार नए स्कूलों की आधारशिला रखी। इस दौरान उन्होंने बीजेपी पर हमला बोलते हुए बड़ा दावा किया है। अरविंद केजरीवाल ने दावा किया कि उन पर दबाव बनाया जा रहा है कि वो भाजपा में शामिल हो जाएं लेकिन मैं ऐसा कुछ नहीं करने वाला हूं। मैं भाजपा में कभी भी नहीं जाऊंगा। केजरीवाल ने आगे कहा कि मैं इनके खिलाफ डटा हुआ हूं। मैं कभी नहीं झुकने वाला नहीं हूं। भाजपा में चले जाओ तो सारे खून माफ है लेकिन हमने कौन सा गलत काम किया है। स्कूल ही तो बनवा रहे है, पानी ही तो ठीक करवा रहे हैं, सड़क ही तो ठीक करवा रहे हैं।

नए स्कूल भवनों का किया शिलान्यास

किराड़ी में नए स्कूल भवनों के शिलान्यास पर मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा कि केंद्र सरकार स्कूलों और अस्पतालों पर राष्ट्रीय बजट का केवल 4 फीसदी खर्च करती है। जबकि दिल्ली सरकार हर साल अपने बजट का 40 फीसदी खर्च करती है। आज सभी एजेंसियां हमारे पीछे पड़ी हैं। लेकिन हमारा दोष क्या है? भाजपा पर तंज कसते हुए उन्होंने आगे कहा कि मनीष सिसौदिया का दोष यह है कि वह अच्छे स्कूल बनवा रहे थे। सत्येन्द्र जैन का दोष यह है कि वह अच्छे अस्पताल और मोहल्ला क्लीनिक बनवा रहे थे। भाजपा ने हर तरह की साजिश रची, लेकिन हमें रोक नहीं सके। ये बहुत बड़ी बात है कि गरीबों में आशा की एक नई किरण जगी है कि उनके बच्चों को सरकारी स्कूलों में अच्छी शिक्षा मिल सकेगी। बता दें कि शनिवार को केजरीवाल के घर क्राइम ब्रांच की टीम नोटिस देने पहुंच गई थी।

भाजपा ने युवाओं का भविष्य बर्बाद किया : राहुल

मोदी सरकार की नीतियों के कारण आज करोड़ों युवाओं के सामने रोजगार का संकट

धनबाद, 4 फरवरी (एजेंसियां)। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं सांसद राहुल गांधी ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर युवाओं का भविष्य बर्बाद करने का आरोप लगाया और कहा कि केंद्र सरकार की युवा विरोधी नीतियों के कारण आज करोड़ों युवाओं के समक्ष रोजगार पाने का बड़ा संकट खड़ा हो गया।

श्री गांधी ने 'भारत जोड़ों न्याय यात्रा' के दौरान रविवार को यहां अपने सम्बोधन में कहा कि भारत जोड़ों न्याय यात्रा में हमने 'न्याय' शब्द को जोड़ा है। इसके

■ देश में आज आर्थिक अन्याय हो रहा है

■ जीएसटी व नोटबंदी से बेरोजगारी फैली

दो-तीन बड़े कारण हैं। देश में आज आर्थिक अन्याय हो रहा है और देश के कुछ चुने हुए दो-तीन अरबपतियों को देश की पूंजी पकड़ाई जा रही है। देश में वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) और नोटबंदी के कारण बेरोजगारी देश में फैली है। सांसद ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी पार्टी भाजपा ने देश के युवाओं का भविष्य बर्बाद कर दिया है। यह यात्रा सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ है। उन्होंने झारखण्ड के आदिवासियों की चर्चा करते हुए कहा कि आदिवासियों के जल, जंगल, जमीन की रक्षा कांग्रेस पार्टी करते रही है और आगे भी करती रहेगी।

झारखंड विधानसभा का विशेष सत्र आज से

चंपई सरकार पेश करेगी विश्वास मत प्रस्ताव

रांची, 4 फरवरी (एजेंसियां)। झारखंड विधानसभा का दो दिवसीय विशेष सत्र सोमवार 5 फरवरी से प्रारंभ हो रहा है। राज्यपाल के

■ राज्यपाल के अभिभाषण से होगी सत्र की शुरुआत

अभिभाषण के साथ ही विधानसभा सत्र की शुरुआत होगी। इसके साथ ही विशेष सत्र में सीएम चंपई सोरेन की ओर से विश्वास मत प्रस्ताव पेश किया जाएगा। विधानसभा के विशेष सत्र को लेकर जारी औपबंधित कार्यक्रम के अनुसार राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन का पूर्वाह्न 11 बजे अभिभाषण

होगा। जिसके बाद सरकार की ओर से विश्वास मत पेश किया जाएगा। इस पर चर्चा के बाद वाद-विवाद और मतदान होगा। वहीं 6 फरवरी को राज्यपाल के अभिषभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव चर्चा , सरकार का उत्तर और मतदान होगा।

सुरक्षा की विशेष तैयारियां की गई हैं

विशेष सत्र को लेकर रांची पुलिस की ओर से सुरक्षा की विशेष तैयारियां की गई हैं। रविवार की दोपहर मुख्य सचिव और डीजीपी ने झारखंड मंत्रालय में रांची डीसी, एसपी सहित सभी विभागों के सचिवों के साथ बैठक कर विधानसभा के विशेष सत्र को लेकर कई निर्देश जारी किए। डीजीपी अजय कुमार सिंह ने बताया कि रविवार को प्रोजेक्ट भवन में मुख्य सचिव की अध्यक्षता में विधानसभा के विशेष सत्र को लेकर बैठक आहूत की गई थी।

बिहार : फ्लोर टेस्ट से पहले कांग्रेस विधायक हैदराबाद पहुंचे

झारखंड की तरह की बिहार कांग्रेस के भी विधायकों के टूटने की आशंका है। जैसे झारखंड के अपने विधायकों को कांग्रेस आलाकमान ने अपनी पार्टी की सरकार वाले राज्य तेलंगाना भेजा था, उसी तर्ज पर बिहार के एमएलए भी हैदराबाद भेज दिए गए हैं। इनमें से ज्यादातर को दिल्ली में अचानक बताया गया कि वह हैदराबाद जा रहे हैं। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अखिलेश कुमार सिंह के अनुसार, तेलंगाना में कांग्रेस की नई सरकार बनी है तो बधाई देने के लिए बिहार की टीम आई है, लेकिन बताया जा रहा है कि वह 11 फरवरी तक वहीं रहेंगे।

जगन के खिलाफ 11 मामलों में 12 साल बाद भी सुनवाई नहीं

■ 2012 में आय से अधिक मामले में किया गया था गिरफ्तार

■ सीबीआई द्वारा दर्ज मामलों में किसी में भी मुकदमा शुरू नहीं हुआ

अमरावती, 4 फरवरी (एजेंसियां)। वर्ष 2012 में जब वाई.एस. जगन मोहन रेड्डी को कथित आय से अधिक संपत्ति के मामले में सीबीआई ने गिरफ्तार किया था, तो राष्ट्रीय

सुर्खियां बनीं थीं, लेकिन लगभग 12 वर्षों के बाद भी, केंद्रीय एजेंसी द्वारा दर्ज 11 मामलों में से किसी में भी मुकदमा शुरू नहीं हुआ है।

2019 में मुख्यमंत्री बने जगन मोहन रेड्डी पर आपराधिक साजिश, धोखाधड़ी, बेईमानी, संपत्ति की डिलीवरी के लिए प्रेरित करना, रिश्वत लेना, आपराधिक विश्वासघात, जालसाजी, लोक सेवक द्वारा आपराधिक कदाचार और भ्रष्टाचार का आरोप लगाया गया है। 2019 में चुनाव आयोग के समक्ष उनके द्वारा दायर हलफनामे के अनुसार, प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के सात मामले हैं, जिनमें उन पर मनी लॉन्ड्रिंग का आरोप लगाया गया है।

बागी सांसद की याचिकाओं से फिर चर्चा में मामले

जगन मोहन रेड्डी की पार्टी वाईएसआरसीपी के बागी सांसद की याचिकाओं ने मामलों पर ध्यान वापस ला दिया है। वर्तमान में सुप्रीम कोर्ट मामले को तेलुगु राज्यों के बाहर स्थानांतरित करने और जगन की जमानत रद्द करने की मांग वाली दो याचिकाओं पर सुनवाई कर रहा है। नवंबर 2023 में, सुप्रीम कोर्ट ने सीबीआई, जगन मोहन रेड्डी, वाईएसआरसीपी सांसद वी. विजय साई रेड्डी और अन्य को नोटिस जारी किया, जिन्हें रिश्वत और मनी लॉन्ड्रिंग के आरोपों पर सीबीआई और ईडी द्वारा दर्ज मामलों में आरोपी बनाया गया था। सुप्रीम कोर्ट ने सीबीआई से यह बताने को कहा कि सुनवाई शुरू करने में उसे इतना समय क्यों लग रहा है और मामलों की वर्तमान स्थिति क्या है।

ट्रेडर्स के संगठन कैट ने जारी की सलाह

पेटीएम से दूरी बना लें कारोबारी

नई दिल्ली, 4 फरवरी (एजेंसियां)। पेटीएम पेमेंट्स बैंक को रोजाना नए-नए झटके लग रहे हैं. आरबीआई बैन का सामना कर रहे बैंक को अब एक और बुरी खबर मिली है। ट्रेडर्स के संगठन कैट ने कारोबारियों से अपील की है कि वह बिजनेस ट्रांजेक्शन के लिए पेटीएम के बजाय अन्य पेमेंट

आरबीआई ने पेटीएम पेमेंट्स बैंक पर लगाए हैं प्रतिबंध

ऑप्शन का इस्तेमाल करें। आरबीआई ने पेटीएम वॉलेट और बैंक के ऑपरेशन पर रोक लगा दी थी। इसके बाद से ही पेटीएम मुसीबत में फंसी हुई है।

कैट ने कहा कि रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने पेटीएम पेमेंट्स बैंक पर प्रतिबंध लगाए हैं. इनसे बचने के लिए छोटे कारोबारियों को विकल्प तलाशने चाहिए। इससे उनका पैसा सुरक्षित रहेगा और कारोबार बिना किसी रुकावट के जारी रहेगा। कंफेडरशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स ने कहा कि छोटे कारोबारी, वेंडर्स, हॉकर्स और महिलाएं बड़ी संख्या में पेटीएम के जरिए बिजनेस चला रहे हैं।

आप-कांग्रेस उम्मीदवार की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई आज

नई दिल्ली, 4 फरवरी (एजेंसियां)। पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय द्वारा चंडीगढ़ नगर निगम (सीएमसी) के नतीजों पर रोक लगाने से इनकार के खिलाफ इंडिया ब्लॉक के मेयर पद के उम्मीदवार कुलदीप कुमार की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट में सोमवार को सुनवाई होगी। शीर्ष अदालत की वेबसाइट पर प्रकाशित वाद सूची के अनुसार, सीजेआई डी.वाई.चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली न्यायमूर्ति जे.बी. पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ 5 फरवरी को मामले की सुनवाई करेगी। पिछले हफ्ते, कुमार की ओर से पेश वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने मामले को तत्काल सूचीबद्ध करने के लिए शीर्ष अदालत से निर्देश मांगे थे।

चंडीगढ़ मेयर चुनाव

उपलब्धि | *15 वर्षों तक चले शोध के बाद मिली सफलता*

पीजीआई चंडीगढ़ में बिना कीमो होगा कैंसर का इलाज

चंडीगढ़, 4 फरवरी (एजेंसियां)। चंडीगढ़ पीजीआई के विशेषज्ञों को बड़ी सफलता मिली है। उन्होंने अब बिना कीमो दिए कैंसर का इलाज ढूंढ लिया है। 15 वर्षों तक संस्थान में चले शोध के बाद यह सफलता मिली है। हेमेटोलॉजी विभाग के विशेषज्ञों ने एक्यूट प्रोमाइलोसाइटिक ल्यूकेमिया के मरीजों को बिना कीमो दिए पूरी तरह से ठीक कर दिया है।

दावा है कि पीजीआई की इस उपलब्धि से भारत विश्व में बिना कीमो थैरेपी के कैंसर का इलाज करने वाला पहला देश बन गया है। पीजीआई के इस शोध को ब्रिटिश जरनल ऑफ हेमेटोलॉजी में प्रकाशित किया गया है।

कीमो के बजाय मरीजों को दी दवाएं

पीजीआई हेमेटोलॉजी विभाग के प्रमुख व शोध के सीनियर ऑथर प्रो. पंकज मल्होत्रा ने बताया कि इस मर्ज में मरीज की स्थिति तेजी से बिगड़ती है। अगर

ब्रिटिश जरनल ऑफ हेमेटोलॉजी में प्रकाशित किया गया शोध

मरीज ने दो हफ्ते तक खुद को संभाल लिया तो उस पर इलाज का सकारात्मक प्रभाव तेजी से सामने आने लगता है लेकिन उन दो हफ्तों तक सर्वाइव करना बेहद कठिन होता है। विश्व में अब तक कैंसर के मरीजों को इलाज कीमो से ही हो रहा है लेकिन पीजीआई ने पहली बार कीमो के बजाय मरीजों को दवाओं की खुराक दी। इसमें विटामिन ए और आर्सेनिक ट्राइऑक्साइड शामिल किया।

शोध में 250 मरीजों को शामिल किया

इस शोध के लेखक डॉ. चरनप्रीत सिंह ने बताया कि 15 वर्षों तक संस्थान में चले इस शोध में 250 मरीजों को शामिल किया गया। उन मरीजों को कीमो की जगह विटामिन ए और आर्सेनिक ट्राइऑक्साइड दिया गया। गंभीर मरीजों को दो साल तक और कम गंभीर मरीजों को चार महीने तक दवा दी गई और लगातार फॉलोअप के साथ टेस्ट किए गए। सभी 250 मरीजों की जब कीमो वाले मरीजों की स्थिति से तुलना की गई तो परिणाम काफी बेहतर मिला। कीमो की तुलना में शोध में शामिल मरीजों पर इलाज की सफलता दर 90 प्रतिशत रही।

देश

उवाच

ममता बनर्जी ने भी यह स्पष्ट कर दिया है कि राज्य सरकार संबंधित केंद्रीय मंत्रालयों को उपयोगिता प्रमाणपत्र भेज रही है। उसके बाद भी कैग कुछ टिप्पणियां कर रहा है, जिसका उपयोग विपक्ष द्वारा राज्य सरकार के खिलाफ नकारात्मक कहानी बनाने में किया जा रहा है।

-कुणाल घोष,तृणमूल कांग्रेस के प्रवक्ता

तापमान	अधिकतम	न्यूनतम
दिल्ली	19.0	13.0
मुंबई	30.0	24.0
कोलकाता	25.0	15.0
चेन्नई	28.0	24.0

अन्याय की आंधी रोकने के लिए न्याय के पक्ष में खड़ी कांग्रेस : कन्हैया कुमार

बोकारो, 4 फरवरी (एजेंसियां)। कांग्रेस नेता कन्हैया कुमार ने रविवार को कहा कि देश में अन्याय की आंधी को रोकने के लिए न्याय के पक्ष में कांग्रेस पार्टी खड़ी है और पार्टी नेता राहुल गांधी इसी मकसद को पूरा करने के लिए 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' पर निकले हैं। 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' में राहुल गांधी के साथ झारखंड में बोकारो आए कन्हैया कुमार ने कहा कि भाजपा की सरकार तुम मुझे चंदा दो, मैं तुम्हें धंधा दूंगा की तर्ज पर काम कर रही है। लोकतंत्र बेचा जा रही है। सार्वजनिक प्रतिष्ठान बेचे जा रहे हैं। श्रमिकों, किसान, बेरोजगार , युवाओं और महिलाओं के साथ अत्याचार किया जा रहा है। वहीं भारत जोड़ो न्याय यात्रा में राहुल गांधी के साथ झारखंड के बोकारो आए जय राम रमेश ने रविवार को यहां पत्रकार सम्मेलन में कहा कि देश के उद्योग को बेचने का काम भाजपा सरकार कर रही है। देश में बेरोजगारी बढ़ी है। युवा आत्महत्या कर रहे हैं। नारी न्याय, युवा न्याय, श्रमिक न्याय, किसान न्याय और हिस्सेदारी न्याय को लेकर राहुल गांधी भारत जोड़ो न्याय यात्रा में चल पड़े हैं । इस यात्रा के तहत हम संविधान और सार्वजनिक संस्थान को हर हाल में सुरक्षित करेंगे। कांग्रेस नेता ने कहा कि देश में ठेका श्रमिक प्रथा बंद होना चाहिए। श्रमिक के हक को हाकमरी की

■ **भाजपा पर लगाया लोकतंत्र व सार्वजनिक प्रतिष्ठान को बेचे जाने का आरोप**

तुम मुझे चंदा दो, मैं तुम्हें धंधा दूंगा की तर्ज पर काम कर रही केंद्र सरकार : कन्हैया कुमार

जा रही है। श्रमिकों को हक दिलाने के लिए कांग्रेस प्रतिबद्ध है। भाजपा सार्वजनिक संस्थान बेचती है।

कांग्रेस इसे बचाती है और लोगों को रोजगार दिलाती है। उन्होंने कहा कि अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति के लोगों को भी रोजगार मिलना अब मुश्किल हो गया है। उन्होंने कहा कि इस वित्तीय वर्ष में 60 लाख टन इस्पात का आयात किया गया है। जिसमें से एक तिहाई चीन से इस्पात मनाया गया है । ऐसी स्थिति में सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र के उद्योगों पर संकट का बादल छाया हुआ है । देश के 35 प्रतिशत उद्योग बंद पड़े हैं , क्योंकि सस्ता माल चीन से यहां आ रहा है। उन्होंने ने आगे कहा कि भाजपा की सरकार षड्यंत्र करके महाराष्ट्र और बिहार में सरकार बनाया। झारखंड में भी इन्होंने सरकार बनाने का प्रयास किया लेकिन इन्हें सफलता नहीं मिली है। झारखंड में गठबंधन की सरकार अपनी कार्यकाल हर हाल में पूरा करेगी। उन्होंने कहा कि इस यात्रा के माध्यम से हम लोगों को संगठित और सशक्त बनाने में कामयाब होंगे ताकि केंद्र की भाजपा सरकार को हम उखाड़ देखने में सफल हो सके।

देश में 12 हजार से ज्यादा किसान कर चुके हैं आत्महत्या

कांग्रेस नेता कन्हैया कुमार ने कुमार ने कहा कि देश में 12000 से ज्यादा किसान आत्महत्या कर चुके हैं। चंद पूंजीपतियों को लाभ पहुंचाने के लिए बेरोजगारों का शोषण किया जा रहा है। देश में नफरत फैलाई जा रही है। कांग्रेस पार्टी ने नफरत की बाजार में मोहब्बत की दुकान खोलने का ऐलान किया है। कांग्रेस पार्टी सभी राज्यों के ज्वलंत मुद्दे को उठा रही है। पब्लिक सेक्टर और संविधान को बचाने के लिए कांग्रेस पार्टी कृतसंकल्पित है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी देश के 140 करोड़ लोगों को न्याय दिलाने और संविधान को बचाने में कामयाब होगी।

ओम बिरला ने अनन्तशयनम आयंगर की श्रद्धांजलि अर्पित

नई दिल्ली, 4 फरवरी (देशबन्धु)। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने रविवार को पूर्व लोकसभा अध्यक्ष एम. अनन्तशयनम आयंगर को उनकी जयंती पर संविधान सदन के केंद्रीय कक्ष में पुष्पांजलि अर्पित की। इस अवसर पर राज्य सभा के उपसभापति हरिवंश, संसद सदस्यों, पूर्व सदस्यों और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भी आयंगर को पुष्पांजलि अर्पित की। लोकसभा और राज्यसभा सचिवालय के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी आयंगर को श्रद्धांजलि अर्पित की। एमए आयंगर एक वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी और प्रख्यात सांसद थे। वह केंद्रीय विधानसभा, संविधानसभा, अंतरिम संसद और पहली से तीसरी लोकसभा के सदस्य रहे। 1952 में पहली लोकसभा के गठन के समय एमए आयंगर सर्वसम्मति से लोक सभा के उपाध्यक्ष चुने गए। इससे पहले वह संविधान सभा (विधायी) के उपाध्यक्ष और अंतरिम संसद के उपाध्यक्ष पद पर भी आसीन रहे। तत्कालीन अध्यक्ष, जी.वी. मावलंकर के आकस्मिक निधन के पश्चात् आयंगर को 8 मार्च, 1956 को सर्वसम्मति से लोकसभा का अध्यक्ष चुना गया। 1957 में दूसरी लोकसभा का गठन होने पर आयंगर को पुन: सर्वसम्मति से लोक सभा का अध्यक्ष चुना गया। यद्यपि, वह तीसरी लोक सभा के लिए चुने गए थे।

कश्मीर में भारी हिमपात, सड़क, रेल व हवाई यातायात प्रभावित

श्रीनगर, 4 फरवरी (एजेंसियां)। जम्मू-कश्मीर की ग्रीष्मकालीन राजधानी श्रीनगर सहित कश्मीर घाटी में रविवार को इस मौसम की सबसे भारी बर्फबारी हुई, जिसके कारण श्रीनगर-जम्मू राष्ट्रीय राजमार्ग बंद हो गया, कई ट्रेनें रद्द कर दी गईं और सभी उड़ानें रद्द कर दी गईं। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि खराब मौसम के कारण श्रीनगर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर आने-जाने वाली सभी उड़ानें रद्द कर दी गई हैं। श्रीनगर और घाटी के अन्य हिस्सों में अभी भी हिमपात हो रहा है। एक रेलवे अधिकारी ने कहा कि कश्मीर में रेलवे परिचालन भी प्रभावित हुआ है। बर्फबारी के कारण कई ट्रेनें रद्द कर दी गई हैं, जबकि अन्य देरी से चल रही हैं। विभिन्न स्थानों पर ताजा भूस्खलन और हिमपात के बाद श्रीनगर-जम्मू राजमार्ग पर भी यातायात निलंबित कर दिया गया है। आवश्यक सामान ले जाने वाले ट्रकों और यात्री कारों सहित सैकड़ों वाहन राजमार्ग पर फंसे हुए हैं। श्रीनगर स्थित मौसम विज्ञान केंद्र ने कहा कि पिछले 24 घंटों के दौरान कश्मीर घाटी के मैदानी इलाकों में 3-6 इंच बर्फबारी हुई, जबकि मध्य और ऊंचाई वाले इलाकों में 8-12 इंच हिमपात हुआ। जम्मू संभाग में भी इस अवधि के दौरान मैदानी इलाकों में गरज के साथ हल्की से मध्यम स्तर की बारिश हुई तथा और ऊंचाई वाले इलाकों में हल्की से मध्यम स्तर का हिमपात हुआ। मौसम कार्यालय ने कहा कि आम तौर पर कुछ स्थानों पर आसमान में बादल छाए रहेंगे। आज अपराह्न या देर शाम तक कई स्थानों पर हल्की से मध्यम स्तर की बर्फबारी जारी रहने की संभावना है और उसके बाद धीरे-धीरे मौसम में सुधार होगा।

■ **श्रीनगर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर आने-जाने वाली सभी उड़ानें रद्द**

लोगों को सावधानी से गाड़ी चलाने की सलाह

यातायात पुलिस ने एक्स पर पोस्ट में कहा कि लोगों को लेन अनुशासन का पालन करने और सावधानी से गाड़ी चलाने की सलाह दी जाती है, क्योंकि नाशरी और नवयुग टनल के बीच सड़क का एक हिस्सा सिंगल-लेन है और कई जगहों पर फिसलन की स्थिति है।सड़क पर बर्फबारी के कारण श्रीनगर-सोनमर्ग-गुमरी-सोनमर्ग-गुमरिग लद्दाख भी बंद हो गया। श्रीनगर और इसके आसपास के इलाके बर्फ की मोटी परत से ढंके हुए हैं, जो इस मौसम की सबसे बड़ी परत है। श्रीनगर में अधिकारियों ने सड़कों से बर्फ हटाने के लिए कर्मियों और मशीनों को लगाया है, ताकि उन्हें यातायात के योग्य बनाया जा सके।

सार संक्षेप

जम्मू में ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मी ने की आत्महत्या

श्रीनगर। जम्मू के नोवाबाद थाने में तैनात एक कांस्टेबल ने शनिवार रात अपनी सर्विस राइफल से गोली मारकर कथित तौर पर आत्महत्या कर ली। हुसैन नामक सेलेक्शन ग्रेड कांस्टेबल ने थाने में ही कथित तौर पर आत्महत्या कर ली। प्रथम दृष्टया प्रतीत होता है कि उसने खुद को गोली मारने के लिए अपने सर्विस हथियार का इस्तेमाल किया था। फॉरेंसिक साइंस लैब टीम व क्राइम फोटोग्राफर मौके पर पहुँच गये हैं और मामले की जांच शुरू कर दी गयी है।

महाराष्ट्र में भाजपा का गांव चलो अभियान शुरू

छत्रपति संभाजीनगर। महाराष्ट्र के छत्रपति संभाजीनगर में भाजपा ने व्यापक जनसंपर्क के लिए रविवार को गांव चलो अभियान सप्ताह (4-11 फरवरी) की शुरुआत की। इस अभियान की शुरुआत यहां केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री डॉ. भागवत कराड, राज्य के आवास एवं अन्य पिछड़ा वर्ग कल्याण मंत्री अतुल सवे, पार्टी के प्रदेश महासचिव संजय केनेकर और जिला अध्यक्ष शिरीष बोरालकर सहित तीन विधानसभा क्षत्रों के स्थानीय क्षेत्रीय पदाधिकारियों ने की। इस अभियान के पार्टी महासचिव और क्षेत्रीय पदाधिकारी उन्हें सौंपे गए गांवों में एक दिन ठहरेंगे और वहां के लोगों से बातचीत करेंगे।

तेलंगाना में दसवीं की दो छात्राओं ने की आत्महत्या

यदाद्रि भुवनागिरी। तेलंगाना के यदाद्रि भुवनागिरी जिले में 10वीं कक्षा की दो छात्राओं ने शनिवार रात अपने छात्रावास के कमरे में पंखे से लटककर कथित तौर पर आत्महत्या कर ली। पुलिस सूत्रों ने रविवार को बताया कि हैदराबाद के हब्सीगुडा की निवासी दोनों किशोरियां अनुसूचित जाति (एससी) छात्रावास में रहकर भुवनागिरी के एक गर्ल्स हाई स्कूल में 10वीं कक्षा में पढ़ रही थीं। दोनों किशोरियों की उम्र 15 वर्ष थी।

व्यापारी ने घर की छत पर मंदिर बनवाया, नोटिस जारी

अंकलेश्वर। गुजरात में भरूच शहरी क्षेत्र प्राधिकरण ने अंकलेश्वर के गडखोल गांव में अपने घर की छत पर एक अस्वीकृत मंदिर का निर्माण करने के लिए मोहनलाल गुप्ता के खिलाफ कानूनी कार्रवाई शुरू की है। मंदिर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मूर्तियां भी लगाई गई हैं। मोहनलाल गुप्ता ने भगवान राम का मंदिर बनवाया व संरक्षक के रूप में पीएम मोदी और सीएम योगी की मूर्तियां लगवा दीं। जिससे कानूनी जांच और सार्वजनिक बहस छिड़ गई है। स्क्रैप व्यापारी ने अपने दो मंजिला आवास की छत को एक मंदिर में बदल दिया, जिसमें राजनीतिक हस्तियों के साथ-साथ भगवान राम, लक्ष्मण और सीता की मूर्तियां भी हैं।

झारखंड सरकार ने चार आईएएस अधिकारियों को अतिरिक्त प्रभार सौंपा

रांची, 4 फरवरी (एजेंसियां)। झारखंड सरकार ने चार आईएएस अधिकारियों को अतिरिक्त प्रभार सौंपा है जबकि एक आईएएस अधिकारी का तबादला किया है। राज्य सरकार के कार्मिक, प्रशासनिक सुधार तथा राजभाषा विभाग ने इस संबंध में अधिसूचना जारी कर दी है। उद्योग विभाग के निदेशक के पद पर पदस्थापित भर सिंह यादव को स्थानांतरित करते हुए भू अर्जन, भू अभिलेख एवं परिमाप विभाग का निदेशक बनाया गया है। अपराध अनुसंधान विभाग के पुलिस महानिरीक्षक के पद पर पदस्थापित सुदर्शन प्रसाद मंडल को अगले आदेश तक अपने कार्यों के साथ कारा महानिरीक्षक का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति अल्पसंख्यक एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग के पद पर पदास्थापित प्रभारी सचिव अरवा राजकमल को अपने कार्यों के अलावा नगर विकास एवं आवास विभाग का प्रभारी सचिव बनाया गया है। साथ ही मद्य निषेध विभाग का प्रभारी सचिव और जेयूआईडीसीएओ का प्रबंध निदेशक का अतिरिक्त प्रभार सौपा गया है। इसके अलावा झारखंड औद्योगिक क्षेत्र विकास प्राधिकार (जियाडा) के प्रबंध निदेशक के पद पर पदस्थापित शशि रंजन को खान निदेशक और मुख्यमंत्री लघु एवं कुटीर उद्यम विकास बोर्ड के मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। इसी प्रकार खेलकूद विभाग के निदेशक के पद पर पदस्थापित सुशांत गौरव को उद्योग विभाग का निदेशक और झारखंड खेल प्राधिकार विभाग का कार्यकारी निदेशक का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है।

समान नागरिक संहिता को लेकर कांग्रेस फिर हमलावर

सरकार का रवैया देश में घृणा फैलाने का

ग्वालियर, 4 फरवरी (एजेंसियां)। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के बयान के बाद समान नागरिक संहिता (यूसीसी) का मुद्दा फिर गर्मा गया है। कांग्रेस फिर इस पर हमलावर होती नजर आ रही है। कांग्रेस इसे यूसीसी नहीं बल्कि डीसीसी (डिवाइडिंग सिविल कोड) कह रहे हैं। ग्वालियर दौरे पर गए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने भी इसे देश के लिए घातक बताया है। पीसीसी चीफ जीतू पटवारी एक दिवसीय संयुक्त दौरे पर ग्वालियर-चंबल इलाके में थे। ग्वालियर में मीडिया से चर्चा में उन्होंने कहा कि सरकार का रवैया देश में नफरत और घृणा की नई राजनीति फैलाने का है। मैं मानता हूं कि इससे अलग-अलग वर्गों के छात्रों और युवाओं में भी भेदभाव की स्थिति उत्पन्न होगी और ऐसा करके यह देश को अराजकता की ओर ले जा रहे हैं। बता दें कि लोकसभा चुनावों को लेकर कांग्रेस पार्टी ने अपनी सक्रियता बढ़ा दी है। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया को उनके घर में घेरने के लिए प्रदेश कांग्रेस कमेटी द्वारा ग्वालियर में लोकसभा स्क्रीनिंग कमेटी की बैठक रखी गई। इसमें ग्वालियर-चंबल अंचल की चारों सीटों को लेकर मंथन किया जा रहा है। प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी, प्रदेश कांग्रेस प्रभारी भंवर जितेंद्र सिंह, पूर्व मंत्री जयवर्धन सिंह ने बैठक में अंचल के आला नेताओं और संभावित प्रत्याशियों से वन टू वन चर्चा की। इस स्क्रीनिंग कमेटी द्वारा बैठक का मसौदा केंद्रीय समिति को सौपा जाएगा।

देश को अराजकता की ओर ले जा रही भाजपा सरकार : जीतू पटवारी

विधानसभा चुनावों से सबक लेकर जल्द शुरू की तैयारी

मध्य प्रदेश में हाल ही में हुए विधानसभा चुनाव में मिली करारी हार के बाद कांग्रेस पार्टी ने लोकसभा चुनाव की तैयारी शुरू कर दी हैं प्रदेश में कांग्रेस कैसे अधिक से अधिक सीट हासिल करें इसको लेकर कांग्रेस स्क्रीनिंग कमेटी के सदस्यों द्वारा लगातार अलग-अलग संभागों का दौरा किया जा रहा है। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा था कि समान नागरिक संहिता (यूसीसी) का मसौदा तैयार करने के लिये बनाई गई समिति ने अपना कार्य पूरा कर लिया है और जल्द ही इसे लागू किया जाएगा। इसके बाद यह मुद्दा सियासी गलियारों में फिर गर्मा गया है।

एमपी बोर्ड की दसवीं की परीक्षा आज से

भोपाल, 4 फरवरी (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश माध्यमिक शिक्षा मंडल की परीक्षाएं सोमवार से शुरू हो रही है। केंद्राध्यक्ष अपने पास मोबाइल नहीं रख सकेंगे। मोबाइल मिलने पर 10 साल तक की सजा हो सकती है। एमपी बोर्ड की 10वीं की परीक्षा सोमवार से और 12वीं की परीक्षा मंगलवार से शुरू होगी। इस पर परीक्षा केंद्र के अंदर कलेक्टर प्रतिनिधि को छोड़ कर किसी को भी मोबाइल ले जाने की अनुमति नहीं होगी। केंद्राध्यक्ष, भी अपने पास मोबाइल नहीं रख सकेंगे। यदि किसी के पास मोबाइल मिला तो 10 साल तक की सजा होगी। यदि किसी के पास मोबाइल पाया गया तो परीक्षा अधिनियम 1973 के तहत उसे 10 साल की सजा होगी और मंडल के परीक्षा कार्य से उन्हें बाहर किया जाएगा। मोबाइल रखने के लिए परीक्षा केंद्र के बाहर व्यवस्था रहेगी। इस पर परीक्षा की जानकारी के लिए लैंडलाइन फोन के उपयोग के साथ-साथ पोर्टल तैयार किया गया है।

नीतीश के महागठबंधन से बाहर जाने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा : भाकपा-माले

दरभंगा, 4 फरवरी (एजेंसियां)। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (भाकपा-माले) पोलित ब्यूरो सदस्य धीरेंद्र झा ने कहा है कि नीतीश कुमार का महागठबंधन छोड़ कर जाने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा। झा ने रविवार को पार्टी के जिला सचिव बैद्यनाथ यादव की अध्यक्षता में आयोजित बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि माले के विधायकों ने दलित-गरीबों को उजाड़ने के खिलाफ बड़ा अभियान चलाया और तब जाकर सरकार ने निर्णय लिया कि बिना वैकल्पिक व्यवस्था के किसी को नहीं उजाड़ा जाएगा। संगठन ने शिक्षकों, कर्मचारियों, आशा, रसोईया, आंगनबाड़ी के मुद्दों पर सरकार को बाध्य किया। मंहगाई व बेरोजगारी के खिलाफ मोदी के अदानी अंबानी राज के खिलाफ अनवरत अभियान चला रही है। माले नेता ने कहा कि कुमार के अफसरशाही तौर तरीके से शासन के तरीके से जनता परेशान रही है और भाकपा माले शासन के इस तरीका का सदन और सड़कों पर प्रतिवाद करती रही है। बैठक को संबोधित करते हुए भाकपा (माले) जिला सचिव बैद्यनाथ यादव ने कहा की जनसंपर्क अभियान का एक चरण खत्म हुआ है और दूसरा चरण में 200 गांव बैठक करने की योजना बनी है। साथ ही साथ 23 मार्च भगत सिंह शहादत दिवस पर गांव में नौजवानों की बैठक आयोजित कर बिहार व देश के स्थिति पर चर्चा की जाएगी।

मिथिलांचल को दस साल में किया ठगने का काम

भाकपा (माले) जिला सचिव बैद्यनाथ यादव ने कहा केंद्र सरकार पर हमला करते हुए कहा कि पूरे मिथिलांचल को मोदी सरकार अपने 10 साल में ठगने का काम किया है। इस बार पूरे मिथिलांचल में गांव गांव में बैठक कर भाजपा के खिलाफ जोरदार मुहिम चलाया जाएगा। और आने वाले 2024 के चुनाव में भाजपा को उखाड़ फेंकने का संकल्प लिया जाएगा।

जम्मू-कश्मीर का अंतरिम बजट आज होगा पेश

श्रीनगर, 4 फरवरी (एजेंसियां)। वर्ष 2024-25 के लिए जम्मू-कश्मीर का अंतरिम बजट सोमवार को संसद में पेश किया जाएगा, जिसे केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण पेश करेंगी। लोकसभा सचिवालय की ओर से जारी कार्य की संशोधित सूची में यह जानकारी दी गयी। केंद्रीय शासन लगने के बाद संसद में पेश होने वाला यह जम्मू-कश्मीर का लगातार पांचवां बजट होगा। ऐसा इसलिए किया जा रहा है क्योंकि जम्मू-कश्मीर विधानसभा फिलहाल अस्तित्व में नहीं है। जम्मू-कश्मीर में 19 जून, 2018 से कोई निर्वाचित सरकार नहीं है, जब भारतीय जनता पार्टी ने राज्य में 'बिगड़ती' सुरक्षा स्थिति का हवाला देते हुए पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) प्रमुख महबूबा मुफ्ती के नेतृत्व वाली सरकार से समर्थन वापस ले लिया था। पीडीपी-भाजपा सरकार के पतन के बाद, 2019-20 के बजट को राज्य प्रशासनिक परिषद के प्रमुख के रूप में तत्कालीन जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल ने मंजूरी दी थी। वर्ष 2019 में जम्मू-कश्मीर को अपग्रेड करके यूटी में बदलने के बाद इसके सभी बजट संसद में पेश किए गए।

तमिलनाडु सरकार ने दो और रामसर स्थलों की घोषणा

चेन्नई, 4 जनवरी (एजेंसियां)। तमिलनाडु सरकार ने दो और रामसर स्थलों की घोषणा की है, जिसके साथ ही प्रदेश में रामसर स्थलों (आर्द्रभूमि) की कुल संख्या 16 हो गई है, जो देश में सबसे अधिक है। सरकार द्वारा घोषित दो नए रामसर स्थल अरियालुर जिले में कराईवेट्टी पक्षी अभयारण्य और और नीलगिरी जिले में लॉन्गवुड शोला रिजर्व फॉरेस्ट हैं। पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन एवं वन विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव के अनुसार, राज्य सरकार एक व्यापक संरक्षण और प्रबंधन योजना के माध्यम से अपनी आर्द्रभूमि की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है।

तमिलनाडु सरकार ने 115.15 करोड़ रुपए की लागत से 100 आर्द्रभूमियों की सुरक्षा, संरक्षण और उद्धार के लिए अपनी तरह का एक अनूठा मिशन 'तमिलनाडु वेटलैंड्स मिशन' का भी शुभारंभ किया है। आर्द्रभूमियों पर रामसर संधि एक अंतरराष्ट्रीय कन्वेंशन है जो आर्द्रभूमियों और उनके संसाधनों के संरक्षण और बुद्धिमानीपूर्ण उपयोग के लिए राष्ट्रीय कार्रवाई और अंतरराष्ट्रीय सहयोग की रूपरेखा प्रदान करता है। भारत ने एक फरवरी, 1982 को रामसर संधि पर हस्ताक्षर किया था।दो दशकों के लंबे अंतराल के बाद मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन के नेतृत्व में तमिलनाडु सरकार ने 2022 में 13 नए रामसर स्थलों के लिए अधिसूचना प्राप्त की थी, जिससे प्वाइंट कैलिमेरे में पहले से मौजूद कोडियाक्करई रामसर स्थलों के साथ प्रदेश भारत का अग्रणी राज्य बन गया।

■ **मिशन तमिलनाडु वेटलैंड्स मिशन का किया शुभारंभ**

चिंता *जम्मू-कश्मीर ट्रैफिक पुलिस के आंकड़ों में हुआ खुलासा*

बीते साल छह हजार से अधिक सड़क हादसों में 893 की मौत

श्रीनगर, 4 फरवरी (एजेंसियां)। जम्मू-कश्मीर में पिछले वर्ष सड़क दुर्घटनाओं में वृद्धि देखी गई और इस दौरान 6,292 घटनाओं में 893 लोगों की मौत हो गई। आधिकारिक आंकड़ों में यह जानकारी दी गई है। जम्मू-कश्मीर ट्रैफिक पुलिस से प्राप्त आंकड़े पिछले तीन वर्षों की तुलना में चिंताजनक वृद्धि का संकेत देते हैं। आंकड़ों के मुताबिक वर्ष 2019 में । 996 मौतें हुईं, इसके बाद 2020 में 728, 2021 में 774 और 2022 में 805 मौतें हुईं। वर्ष 2023 के आंकड़ों से पता चला कि 730 घातक दुर्घटनाएं और 5,568 गैर-घातक दुर्घटनाएं हुईं, जिसके परिणामस्वरूप केंद्र शासित प्रदेश में 893 लोगों की मौत हुई और 8,469 लोग घायल हुए। कश्मीर संभाग विशेष रूप से श्रीनगर जिले में 55 मौतों के साथ 476 दुर्घटनाएं दर्ज की गईं। जम्मू संभाग में जम्मू जिले

■ **तीन वर्षों की तुलना में प्राप्त आंकड़े चिंताजनक वृद्धि का संकेत**

में सबसे अधिक 1,179 दुर्घटनाएं हुईं जिनमें 171 लोग हताहत हुए। आंकड़ों से पता चलता है कि अधिकारियों ने पिछले वर्ष यातायात उल्लंघन के लिए 1,372,501 चालान जारी किए, जिसमें अदालत और कंपाउंड चालान दोनों शामिल थे। आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि श्रीनगर सिटी ट्रैफिक पुलिस ने 4,08,167 चालान जारी किए, ग्रामीण कश्मीर ने 406,338 चालान जारी किए, सिटी जम्मू ट्रैफिक पुलिस ने 332,221 चालान, ग्रामीण जम्मू ने 130,974 चालान जारी किए और राष्ट्रीय राजमार्ग रामबन इकाई ने 94,801 ऐसे चालान जारी किए। जम्मू-कश्मीर में कई सड़क मौतें राष्ट्रीय राजमार्गों पर हुईं, खासकर जम्मू के पहाड़ी डोडा-किश्तवाड़-रामबन इलाकों में। आंकड़ों के मुताबिक, जम्मू से श्रीनगर और जम्मू से डोडा-किश्तवाड़ के बीच चुनौतीपूर्ण सड़क स्थितियां कई दुर्घटनाओं में योगदान दे रही हैं। विशेषज्ञ दुर्घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिए सार्वजनिक शिक्षा, सड़क सुधार और कड़े कानून प्रवर्तन की आवश्यकता पर बल देते हैं। उन्होंने कहा कि दुर्घटनाएं विचलित ड्राइविंग, तेज गति, खराब सड़क रखरखाव और गड्ढों के कारण होती हैं।

वाहन संबंधी समस्याएं, यातायात नियम तोड़ना और अनुभव की कमी भी मौतों में योगदान करती है। उन्होंने कहा कि लोगों के जीवन की रक्षा करने और सड़क दुर्घटनाओं की दुखद संख्या को कम करने के लिए सड़क सुरक्षा उपाय और जागरूकता अभियान अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। एक वरिष्ठ यातायात पुलिस अधिकारी ने कहा कि इन दुर्घटनाओं के प्राथमिक योगदानकर्ताओं में अत्यधिक गति, ओवरलोडिंग और आक्रामक ड्राइविंग शामिल हैं। उन्होंने कहा कि यह समझना महत्वपूर्ण है कि पुलिस हर जगह मौजूद नहीं हो सकती। यात्रियों और ड्राइवरों दोनों को सावधानी बरतनी चाहिए। लापरवाही से गाड़ी चलाने से बचना चाहिए।

कैपिटल ज़ोन

उल्टा पुल्टा

पति : तुम्हारे पापा मानते क्यों नहीं ? जले पर नमक छिड़कने की आदत गई नहीं अब तक उनकी।
पत्नी : क्यों क्या हुआ ?
पति : आज फिर से पूछ रहे थे कि मेरी बेटी से शादी करके खुश तो हो न ?

देश के हर बच्चे को मिले अच्छी शिक्षा : केजरीवाल

मुख्यमंत्री ने चार नए विश्वस्तरीय सरकारी स्कूलों की रखी नींव

नई दिल्ली, 4 फरवरी (देशबन्धु)। उत्तर-पश्चिम दिल्ली स्थित किराड़ी विधानसभा क्षेत्र को अगले साल जनवरी तक चार नए सरकारी स्कूल मिल जाएंगे। रविवार को किराड़ी के प्रताप विहार में सीएम अरविंद केजरीवाल नारियल फोड़कर दो नए स्कूल भवनों की नींव रखी। इसमें दो शिफ्टों में चार स्कूल चलेंगे, जहां करीब 10 हजार बच्चे शिक्षा पा सकेंगे। दोनों नए स्कूल भवनों में 100 से अधिक शानदार क्लासरूम होंगे। इसके अलावा लेबोरेट्री, लाइब्रेरी, एक्टिविटी रूम और लिफ्ट समेत अन्य आधुनिक सुविधाएं होंगी। इस दौरान सीएम अरविंद केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली के कुछ इलाकों में स्कूलों की कमी है। इसी मद्देनजर हम उन इलाकों में नए स्कूल बना रहे हैं, ताकि हर बच्चों को अपने घर के पास ही अच्छी शिक्षा मिल सके। मैंने कसम खाई है कि जो शिक्षा मेरे देश ने मुझे और मेरे बच्चों को दी है, वैसी ही अच्छी शिक्षा देश के हर बच्चे को मिलनी चाहिए। इसके लिए लिए मैं काम करता रहूंगा। इसलिए हमारी सरकार पिछले नौ वर्षों से शिक्षा और स्वास्थ्य पर 40 फीसद बजट खर्च करती है। जबकि केंद्र सरकार पूरे देश की शिक्षा और स्वास्थ्य पर मात्र 4 फीसद बजट ही खर्च करती है। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री आतिशी और स्थानीय विधायक रितुराज झा समेत अन्य गणमन्य लोग मौजूद रहे। दिल्ली सरकार द्वारा किराड़ी विधानसभा क्षेत्र स्थित रोहिणी सेक्टर 41 में यह दोनों नए विश्वस्तरीय बनाए जा रहे हैं। स्कूल के आसपास कई घनी आबादी वाले इलाके हैं, वहां रह रहे बच्चों को इन दोनों स्कूलों से बेहद लाभ होगा। नारियल फोड़कर स्कूल का शिलान्यास करने के बाद केजरीवाल ने

पिछले नौ वर्षों से शिक्षा व स्वास्थ्य पर चालीस फीसद बजट खर्च करती है दिल्ली सरकार : अरविंद केजरीवाल

उनके मॉडल को भी देखा, जिसमें बच्चों को विश्वस्तरीय सुविधाएं मुहैया कराई जाएंगी। इसके बाद स्कूली बच्चों ने स्वागत गीत प्रस्तुत कर सीएम का स्वागत और नवांकुर भेंट कर उनका अभिनंद किया। यह दोनों स्कूल अलग-अलग प्लाट में बनाए जाएंगे। दोनों स्कूलों में 100 से अधिक शानदार क्लासरूम बनाए जाएंगे। दोनों स्कूल में हाइटेक लेबोरेट्री और समृद्ध लाइब्रेरी होगी। ऑफिस स्टाफ रूम सहित शानदार एक्टिविटी रूम, टॉयलेट ब्लॉक और लिफ्ट की सुविधा होगी। साथ ही एक स्कूल भवन में 300 लोगों की क्षमता वाला एयर कंडीशंड मल्टी परपज हॉल भी बनाया जाएगा।

पिछले सात सालों से दिलली के सरकारी स्कूलों के नतीजे प्राइवेट स्कूलों से बेहतर आ रहे हैं : आतिशी

शिक्षा मंत्री आतिशी ने कहा कि पहले होता था कि लोग अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूल में भेजते थे। अपना पेट काट-काटकर प्राइवेट स्कूलों की फीस भरते थे। लेकिन इन 9 सालों में लगभग 3 लाख बच्चों ने प्राइवेट स्कूल छोड़कर सरकारी स्कूलों में एडमिशन ले लिया है। पहले हर परिवार सोचता था कि थोड़े से पैसे आ जाएं तो अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों से हटाकर प्राइवेट स्कूलों में पढ़ाएंगे और आज 9 साल की शिक्षा क्रांति का यह नतीजा है कि पिछले 7 सालों से दिल्ली के सरकारी स्कूलों के नतीजे प्राइवेट स्कूलों से बेहतर आ रहे हैं। पहले लोग सोचते थे कि अपने बच्चों को महंगे प्राइवेट स्कूल में भेजेंगे। महंगी कोचिंग कराएंगे, तभी उनके बच्चों का एडमिशन किसी अच्छे कॉलेज में हो पाएगा। तभी उनके बच्चे इंजीनियरिंग, मेडिकल की पढ़ाई कर पाएंगे, लेकिन आज दिल्ली के सरकारी स्कूलों का कायापलट हो गया है। अब हर साल हजार से ज्यादा बच्चों का एडमिशन आईआईटी जेईई में होता है। वह नीट के एग्जाम क्लियर करते हैं। देश के बड़े-बड़े मेडिकल और इंजीनियरिंग कॉलेज में जाते हैं। आज एक गरीब परिवार का बच्चा न सिर्फ सपने देख सकता है, बल्कि अरविंद केजरीवाल की शिक्षा क्रांति की वजह से वह सपने साकार भी हो रहे हैं। उनको अच्छी शिक्षा और अच्छी नौकरी मिल रही है।

विरोधी दल के लोगों को हंगामा करने पर केजरीवाल ने लिया आड़े हाथ

स्कूल के शिलान्यास कार्यक्रम को संबोधित करने के दौरान दूसरी पार्टी के लोगों ने सीएम अरविंद केजरीवाल के विरोध में नारेबाजी की। इस पर सीएम ने उनको समझा कर शांत कराया। उन्होंने विपक्ष को आड़े हाथ लेते हुए कहा कि हम लोग स्कूलों, अस्पताल, मोहल्ला क्लीनिक का उद्घाटन करने जाते हैं तो दूसरी पार्टी वाले हमारा विरोध करने पहुंच जाते हैं। सीएम ने विरोध करने आए विरोधी दलों के कार्यकर्ताओं से कहा कि आज तो पवित्र दिन है।

दिव्यांग बच्चों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम ने लोगों का मनमोहा

दिव्यांग बच्चों ने बढ-चढ़कर लिया हिस्सा

नई दिल्ली, 4 फरवरी (देशबन्धु)। दिल्ली के आईटीओ स्थित हिन्दी भवन में एक गैर लाभकारी संस्था आस एन एसोसिएशन फॉर सोशल वैलफेयर के प्रयास द्वारा दिव्यांग, नेत्रहीन, मूक एवं बधिर बच्चों के लिए एक सांस्कृतिक कार्यक्रम आस का प्रयास 2024 का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम की शुरुआत दिव्यांग बच्चों द्वारा गणेश वंदना व मुख्य अतिथि माता जय कौर पब्लिक स्कूल की चेयरपर्सन सुरजीत सिंह व संस्था की अध्यक्षा ललिता गुप्ता, मुख्य संरक्षक लाला जगदीश प्रसाद, चेयरमैन राजेश मल्होत्रा, वाईस चेयरमैन प्रवीन झलान, सह-सचिव अरविंद शर्मा, कोषाध्यक्ष राहुल मित्तल व रामकिशन अग्रवाल सहित कई गणमान्य लोगों द्वारा दीप प्रज्वलित कर गई थी। आस की अध्यक्षा ललिता गुप्ता ने बताया कि इस अवसर पर नेत्रहीन, शारीरिक व मानसिक रूप से दिव्यांग बच्चों उपयोग में आने वाली वस्तुएं प्रदान कर सहायता प्रदान की गई, जिसमें स्वेटर, कंबल, दाल-चावल-मसाले, कॉपियां, नेत्रहीन छात्रों के लिए बैंत, ब्रेल पेपर, व्हीलचेयर, कान के सुनने की मशीन

आदि शामिल थे। संस्था के राहुल मित्तल ने बताया कि संस्था का उद्देश्य एक बेहतर और सर्व समावेशी समाज का निर्माण करना है, जिसमें सभी लोगों को समान अवसर हासिल हो सके। सक्षम सहयोग व नेक इरादे से संचालित पहल का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। उन्होंने बताया कि मैं सभी कि आभारी हूं, जिसने इसे संभव बनाया। अधिक लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का प्रयास करेंगे। संस्था का लक्ष्य दिव्यांग व जरुरतमंद बच्चों को सामान अवसर एवं सह भागीदारी प्रदान करना ताकि उन्हें समाज में न्याय व बराबरी का अधिकार प्राप्त हो एवं उन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़ना है।

सार संक्षेप

मल्टी स्पेशलिटी अस्पताल, आरोग्य हॉस्पिटल का उद्घाटन करेंगे गौतम गंभीर

नई दिल्ली। पूर्वी दिल्ली के सासंद गौतम गंभीर चित्रा विहार (प्रीत विहार के पास) मल्टी स्पेशलिटी अस्पताल, आरोग्य हॉस्पिटल का उद्घाटन करेंगे। पूर्वी दिल्ली के सासंद गौतम गंभीर आज होंगे कार्यक्रम में शामिल।

रोजमर्टा ने किया स्वदेश में विकसित डीएमएस टेक्नोलॉजी का अनावरण

नई दिल्ली। दिल्ली की अग्रणी ऑटो टेक कंपनी रोजमर्टा टेक्नोलॉजीज लिमिटेड ने व्हीकल ट्रैकिंग मैनेजमेन्ट सिस्टम से युक्त आधुनिक एआई-आधारित ड्राइवर मॉनिटरिंग एण्ड एलर्ट सिस्टम का लॉन्च किया। शुरुआत में फ्लीट ऑपरेटर्स को ध्यान में रखते हुए डिज़ाइन किया गया यह सिस्टम ट्रकों के लिए रियल-टाईम ट्रैकिंग, वीडियो एआई आधारित ड्राइवर बिहेवियर मॉनिटरिंग एवं इन-केबिन एलर्ट उपलब्ध कराता है। कर्न नागपाल, प्रेज़ीडेन्ट, रोज़मर्टा ने कहा कि रोज़मर्टा एआई-आधारित ड्राइवर मॉनिटरिंग एवं एलर्ट सिस्टम के साथ भारतीय सड़कों पर सुरक्षा और जवाबदेहिता का नया दौर शुरू करने के लिए प्रतिबद्ध है। ड्राइवर के व्यवहार पर रियल टाईम में निगरानी रखकर हम खासतौर पर फ्लीट ऑपरेटर्स के लिए सड़क सुरक्षा में सुधार लाना चाहते हैं। हमारा मानना है कि इस टेक्नोलॉजी में अपार क्षमता है, जो फ्लीट मैनेजमेन्ट के साथ-साथ व्यक्तिगत खरीददारों और टैक्सी फ्लीट्स को लाभान्वित करेगी। रोजमर्टा सुरक्षित ऑटोमोटिव अनुभव के लिए व्यवहारिक एवं सुलभ समाधान उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है।

रमजान कमेटी के पदाधिकारी घोषित

नई दिल्ली। दिल्ली की रमज़ान-उल-मुबारक इन्तेजामिया कमेटी के पदाधिकारियों की घोषणा हुई। चीफ काजी एवं रमजान-उल-मुबारक इन्तेजामिया कमेटी के संयोजक मुफ्ती मौहम्मद ताहिर हुसैन ने सर्वसहमति से कमेटी के पदाधिकारियों की घोषणा की। ओजेर अहमद काजी को चेयरमैन डॉ. अब्दुल रहीम को डिप्टी चेयरमैन हाजी मौहम्मद अनवार को मुख्य संरक्षक मौहम्मद दानिश मतीन को संरक्षक शमीम अहमद खान को अध्यक्ष मौहम्मद अकरम को वरिष्ठ उपाध्यक्ष सरफराज अहमद रंगरेज को उपाध्यक्ष मौहम्मद कादिर को महासचिव मौहम्मद कामिल को सचिव जहीर आलम को कोषाध्यक्ष के साथ साथ गुलजार अहमद को भी मीडिया प्रमुख नियुक्त किया गया है। मुफ्ती मौहम्मद ताहिर हुसैन ने बताया कि 22 फरवरी 2024 को एक पद परिचय सम्मान बैठक बुलाई गई है जिसमें सभी पदाधिकारियों का स्वागत भी किया जाएगा। 11 मार्च 2024 से शुरू हो रहें पवित्र रमजान मुबारक के महीने में दिल्ली में जन सुविधाओं का विशेष प्रबन्ध कराने के लिए कमेटी प्रयासरत है

ठगने वाले अंतरराष्ट्रीय फर्जी कॉल सेंटर का भंडाफोड़

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने एक अंतरराष्ट्रीय फर्जी कॉल सेंटर का भंडाफोड़ करने का दावा किया है, जो कथित तौर पर खुद को माइक्रोसॉफ्ट और एप्पल जैसी शीर्ष कंपनियों के अधिकारियों के रूप में पेश कर विदेशी नागरिकों को ऑनलाइन सहायता प्रदान करने के बहाने अमेरिकी नागरिकों को ठग रहा था। तीन आरोपियों को भी गिरफ्तार किया गया है। जिनकी पहचान शुभम चौधरी, राजौरी गार्डन निवासी अखिल बरदिया और हरि नगर निवासी राहुल गुसाईं के रूप में हुई है।

लोकसभा चुनाव के लिए कांग्रेस ने शुरू की उम्मीदवारों के चयन की प्रक्रिया

कार्यकर्ता व आम जनता के सुझाव और सलाह को दी जाएगी प्राथमिकता

नई दिल्ली, 4 फरवरी (देशबन्धु)। कांग्रेस ने दिल्ली के सभी सातों संसदीय क्षेत्रों में उम्मीदवारों के चयन की प्रक्रिया के प्रथम चरण की शुरूआत कर दी है। उम्मीदवारों के चयन में पार्टी कार्यकर्ता व आम जनता के सुझाव और सलाह को प्राथमिकता दी जाएगी। रविवार को चयन प्रक्रिया की घोषणा करते हुए पार्टी के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष अरविंद सिंह लवली ने कहा कि प्रथम चरण में दिल्ली के सभी कांग्रेस कार्यकर्ताओं व आम जनता से जीतने वाले, साफ सुथरी छवि व लोकप्रिय उम्मीदवारों के नामों पर सुझाव मांगे जाएंगे। उन्होंने बताया कि यह सुझाव प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में लिखित, मौखिक या अन्य साधनों से लिए जाएंगे। इसके अलावा कांग्रेस कार्यकर्ता व आम

जनता दिल्ली के प्रभारी महासचिव दीपक बाबरिया को भी अपने सुझाव सीधे भेज सकती है। वरिष्ठ नेता व पूर्व विधायक मुकेश शर्मा ने कहा कि प्रदेश कांग्रेस केंद्र सरकार, दिल्ली सरकार व दिल्ली नगर निगम के संबधित राजधानी में जनहित के मुद्दों ने केवल और अधिक मुखर होगी बल्कि कांग्रेस कार्यकर्ता स्थानीय स्तर पर सड़कों पर आकर आम जनता के मुद्दों को आक्रमक रूप से उठाएंगे।

आम जनता के सुझाव को पहली प्राथमिकता देने लिया निर्णय

वहीं, वरिष्ठ नेता व पूर्व विधायक मुकेश शर्मा ने बताया कि इससे पूर्व में इच्छुक उम्मीदवारों से आवेदन लेने की प्रथा रही है लेकिन पार्टी ने इस बार गंभीरता दिखाते हुए कांग्रेस कार्यकर्ताओं और आम जनता के सुझाव व सलाह को पहली प्राथमिकता देने निर्णय कर लिया है। पार्टी ने यह भी फैसला किया कि प्रदेश अध्यक्ष अरविंदर सिंह लवली व दिल्ली के सभी वरिष्ठ, छोटे-बड़े नेता अगले एक महीने तक लगातार दिल्ली के सभी 14 जिलों में लगभग 15 हजार पोलिंग बूथों पर न केवल कांग्रेस कार्यकर्ताओं से सीधा सम्पर्क करेंगे बल्कि आम जनता से भी घर-घर जाकर जुड़ा जाएगा।

कैंसर रोग के प्रति किया जागरूक

कवि सम्मेलन के माध्यम से खतरनाक बीमारियों के बारे में दी जानकारी

नई दिल्ली, 4 फरवरी (देशबन्धु)। विश्व कैंसर रोग दिवस के अवसर पर जनकपुरी स्थित समिता मिश्रा मेमोरियल फाउंडेशन फॉर कैंसर रिसर्च द्वारा एक शानदार अखिल भारतीय हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। हंसी-हंसी में ही इस खतरनाक बीमारियों को बारे में कवियों ने दर्शकों को जागरूक किया। हिन्दी हास्य कवि सम्मेलन में जाने माने कवि वसीम बरेलवी, कवयित्री शाहबीन अदीब, डॉ. प्रवीण शुक्ला, शंभु शिखर, डॉ. कृति काले, सईद नजीम ईकबाल और डॉ. राजीव राज ने अपनी कविताओं से हास्य व्यंग्य से लोगों का भरपूर मनोरंजन किए। फाउंडेशन के वाइस प्रेसिडेंट मीडिया सेल दिलीप पाठक के अनुसार कैंसर रोग से पीड़ित लोगों व इलाज करवा कर स्वस्थ हो चुके लोगों के मनोरंजन के साथ साथ कैंसर के प्रति लोगों को जागरूक

करने के उद्देश्य से यह कार्यक्रम किया गया। उन्होंने बताया कि कैंसर का सही समय पर यदि पकड़ लिया जाए तो इसका पूरा इलाज होता है जिससे लोग पूरी तरह से स्वस्थ हो सकते हैं, लेकिन लोगों में इसको लेकर एक भ्रांति है कि इस बीमारी के होने का मतलब मृत्यु है। ऐसे ही भ्रम को दूर करने के लिए कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया है और इसके माध्यम से यह संदेश देने का प्रयास किया गया है कि जिंदगी के हर पल को पूरे आनंद के साथ जिएं। बता दें कि संस्था के चेयरपर्सन प्रफुल्ल कुमार की पत्नी समिता का 2013 में कैंसर से देहांत हो गया था। उसके बाद हर वर्ष विश्व कैंसर दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन कर कैंसर के प्रति जागरूकता फैला रहे हैं ताकि कोई भी व्यक्ति कैंसर से ना पीड़ित हों। पाठक ने बताया कि कैंसर के प्रथम स्टेज में पता चलने पर 90-95 प्रतिशत, दूसरे स्टेज में पता चलने पर 80-85 प्रतिशत और तीसरे स्टेज में पता चलने पर मरीज के बचने की संभावना लगभग 60 प्रतिशत होती है।

कोरियाई-भारतीय विवि संगीत समारोह में भाग लेने के लिए आवेदन शुरू

नई दिल्ली, 4 फरवरी (देशबन्धु)। कोरियाई-भारतीय विश्वविद्यालय संगीत समारोह के लिए आवेदन शुरू हो गये हैं।

इस प्रतियोगिता का आयोजन कोरिया सिंगर्स एसोसिएशन एवं वर्ल्ड कल्चर एक्सचेंज एसोसिएशन कोरिया द्वारा भारत सरकार के सहयोग से किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए भारत के किसी भी विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले मास्टर और डॉक्टरेट के छात्रों सहित अन्य छात्रों के द्वारा 30 अप्रैल तक अवेदन किया जा सकता है। संगठन के अध्यक्ष पार्क ही शो ने बताया कि कोई भी छात्र गाने के साथ वाद्य यंत्र बजाने के मामले में प्रतियोगिता में भाग ले सकता है। इसमें भार और कोरिया सहित दुनिया भर के देशों के गाने शामिल किये जा सकते हैं। संगठन की वेबसाइट डब्लू डब्लू डब्लू डॉट के-डब्लू ओआरएलडीयूएसएफडॉटकाम पर आवेदन के साथ 30 सैकेंड के टिकटॉक या यूट्यूब के लिंग अपलोड किये जा सकते हैं। प्रतियोगिता का आयोयजन रविवार, 16 जून 2024, दोपहर 2 बजे से नोएडा सिटी एक्सपो में किया जा रहा है। पार्क ही शो ने बताया कि प्रतियोगिता में पहले 30 प्रतियोगियों को कोरियन सिंगर्स एसोसिएशन के द्वारा गायक के रूप में मान्यता और गायन का प्रमाण पत्र दिया जायेगा।

छात्र की मौत के बाद इंसाफ को धरने पर बैठ परिजन

नई दिल्ली, 4 फरवरी (देशबन्धु)। 11 जनवरी को शास्त्री नगर वार्ड में ललिता ब्लॉक स्थित दिल्ली सरकार के राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय में छठी कक्षा में पढ़ रहे किंतन की बड़ी कक्षा के कुछ छात्रों ने पीट-पीट कर घायल कर दिया और घर जाने पर चिंतन ने अपने माता-पिता को अपने ऊपर बीते घटनाक्रम की जानकारी दी और शरीर में कई जगह दर्द होने की शिकायत की। मां बाप ने तुरंत उसको दीपचंद बंधु अस्पताल में दिखाया और स्कूल में प्रिंसिपल को इसकी शिकायत की एवं स्कूल में लगे सीसीटीवी कैमरा की मदद से सारे घटनाक्रम की जानकारी मांगी। लेकिन बड़े दुख के साथ बताया जा रहा है कि पूरे

देश और विश्व के अंदर शिक्षा मॉडल का ढिंढोरा पीटने वाली दिल्ली की केजरीवाल सरकार के चार कैमरा में से दो काम ही नहीं कर रहे थे और बाकी दो कहां लगे हुए थे उसकी कोई जानकारी नहीं है। बार-बार स्कूल प्रशासन को शिकायत दर्ज करने के बाद जब किसी प्रकार की कार्रवाई नहीं हुई तब माता-पिता ने दिल्ली सरकार द्वारा दिल्ली बाल अधिकार आयोग में भी इसकी शिकायत की और अगले दिन दिल्ली पुलिस को भी इसकी शिकायत भेजी गई इधर बच्चे की तकलीफ लगातार बढ़ रही थी और उसे दिल्ली सरकार के दीपचंद बंधु अस्पताल में भर्ती कराया गया जहाँ तड़प तड़प कर उसने अपनी जान दे दी। लेकिन दिल्ली सरकार, दिल्ली सरकार के प्रशासन एवं और स्कूल प्रशासन पर कोई जू नहीं रेंगी। जयप्रकाश ने बताया क्षेत्र के अंदर दिल्ली की अरविंद केजरीवाल सरकार और क्षेत्रीय विधायक सोमदत्त के खिलाफ लोगों में भारी रोष है क्योंकि क्षेत्रीय विधायक ने एक दिन भी आकर ना तो कोई सुधरी ना उन्हें कोई सहयोग किया जबकि वह चाहते तो दिल्ली सरकार के शिक्षा विभाग से कहकर सभी दोषी स्कूल स्टाफ के खिलाफ तुरंत कार्रवाई कर सकते थे क्योंकि दिल्ली सरकार अरविंद केजरीवाल एवं उनके विधायकों का दिल्ली की जनता से कोई सरोकार नहीं है इसलिए उनके इस निकम्मेपन को देखा जा सकता है पूर्व महापौर जयप्रकाश ने बताया कि पिछले 4 दिन से स्कूल प्रशासन एवं दिल्ली सरकार के खिलाफ क्षेत्र की जनता परिवार के साथ अनिश्चितकालीन धरने पर बैठी है एवं सहयोग कर रही है।

आयोजन *राष्ट्रीय पुलिस मेमोरियल उद्घाटन समारोह का हुआ आयोजित*

आरपीएफ ने की एक माह चलने वाले कार्यक्रम की शुरुआत

नई दिल्ली, 4 फरवरी (देशबन्धु)। शनिवार को राष्ट्रीय पुलिस मेमोरियल, नई दिल्ली में आरपीएफ द्वारा एक महीने तक चलने वाले कार्यक्रम का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। राष्ट्रीय पुलिस स्मारक (एनपीएम), दिल्ली उन सभी सीपीओएस/सीएपीएफ/राज्य पुलिस के पुलिस कर्मियों को सम्मानित करने का राष्ट्र का प्रयास है, जिन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए कर्तव्य निभाते हुए अपने जीवन का बलिदान दिया। यह स्मारक हमारे पुलिसकर्मियों के सम्मान में खड़ा है, जो कानून और व्यवस्था बनाए रखते हुए, राष्ट्रीय संपत्ति की रक्षा करते हुए, आपदाओं और अन्य आपात स्थितियों से लड़ते हुए सीमा और भीतरी इलाकों में आतंकवाद, उग्रवाद और अपराध से लड़ते हैं।

■ आरपीएफ के पास है शहादत की एक समृद्ध विरासत

एनपीएम हर सप्ताहांत पुलिस शहीदों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने और सम्मान देने और उनके परिवार के सदस्यों को सम्मानित करने के लिए एक गंभीर समारोह आयोजित करता है। एक माह तक इस आयोजन के संचालन की जिम्मेदारी बारी-बारी से एक केंद्रीय पुलिस बल को सौंपी जाती है। यह कार्यक्रम रेलवे सुरक्षा बल द्वारा फरवरी 2024 में आयोजित किया जाएगा। रेल मंत्रालय के तहत संघ का एक सशस्त्र बल, आरपीएफ, लोगों की जान बचाने, जरूरतमंद लोगों की सहायता करने और मानव तस्करी और नशीली दवाओं की तस्करी से निपटने के मिशन पर लगा हुआ है। 2023 के दौरान, बल

ने 3719 लोगों की जान बचाई है, संकट में फंसे 11794 बच्चों और 3492 वयस्कों को बचाया है, 257 मानव तस्करों की गिरफ्तारी के साथ 1048 पीड़ितों को मानव तस्करों के चंगुल से बचाया है और 922 ड्रग तस्करों को गिरफ्तार किया है। बल सेवा ही संकल्प के उद्देश्य से काम करता है। यह बल रेलवे संपत्ति की सुरक्षा के लिए पूरी तरह जिम्मेदार होने से लेकर रेल यात्रियों के समर्पित रक्षक बनने में परिवर्तित हो गया है। आरपीएफ के अटूट समर्पण की स्वीकृति में, आरपीएफ कर्मियों को वीरता के लिए 3 राष्ट्रपति पुलिस पदक, वीरता के लिए 19 पुलिस पदक, विशिष्ट सेवा के लिए 94 राष्ट्रपति पदक और सराहनीय सेवा के लिए 942 पदक से सम्मानित किया गया है। एक महीने तक चलने वाले कार्यक्रम की उपयुक्त शुरुआत के रूप में, रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने 3 फरवरी को राष्ट्रीय पुलिस स्मारक पर पुलिस स्मारक पर पुष्पांजलि, बैंड डिस्प्ले और रिट्रीट जैसी विभिन्न गतिविधियों के साथ उद्घाटन समारोह आयोजित किया। नई दिल्ली में. श। संजय कुमार मिश्रा, आईजी-सह-पीसीएससी, आरपीएफ, दक्षिण पूर्व रेलवे इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। शहीद चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों का सामना करने में असाधारण साहस और वीरता के प्रतीक के रूप में काम करते हैं। आरपीएफ के पास शहादत की एक समृद्ध विरासत है, इसके कर्मचारी और अधिकारी भारतीय रेलवे और इसके यात्रियों की सुरक्षा के लिए विद्रोहियों, राष्ट्रविरोधी तत्वों और अपराधियों से लड़ते हुए कर्तव्य की पंक्ति में अपने जीवन का बलिदान देते हैं।

युवती ने मां के घर से अपने ही गहने चुराए

नई दिल्ली, 4 फरवरी (देशबन्धु)। पुलिस ने रविवार को बताया कि प्यार की कमी का हवाला देते हुए 31 वर्षीय एक युवती ने पश्चिमी दिल्ली में अपनी मां के घर से कथित तौर पर नकदी और आभूषण चुरा लिए। यह घटना 30 जनवरी को सामने आई, जब पुलिस को उत्तम नगर इलाके में एक घर में चोरी की शिकायत मिली। शिकायतकर्ता ने पुलिस को बताया कि दोपहर 2 बजे बुर्का पहने एक महिला उसके घर में घुसी और 2.30 बजे उसके घर से सोना, चांदी और 25 हजार रुपए नकद लेकर चली गई। द्वारका के पुलिस उपायुक्त अंकित सिंह ने कहा कि मामले को सुलझाने के लिए लगाई गई पुलिस टीम ने पाया कि संदिग्ध ने घर में जबरन प्रवेश नहीं किया था, न ही अलमारी का दरवाजा टूटा हुआ पाया गया था।

कैपिटल ज़ोन

उवाच

मोदी सरकार के अंतरिम बजट को लेकर कहा कि यह बजट पिछले वर्ष के आधार पर बनाया गया है। मोदी सरकार के 'सबका साथ, सबका विकास' के आदर्श वाक्य के अनुरूप, गरीब, युवा, अन्नदाता को शामिल करता है। इस बजट में भारत के जी-20 की अध्यक्षता के वर्ष के दौरान मोदी सरकार द्वारा किए गए कार्यों की रेखांकित किया गया।

डॉ. महेश शर्मा, भाजपा सांसद

स्ट्रक्चर ऑडिट के लिए प्राधिकरण नियुक्त करेंगे प्राइवेट एजेंसी

नोएडा, 4 फरवरी (देशबन्धु)। प्राधिकरण की स्ट्रक्चर ऑडिट पॉलिसी बन चुकी है। इसे अप्रैल 2023 से लागू भी कर दिया गया है। इसमें ऑडिट कराने

- **जल्द मांगे जाएंगे आवेदन**
- **प्राधिकरण की शर्तों का करना होगा पालन**

के लिए प्राधिकरण ने सात एजेंसियों को पैनल पर लिया है। अब प्राधिकरण प्राइवेट कंपनियों को पैनल पर लाएगी। ये कंपनियां तेजी और बे हतर तरीके से स्ट्रक्चर ऑडिट कर सकेंगी। इसके लिए जल्द ही प्राधिकरण आवेदन मांगेगा। कंपनियों को प्राधिकरण की शर्त के अनुसार कार्य करना होगा। वर्तमान में स्ट्रक्चर ऑडिट के लिए जिन एजेंसियों को शामिल किया गया है उनमे आईआईटी कानपुर, एमएनआईटी प्रयागराज, बिट्स पिलानी, एनआईटी जयपुर, सीबीआरआई रुड़की शामिल है। सीईओ लोकेश एम ने बताया कि स्ट्रक्चर ऑडिट के लजिए प्राइवेट एजेंसी के आने से कार्य में काफी तेजी आएगी। नोएडा में आठ सोसायटियों ने स्ट्रक्चर ऑडिट के लिए आवेदन किया है। अब डीजीएम स्तर की टीम इन सोसायटी का निरीक्षण करेगी। टीम की रिपोर्ट तय करेगी कि इन सोसाइटी का स्ट्रक्चर ऑडिट किया जाए या नहीं। यदि कराना होगा तो सोसाइटी के एओए किसी एक एजेंसी या नियुक्त होने वाली प्राइवेट फर्म से अपने खर्चे पर स्ट्रक्चर ऑडिट करा सकती है। बता दे नोएडा सिसमिक जोन-4 में आता है। जो कि भूकंप के लिहाज से बेहद संवेदनशील माना जाता है। इसलिए यहां इमारतों के स्ट्रक्चर ऑडिट पॉलिसी को बनाया गया है।

नोएडा में करीब 100 सोसायटी है। जिनमें 400 हाइराइज इमारत है। सवाल ये है कि इन इमारतों की मजबूती कितनी है। इनमें से अधिकांश इमारतों को बने हुए पांच साल से ज्यादा हो गए। प्राधिकरण का दावा है यहां बनी इमारते रिक्टर स्केल 7 और 8 तक का झटका झेल सकती है। हालांकि इनके लिए प्राधिकरण ने आप्शन दिए है। जिन इमारतों की लाइफ पांच साल हो चुकी है। आरडब्ल्यूए या एओए भी इन एजेंसियों से स्ट्रक्चर ऑडिट करवा सकती है। इसका खर्चा उन्हें खुद देना होगा। वहीं प्राधिकरण ने बताया कि पॉलिसी लागू होने से पहले बिल्डर खुद ऑडिट कराता था। इसकी रिपोर्ट आईआईटी से संबंधित कोई प्रोफेसर एप्रूव कर सकता था। इस रिपोर्ट को प्राधिकरण मान्य मानता था। जिसके बाद बिल्डर को ओसी और सीसी जारी कर सकता था। लेकिन अब ऐसा नहीं होगा।

अब डालते पॉलिसी पर एक नजर और ये होगा फायदा

- ये पॉलिसी तीन मेजर डिफेक्ट पर आधारित है। पहली इमारत के फाउंडेशन में क्रेक और डैमेज, दूसरी फ्लोर व कॉमन एरिया में क्रेक और डैमेज और तीसरा दीवारों में क्रेक और डेमेज।
- प्राधिकरण ओसी जारी करने से पहले बिल्डर अपने खर्चे पर स्ट्रक्चरल ऑडिट कराएगा। ये आडिट उसे प्राधिकरण की ओर से इम्पैनल्ड किए गए पैनल से ही कराना होगा।
- यदि स्ट्रक्चरल ऑडिट के बाद 25 प्रतिशत फ्लैट बायर्स की ओर से स्ट्रक्चर डिफेक्ट की शिकायत की जाती है तो प्राधिकरण की ओर से गठित समिति द्वारा निर्णय लिया जाएगा कि डिफेक्ट मेजर है या माइनर। इसके बाद अपार्टमेंट ऑनर एसोसिएशन एक्ट में स्ट्रक्चर डिफेक्ट को दूर किए जाने की जिम्मेदारी दो साल तक बिल्डर की होगी।
- रेरा अधिनियम के तहत पांच साल तक स्ट्रक्चर डिफेक्ट को दूर करने की जिम्मेदारी बिल्डर की और पांच साल बाद एओए की होगी। इस अवधि की गणना अधिभोग प्रमाण पत्र जारी होने के बाद की जाएगी।
- यदि स्ट्रक्चरल ऑडिट की रिपोर्ट निगेटिव आती है तो पांच साल के अंदर स्ट्रक्चर डिफेक्ट को बिल्डर की ओर से दूर किया जाएगा। दो से पांच साल की अवधि के प्रकरण में प्राधिकरण एजेंसी से ऑडिट करवाकर कमियों को दूर करने के लिए रेरा प्राधिकरण को कहेगा। इसके अलावा पांच साल से अधिक होने पर ये जिम्मेदारी एओए की होगी।

रेकी कर लग्जरी कार चोरी करने वाले गिरोह के पांच बदमाश गिरफ्तार

नोएडा, 4 फरवरी (देशबन्धु)। चार पहिया वाहनों की चोरी करने वाले गिरोह के पांच शातिर बदमाशों को थाना फेज तीन पुलिस मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार किया गया। बदमाशों की निशानदेही पर चोरी की तीन कार, स्कैनर, डिवाइस, हथौड़ा, चुबंक, चाबी और लॉक तोड़ने के उपकरण समेत अन्य सामान बरामद हुआ है। घायल बदमाशों को उपचार के लिए जिला अस्पताल भेजा गया है। बदमाशों ने बरामद वाहन कहां से चोरी किए इसकी जानकारी जुटाई जा रही है।

थाना फेस 3 टीम ने चेकिंग के दौरान लोकल इन्टेलिजेंस व बीट पुलिसिंग के जरिए मिली गोपनीय सूचना के आधार पर स्विफ्ट कार को रोकने का प्रयास किया। उनके नहीं रुकने पर पुलिस पार्टी द्वारा पीछा किया गया। बदमाशों ने पथला ब्रिज से गढ़ी गोल चक्कर की ओर जाने वाली रॉग साइड सर्विस रोड पर अपने को घिरता देख अथॉरिटी डंपिंग ग्राउंड के पास

- **बदमाशों की निशानदेही पर चोरी के तीन वाहन, स्कैनर, डिवाइस समेत अन्य सामान बरामद**

पुलिस पार्टी पर फायरिंग की। पुलिस टीम द्वारा अपनी आत्मरक्षार्थ जवाबी कार्रवाई की। इसमें बदमाश आशीष व फिरोज अहमद को गिरफ्तार किया गया। दोनों के पैर में गोली लगी।

घायल बदमाशों के कब्जे से 1-1 अवैध तमंचा 315 बोर व 3 जिन्दा कारतूस, व 01-01 खोखा कारतूस 315 बोर व स्विफ्ट कार चालक अमित के कब्जे से एक नाजायज चाकू व एक स्विफ्ट कार, स्विफ्ट कार के अन्दर से 8 फर्जी नंबर प्लेट भिन्न भिन्न नंबर की, एक डिवाइस स्केनर - 100PADE-00485 वायर के साथ, एक चुंबक युक्त यन्त्र, 26 चाबियां कार की अलग-अलग कंपनियों की, एक फास्टटेग एवं एक वाईफाई डिवाइस बरामद की गई। अमित की निशानदेही पर दिनेश उर्फ मुलायम और फन्नू अली उर्फ अजमेर अली को गिरफ्तार किया गया। इनके कब्जे से दो कार और छह अन्य डिवाइस बरामद की गई।

सार संक्षेप

दिल्ली, गाजियाबाद व नोएडा में सक्रिय हिस्ट्रीशीटर बदमाश गिरफ्तार

गाजियाबाद। थाना मुरादनगर पुलिस ने जांच के दौरान गैंगस्टर एक्ट के अभियोग में वांछित चल रहे हिस्ट्रीशीटर बदमाश को गिरफ्तार किया है। उसके खिलाफ गाजियाबाद में लूट, चोरी, धोखाधड़ी, आर्म्स एक्ट व गैंगस्टर आदि के करीब 28 अभियोग तथा गौतमबुद्धनगर में डकैती, बलवा, आर्म्स एक्ट व गैंगस्टर के 04 अभियोग व दिल्ली में चोरी का एक मुकदमा दर्ज है। डीसीपी ग्रामीण विवेक चंद यादव ने बताया कि गिरफ्तार बदमाश मोहन उर्फ मुन्ना है जो रबिचपटा कस्बा व थाना मुरादनगर का निवासी है। वह थाना मुरादनगर का हिस्ट्रीशीटर अपराधी है तथा उसका एक संगठित गिरोह है जो अपने गिरोह के अन्य साथियों के साथ मिलकर अवैध रुप से धन लाभ अर्जित करने के लिए चोरी, लूट, नकबजनी व अन्य अपराध कारित कर आर्थिक लाभ अर्जित करता है।

दिनेश अवाना नगीना लोकसभा का चुनाव पर्यवेक्षक नियुक्त होने पर स्वागत

नोएडा। युवा कांग्रेस गौतमबुद्धनगर जिलाध्यक्ष जावेद खान के नेतृत्व में साथियों के साथ नोएडा कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सर्व समाज के लोकप्रिय नेता दिनेश अवाना एडवोकेट को नगीना लोकसभा का चुनाव पर्यवेक्षक नियुक्त होने पर गुलदस्ता भेंट कर फूल माला पहनाकर स्वागत अभिनंदन इस्तकबाल किया। लोकसभा नगीना चुनाव पर्यवेक्षक एडवोकेट दिनेश अवाना ने कहा कि आगामी लोकसभा चुनाव में पार्टी ओर संगठन को मजबूतव तानाशाह शासन को उखाड़ फेंकने में अपनी अहम भूमिका निभाएंगे। किसान नेता कांग्रेस वरिष्ठ नेता पूनम पंडित ने कहा कि लोकसभा के नवनियुक्त प्रभारी को शुभकामनाएं बधाई देती हूं। इस मौके पर मुख्य रूप से कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता लोकसभा नगीना चुनाव पर्यवेक्षक एडवोकेट दिनेश अवाना, अंतरराष्ट्रीय शूटर किसान नेता पूर्व विधानसभा विधायक प्रत्याशी काग्रेस नेता पूनम पंडित, प्रदेश महासचिव युवा कांग्रेस शहाबुद्दीन, एनएसयू आई ज़िला उपाध्यक्ष वीरेंद्र मुखिया, एनएसयूआई नेता गौरव, अंकित चौहान, विनोद, अंजार व अन्य लोग मौजूद रहे।

दो भाइयों समेत तीन पर 18.70 लाख हड़पने का आरोप

नोएडा। फ्लैट दिलाने के नाम पर दो भाइयों ने अपने साथी के साथ मिलकर एक व्यक्ति के 18 लाख 70 हजार रुपए हड़प लिए। पीड़ित ने मामले की शिकायत संबंधित थाने में की पर सुनवाई न होने पर उसने न्यायालय का दरवाजा खटखटाया। अब न्यायालय के आदेश पर सेक्टर-126 थाने में तीन आरोपियों के खिलाफ संबंधित धाराओं में केस दर्ज किया गया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। संयुक्त अरब अमीरात में नौकरी करने वाले दिल्ली के नरेला निवासी राहुल ने न्यायालय में दिए प्रार्थना पत्र में बताया कि 2014 में उनकी मुलाकात नरेला के की कुश वर्मा व लव वर्मा से हुई। दोनों सगे भाई हैं। लव और कुश से मुलाकात के दौरान राहुल ने एक फ्लैट नोएडा में लेने की इच्छा जताई। इसके बाद दोनों ने राहुल को सेक्टर-113 स्थित सुपरटेक नार्थ आई में एक फ्लैट के बिकने की जानकारी दी। दोनों ने शिकायतकर्ता को बताया कि नरेला के नरेंद्र कुमार फ्लैट बेचने के इच्छुक हैं।

गैस गीजर चलाने से दम घुटने से गंभीर हुई महिला की उपचार के दौरान मौत

नोएडा। छिजारसी कॉलोनी में 25 जनवरी की रात गैस गीजर चलाकर सोने से पति और पुत्र की मौत के बाद उपचाराधीन महिला ने भी शनिवार रात को दम तोड़ दिया। महिला का एक निजी अस्पताल में उपचार चल रहा था। मृतका के गृह जनपद पीलीभीत में अंतिम संस्कार किया जाएगा। बीते 26 जनवरी की सुबह महिला को बेहोशी की हालत में कमरे से बाहर निकालकर अस्पताल में भर्ती कराया गया था, जबकि उसके पति और पुत्र की मौत हो चुकी थी। पुलिस ने महिला के शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया है। सेक्टर-63 थाना प्रभारी ने बताया कि पीलीभीत के पूरनपुर के 35 वर्षीय शम्मू किराये का कमरा लेकर परिवार के साथ छिजारसी कॉलोनी में रहते थे। वह सेक्टर-63 स्थित एक कंपनी में सिलाई का काम करके परिवार का भरण-पोषण कर रहे थे। शम्मू के साथ पत्नी उजमा और उनका चार माह का बेटा मोहम्मद अली भी रहता था। बीते माह बच्चे को ठंड से बचाने के लिए शम्मू ने एलपीजी का एक सिलेंडर खरीदा था। कमरे को गर्म रखने के लिए वह सिलेंडर पर हीटर लगाकर सो जाता था। 25 जनवरी को भी शम्मू का परिवार गैस हीटर चालू करके सो गया। अगले दिन सुबह जब शम्मू के कमरे का दरवाजा नहीं खुला तो मालिक और अन्य किरायेदारों को अनहोनी की आशंका हुई। 26 जनवरी को ही छिजारसी गांव में रहने वाले एक

- **महिला के पति और बेटे की 25 जनवरी को ही हो गई थी मौत**
- **महिला का एक निजी अस्पताल में चल रहा था उपचार**

व्यक्ति ने पुलिस को सूचना दी थी कि उसके मकान में किराए पर रहने वाला पीलीभीत निवासी शम्मू का दरवाजा अंदर से बंद है और वह दरवाजा नहीं खोल रहा है। सूचना के आधार पर मौके पर पहुंची पुलिस ने किसी तरह दरवाजा खोला तो अंदर शम्मू और उसका 4 माह का बेटा मृत पड़े हुए मिले। कमरे में पप्पू की पत्नी उजमा गंभीर हालत में बेहोश पड़ी हुई थी। इसके बाद पुलिस ने उजमा को एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया। बीते आठ दिनों से उसका उपचार चल रहा था और हालत गंभीर बनी हुई थी। उपचार के दौरान शनिवार को उजमा ने भी दम तोड़ दिया।

कार सेवकों को राष्ट्र चेतना मिशन ने किया सम्मानित

बुलंदशहर, 4 फरवरी (देशबन्धु)। अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मन्दिर प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में राष्ट्र चेतना मिशन द्वारा जिले के विभिन्न स्थानों पर कारसेवकों का सम्मान समारोह निरंतर जारी है। सन 1992 कारसेवा में सम्मिलित रहे रामभक्तों को श्रीराम जन्मभूमि प्रतीक चित्र एवं भगवा अंग वस्त्र भेंट कर सम्मानित किया गया।रविवार को नैथला रोड स्थित ग्राम सिखैडा में आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्र चेतना मिशन के अध्यक्ष हेमन्त सिंह ने कहा कि श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति संघर्ष के दौरान विश्व हिंदू परिषद द्वारा आयोजित 1990 और 1992 की कार सेवा में सम्मिलित रहे लोगों के योगदान के कारण ही भारत भूमि पर कलंक के प्रतीक विवादित बाबरी ढांचा का विध्वंस हुआ और भव्य मंदिर के पुनर्निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ। अब अयोध्या में विशाल प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम होने से समस्त सनातनी हिंदू समाज हर्षित और आनंदित है। कार्यक्रम अध्यक्ष सतवीर सिंह प्रधान, विशिष्ट अतिथि ग्राम प्रधान नैथला प्रियंक कौशिक एवं आयोजक संस्था राष्ट्र चेतना मिशन के पदाधिकारियों ने ग्राम सिखेड़ा निवासी कार सेवक स्व. झम्मन सिंह के पुत्र हिमांशु सिंह सहित सुनील चौधरी,

राकेश कुमार, जयचन्द सिंह, मुनेश कुमार, मीनू सिंह, बब्बन भाटी एवं सुदेश कुमार को फूलमाला एवं भगवा अंग वस्त्र पहनाकर अभिनंदन करते हुए श्रीराम जन्मभूमि का प्रतीक चित्र भेंटकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि राष्ट्र चेतना मिशन के अध्यक्ष हेमन्त सिंह, कार्यक्रम अध्यक्ष सतवीर सिंह, विशिष्ट अतिथि प्रियंक कौशिक सहित विकास सिंह, रवि पाल, धनंजय सिंह, देवेश शर्मा, विनीत कुमार आदि उपस्थित रहे।

बिजली के बकाएदारों के खिलाफ आज से चलाया जाएगा अभियान

नोएडा, 4 फरवरी (देशबन्धु)। विद्युत निगम के बकाएदारों के खिलाफ सोमवार से विशेष अभियान चलाया जाएगा। इसके तहत बकाया नहीं देने वाले लोगों का कनेक्शन काटा जाएगा। विद्युत निगम के अधिकारियों के अनुसार 75 हजार उपभोक्ताओं पर 210 करोड़ रुपए से अधिक का बिल बकाया था। इनमें हर उपभोक्ता का बकाया दस हजार रुपए से अधिक था। तीन फरवरी तक करीब 15 हजार लोगों ने करीब दस करोड़ रुपए जमा करा दिए। शेष 60 हजार उपभोक्ताओं के खिलाफ सोमवार से अभियान चलाया जाएगा। इन पर करीब दो सौ करोड़ रुपए का राजस्व बकाया है। यह अभियान 15 फरवरी तक जारी रहेगा। जेई और एसडीओ को बकायेदारों के खिलाफ कार्रवाई का लक्ष्य भी दिया जाएगा। विद्युत निगम के अधीक्षण अभियंता नंदलाल ने बताया कि एकमुश्त समाधान योजना में बकाएदारों को सरचार्ज में सौ फीसदी तक छूट दी गई थी। इसके बाद भी काफी लोगों ने योजना का लाभ नहीं उठाया।

आयुष विभाग के शिविर में सात सौ लोगों ने कराई जांच

गाजियाबाद, 4 फरवरी (देशबन्धु)। पब्लिक हेल्थ आउटरीच कार्यक्रम के अन्तर्गत आयुष विभाग गाजियाबाद ने

लोनी में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया। जिसमें सात सौ लोगों ने अपने स्वास्थ्य की जांच कराकर लाभ उठाया।

शिविर की अध्यक्षता क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी डा. अशोक कुमार राना ने की। लोनी ब्लॉक के अन्तर्गत रूपल फार्म में इस विशाल चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में रामनिवास यादव, मास्टर जयभगवान ने सहयोग किया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. मनोज यादव व विभागीय नोडल अधिकारी डॉ. कुलदीप राज ने चिकित्सा शिविर का आरम्भ किया। चिकित्सा शिविर में होम्योपैथी विभाग से डॉ. पंकज तयागी व डॉ. नमिता आदि ने भाग लिया। आयुर्वेद विभाग के डॉ. सत्यप्रकाश, डॉ. अल्पिका, डॉ. मेहर आलम (यूनानी चिकित्सक), फार्मासिस्ट शराजपति व योग प्रशिक्षक अंकित त्यागी, सीमा, पूजा, सारिका आदि ने भाग लिया।

इंदिरापुरम में मेदांता लैब का शुभारंभ मुफ्त शिविर में 300 लोगों ने कराई जांच

गाजियाबाद, 4 फरवरी (देशबन्धु)। इंदिरापुरम स्थित अहिंसा खंड-2 के आशियाना ग्रीन मार्केट में मेदांता लैब का शुभारंभ हुआ। यह गाजियाबाद में मेदांता का पहला लैब है। इस अवसर पर मोदी जी के 'स्वस्थ भारत समृद्ध भारत' के तहत फ्री हेल्थ चेकअप कैंप का आयोजन किया गया। इस कैंप में 300 से ज्यादा लोगों ने अपना हेल्थ चेकअप कराया, जिसमें ईसीजी, ब्लड प्रेशर, ब्लड शुगर, पीएफटी आदि की रिपोर्ट भी दी गई। लैब के उद्घाटन अवसर पर राज्यसभा सांसद डॉ. अनिल अग्रवाल और निगम पार्षद डॉ. अनिल तोमर ने भी हेल्थ चेकअप कराया। अनिल अग्रवाल ने कहा कि हमें उम्मीद है यह लैब बेहतर काम करेगा और समय समय पर कैंप लगाकर इलाके के लोगों को स्वास्थ्य लाभ पहुंचाएगा।

इस मौके पर यूनाइटेड हिंदू फ्रंट के राष्ट्रीय अध्यक्ष जय भगवान गोयल, सेंट्रल दिल्ली के एडीएम अतुल पांडेय, गाजियाबाद के पूर्व भाजपा विधायक रूप चौधरी, एक्टिविस्ट डॉ. शान्त्वना श्रीकान्त, ज्ञानवापी याचिकाकर्ता पारुल खेरा, सुप्रीम कोर्ट के

वकील अश्वनि दुबे, टीवी पर्सनॉलिटी श्रीवर्धन त्रिवेदी, एनयूजे के राष्ट्रीय अध्यक्ष रास बिहारी भी मौजूद रहे। इस दौरान मेदांता के डॉक्टरों की टीम ने लोगों को मुफ्त चिकित्सा परामर्श भी दिया। इस अवसर पर मेदांता लैब, इंदिरापुरम की संचालिका ममता श्रीवास्तव ने सभी मेहमानों का शुक्रिया अदा किया।

भारत की आशाओं, आकांक्षाओं व उम्मीदों को पूर्ण करने वाला बजट : वीके सिंह

गाजियाबाद, 4 फरवरी (देशबन्धु)। सांसद व केंद्रीय सड़क परिवहन राजमार्ग एवं नागर विमानन राज्यमंत्री जनरल डॉ. वीके सिंह ने रविवार को प्रेस वार्ता कर बजट की अच्छाइयां गिनाई। उन्होंने बजट को विकसित भारत का सशक्त बजट बताया। अपने राज नगर स्थित आवास पर आयोजित प्रेस वार्ता में वीके सिंह ने कहा कि सांसद आवास पर आयोजित की गई थी। यह बजट भारत की आशाओं, आकांक्षाओं और उम्मीदों को पूर्ण कर नए, आधुनिक और आत्मनिर्भर भारत की कड़ी को मजबूत करता है। हर वर्ग के कल्याण, गरीब के उत्थान और भारत की शान बढ़ाता यह बजट नए भारत के संकल्प को भी मजबूत करता है। इस बजट में सभी वर्गों, सभी क्षेत्रों का ध्यान रखा गया है। सिंह ने कहा क संसद में केंद्रीय वित्तमंत्री सीतारमण ने कहा कि हम 9 करोड़ महिलाओं के साथ 83 लाख स्वयं सहायता समूह सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता के साथ ग्रामीण सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य को बदल रहे हैं।

हमने 60 स्थानों पर जी20 बैठकों के आयोजन की सफलता ने दुनिया के सामने भारत की विविधता प्रस्तुत की है। हमारी आर्थिक ताकत ने देश को व्यापार और सम्मेलन पर्यटन के लिए एक आकर्षक गंतव्य बना दिया है। भारत में अप्रत्यक्ष कर व्यवस्था को एकीकृत करके, जीएसटी ने व्यापार और उद्योग पर अनुपालन बोझ को कम कर दिया है। उद्योग जगत ने जीएसटी के फायदे को स्वीकार किया है। भाजपा की सरकार में 25 करोड़ लोग बहुआयामी गरीबी से बाहर निकले हैं। डीबीटी के जरिए 34 लाख करोड़ रुपए ट्रांसफर किए गए यह लाभ की राशि सीधे लाभार्थियों के खातों में हस्तांतरित इससे सरकार को 2.7 लाख करोड़ रुपए की बचत हुई। कृषि के क्षेत्र में बड़े परिवर्तन हुए हैं। फसल कटाई के बाद की गतिविधियों में प्राइवेट और पब्लिक निवेश को बढ़ावा मिला है, आत्मनिर्भर तिलहन अभियान फसल कटाई के बाद की गतिविधियों में प्राइवेट और पब्लिक निवेश को बढ़ावा, नैनो डीएपी में सभी कृषि जलवायु क्षेत्रों में विभिन्न फसलों पर एप्लीकेशन का विस्तार और डेयरी किसानों की सहायता के लिए एक नया कार्यक्रम शुरू हुआ है। अभी कृषि क्षेत्र में मूल्य संवर्धन और किसानों की आय बढ़ाने के प्रयास तेज किये जाएंगे। पीएम किसान संपदा योजना से 38 लाख किसानों को फायदा हुआ है और 10 लाख रोजगार पैदा हुए हैं। कोविड की चुनौतियों के बावजूद, पीएम आवास योजना ग्रामीण का कार्यान्वयन जारी रहा और हम 3 करोड़ घरों के लक्ष्य को प्राप्त करने के करीब हैं। इसके साथ उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ऐसी आर्थिक नीतियां अपनाएगी जो विकास को बढ़ावा दें और बनाए रखें, समावेशी और सतत विकास को सुविधाजनक बनाना, उत्पादकता में सुधार करना, सभी के लिए अवसर पैदा करना, उनकी क्षमताओं को बढ़ाने में मदद करना और निवेश को बढ़ावा देने और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए संसाधनों के उत्पादन में योगदान देना। इस प्रेस वार्ता में महापौर सुनीता दयाल, महानगर अध्यक्ष संजीव शर्मा, जिलाध्यक्ष सतपाल प्रधान, हापुड़ के जिलाध्यक्ष नरेश तोमर, ज़िला अध्यक्ष पूर्व विधायक कृष्णवीर सिरोही, रूप चौधरी, बलदेव राज शर्मा, जगदीश साधना उपस्थित रहे।

सबका साथ, सबका विकास के अनुरुप है बजट, ग्रेनो वेस्ट के लोगों को जल्द मेट्रो

नोएडा, 4 फरवरी (देशबन्धु)। गौतमबुद्ध नगर लोकसभा सीट से भाजपा के सांसद और पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ. महेश शर्मा ने रविवार को एक प्रेस वार्ता का आयोजन किया। इस दौरान भाजपा सांसद डॉ. महेश शर्मा ने केंद्र की मोदी सरकार और सूबे की योगी सरकार के विकास कार्यों का बखान किया। साथ ही उन्होंने अपने संसदीय क्षेत्र में किए गए कार्यों को लेकर भी बात की। भाजपा सांसद ने ग्रेटर नोएडा वेस्ट में मेट्रो को लेकर कहा कि वहां के लोगों को यातायात की बहुत दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। यहां के लोगों को मेट्रो सेवा की सख्त जरुरत है। ग्रेनो वेस्ट में मेट्रो सेवा को लेकर केंद्रीय मंत्री डॉ. हरदीप सिंह पुरी से मुलाकात भी की है। ग्रेटर नोएडा वेस्ट में मेट्रो जल्द दौड़े केंद्र और यूपी की डबल इंजन सरकार भी यही चाहती है।

भाजपा सांसद डॉ. शर्मा ने मोदी सरकार के अंतरिम बजट को लेकर कहा कि यह बजट पिछले वर्ष के आधार पर बनाया गया है। मोदी सरकार के 'सबका साथ, सबका विकास' के आदर्श वाक्य के अनुरूप, गरीब, युवा, अन्नदाता को शामिल करता है। इस बजट में भारत के जी-20 की अध्यक्षता के वर्ष के दौरान मोदी सरकार द्वारा किए गए

कार्यों की रेखांकित किया गया। जिसमें प्रकृति, आधुनिक आधारभूत संरचना और सभी के लिए समान अवसरों के साथ समृद्ध भारत के दृष्टिकोण को प्राप्त करते हुए भारत को दुनिया भर में विश्वगुरु के रूप में पेश किया गया। डॉ. शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निरंतर और दीर्घकालिक विकास के दृष्टिकोण के अनुरुप, वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए महत्वपूर्ण परियोजनाओं पर खर्च का बजट बढ़ाकर 11,11,111 करोड़ कर दिया गया है। जो देश के सकल घरेलु उत्पाद का 3.4 प्रतिशत है।

बुनियादी ढांचे का विकास

उन्होंने बताया कि मोदी सरकार ने देश की आर्थिक वृद्धि को बढ़ाने के लिए बड़े पैमाने पर मजबूत बुनियादी ढांचे का निर्माण किया है। इस प्रयास का एक उल्लेखनीय उदाहरण हवाई अड्डों की संख्या में पर्याप्त वृद्धि है। जो अब 149 तक पहुंच गई है। इसके अलावा, बजट में नमो ईंडिया के तत्वावधान में शहरी परिवर्तन के प्रमुख इंजन के रूप में मेट्रो रेल की कल्पना की गई है। जबकि लॉजिस्टिक्स दक्षता में सुधार और लॉजिस्टिक्स की लागत को कम करने के लिए प्रधानमंत्री-गति शक्ति के अंतर्गत तीन प्रमुख रेलवे कॉरिडोर भी प्रस्तावित किए गए हैं।

अन्नदाता का सर्व समावेशी विकास और कल्याण

मोदी सरकार के पिछले एक दशक के कार्यकाल में निरंतर यह सुनिश्चित करने के प्रयास किए गए हैं, कि किसान देश के विकास के केंद्र बिंदु पर बने रहे। इसके अतिरिक्त इलेक्ट्रॉनिक राष्ट्रीय कृषि बाजार द्वारा 1,361 मंडियों को एकीकृत किया गया है, और 1.8 करोड़ किसानों को 13 लाख करोड़ व्यापार क्षमताओं के साथ सेवाएं प्रदान कर रहा है। मत्स्य पालन के लिए मोदी सरकार के द्वारा एक पृथक विभाग का निर्माण किया गया।

'पंचामृत' लक्ष्यों को पूरा करने की ओर अग्रसर

डॉ. शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2021 में कॉप-26 शिखर सम्मेलन में 'पंचामृत' का लक्ष्य रखा था। भारत ने नवीकरणीय ऊर्जा के द्वारा 50त्न स्थापित ऊर्जा क्षमता को प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया था। जिसमें से वर्तमान में 43.9त्न लक्ष्य प्राप्त किया जा चुका है। पंचामृत के दृष्टिकोण को लागू करते हुए अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा सूर्योदय योजना की शुरुआत की गई। जिसके अंतर्गत प्रति माह 300 यूनिट नि:शुल्क बिजली प्राप्ति के लक्ष्य हेतु 1 करोड़ घरों को छत आधारित सोलर पैनल प्रदान किए जाएंगे। इससे प्रति वर्ष प्रत्येक घर को 12 से 18 हजार की बचत होगी।

कैपिटल ज़ोन

उवाच

आज वर्ल्ड कैंसर दिवस के अवसर पर इस बीमारी के प्रति लोगों को जागरूक करने और खुद के स्वास्थ्य के प्रति लोगों को सजग रखने के उद्देश्य से इस कैंप का आयोजन किया गया था। समय-समय पर जांच और सही इलाज से कैंसर जैसी बीमारी को हराया जा सकता है, जरुरत है सजग रहने की, आगे भी हम जनहित में इस तरह के प्रयास करते रहेंगे।
डॉ. सारिका बंसल, मेडिकल ऑन्कोलॉजी कंसल्टेंट फोर्टिस हॉस्पिटल ग्रेटर नोएडा

यीडा ला रहा होटल, पेट्रोल पंप और दुकान के लिए भूखंड की योजना

ग्रेटर नोएडा, 4 फरवरी (देशबन्धु)। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के पास होटल, दुकान और पेट्रोल पंप में निवेश करने वालों के लिए खुशखबरी है। यमुना एक्सप्रेस वे औद्योगिक प्राधिकरण दुकान, पेट्रोल पंप और होटल के भूखंड की योजना लांच करेगा। इससे ना केवल निवेश आएगा बल्कि रोजगार के अवसर भी मिलेंगे। प्राधिकरण योजना लांच करने की तैयारी में जुटा है।

यमुना प्राधिकरण ने होटल, पेट्रोल पंप, व्यवसायिक भूखंड और दुकानों की योजना निकालेगा। प्राधिकरण ने सेक्टर-18, 20 और 22 डी में पेट्रोल पंप के भूखंड की योजना निकालेगा। ये भूखंड 1600 से 1665 वर्ग मीटर के हैं। इसमें डीजल, पेट्रोल, सीएनजी और इलेक्ट्रिक चार्जिंग स्टेशन की सुविधा मिलेगी। प्राधिकरण ने कामर्शियल फुटप्रिंट्स प्लॉट की भी योजना निकालेगा। फुटप्रिंट प्लॉट में 100 प्रतिशत ग्राउंड एरिया कवर करने की छूट मिलती है। यह सभी प्लाट सेक्टर 22 ए में हैं। ये प्लॉट 112 वर्ग मीटर से लेकर 140 वर्ग मीटर तक के हैं। इनकी संख्या 80 है। इसके अलावा प्राधिकरण होटल के तीन प्लाट की योजना निकलेगा। ये प्लाट सेक्टर-28 में यमुना एक्सप्रेस वे के किनारे हैं। इसके अलावा व्यवसायिक भूखंडों की योजना आएगी। इसमें 12 भूखंड होंगे। निवेशकों बनी हुई दुकानों को खरीदने का भी मौका मिलेगा। इस योजना में 11 दुकानों होंगी। ये दुकान सेक्टर-22 डी में हैं। यमुना प्राधिकरण इन योजनाओं आवंटन नीलामी के जरिये करेगा।

इस प्राधिकरण होटल, दुकान और पेट्रोल पंप के लिए भूखंड की योजना लाएगा। भूखंड़ों का आवंटन नीलामी के जरिए किए जाएंगे। योजना लाने से प्राधिकरण क्षेत्र के निवेश के साथ रोजगार के रास्ते खुलेंगे।
डॉ. अरूणवीर सिंह, मुख्य कार्यपालक अधिकारी यमुना एक्सप्रेस वे औद्योगिक विकास प्राधिकरण

- **योजना लाने से यमुना प्राधिकरण क्षेत्र में निवेश के साथ बढ़ेंगे रोजगार के अवसर**
- **नीलामी के जरिए किया जाएगा भूखंड़ों का आवंटन**

एयरपोर्ट के पास योगी शिव की 242 फीट ऊंची प्रतिमा लगाने की मिली अनुमति

ग्रेटर नोएडा, 4 फरवरी (देशबन्धु)। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट जेवर के पास सेक्टर-23डी में ईशा फाउंडेशन द्वारा योग आश्रम विकसित किए जाने की तैयारी चल रही है। इसके लिए प्राधिकरण से 200 एकड़ जमीन मांगी है। यहां आदि योगी शिव की 242 फीट ऊंची प्रतिमा स्थापित की जाएगी। यह दुनिया की सबसे ऊंची आदि शिव की प्रतिमा होगी। नागरिक उड्डयन मंत्रालय से इसकी सैद्धांतिक सहमति मिल गई है।

ईशा फाउंडेशन के संस्थापक सद्गुरू जग्गी वासुदेव यीडा सिटी में नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के पास आश्रम बनाना चाह रहे हैं। योग व आध्यात्म पर आधारित इस आश्रम में आदि योगी शिव की 242 फीट ऊंची प्रतिमा लगाई जाएगी है। एयरपोर्ट के नजदीक होने की वजह से यह काम आसान नहीं है। बताया जाता है कि कई माह के प्रयास के बाद आश्रम में आदि योगी शिव की प्रतिमा लगाने की सैद्धांतिक सहमति नागरिक उड्डयन मंत्रालय से मिल चुकी है। प्राधिकरण ने इसके लिए 200 एकड़ जमीन सेक्टर- 23डी में चिन्हित कर ली गई है। यह सेक्टर एयरपोर्ट के पास स्थित है।

प्राधिकरण अधिकारियों का कहना है कि संस्था द्वारा जमीन के लिए आवेदन करने पर आगे की प्रक्रिया शुरू की जाएगी। बता दें कि तमिलनाडु के कोयम्बटूर स्थित ईशा योग परिसर में योगी आदि शिव की सबसे ऊंची 112 फीट की मूर्ति स्थापित है।

- **ईशा फाउंडेशन के संस्थापक सद्गुरू को नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने प्रतिमा लगाने की दी सैद्धांतिक सहमति**
- **सद्गुरू जग्गी वासदेव नोएडा एयरपोर्ट के पास 200 एकड़ में बनाना चाहते है आश्रम**

भूमि अधिग्रहण से प्रभावित ग्रामीणों की वनवारीवास में होने वाली पंचायत मौसम की वजह से स्थगित

जेवर, 4 फरवरी (देशबन्धु)। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के विस्तारीकरण के लिए चल रही भूमि अधिग्रहण से प्रभावित 14 गांव के किसानों द्वारा अधिग्रहण व विस्थापन के विरोध में प्रत्येक रविवार को की जाने वाली पंचायत खराब मौसम के चलते स्थगित कर दी गई। रविवार को वनवारीवास गांव में होने वाली पंचायत अगामी रविवार को आयोजित की जाएगी।

ज्ञात हो कि नोएडा इंटरनेशनल के विस्तारीकरण के लिए प्रशासन द्वारा 14 गांव रोही, पारोही, बंकापुर, दयानतपुर, साबौता मुस्तफाबाद, शिवारा, किशोरपुर, वनवारीवास, जेवर बांगर, चौरोली, रामनेर, खाजपुर, थोरा व नीमका गांव की 2053हे0 भूमि के अधिग्रहण व 6गांव के विस्थापन की प्रक्रिया की जा रही है। जिसके विरोध में ग्रामीणों द्वारा प्रभावित प्रत्येक गांव में सिलसिलेवार पंचायत का आयोजन कर विरोध प्रदर्शन किया जाता है। निर्धारित कार्यक्रम के तहत रविवार को वनवारीवास गांव में पंचायत का आयोजन किया जाना था। ग्रामीणों ने बताया कि खराब मौसम व बूंदाबांदी की वजह से पंचायत को स्थगित कर दिया गया है तथा आगामी रविवार को वनवारीवास में ही पंचायत का आयोजन कर विरोध प्रदर्शन किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि जनसुनवाई में किसानों के विरोध के बावजूद भी प्रशासन द्वारा मनमानी ढंग से अधिग्रहण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जा रहा है। जबकि ग्रामीणों द्वारा जनसुनवाई के दौरान लिखित रूप से प्रशासन के समक्ष भूमि अधिग्रहण व विस्थापन का विरोध किया था। जिससे किसानों में आक्रोश व्याप्त है। आगामी रविवार को होने वाली पंचायत में किसानों द्वारा आगे की रूपरेखा तैयार की जाएगी।

मेट्रो की मांग को लेकर ग्रेनो वेस्ट में विरोध प्रदर्शन

ग्रेटर नोएडा, 4 फरवरी (देशबन्धु)। ग्रेनो वेस्ट के निवासियों का मेट्रो की मांग पर प्रदर्शन लगातार जारी है। बड़ी संख्या में निवासी एक मूर्ति पर जुटे और सवाल उठाया कि आखिर ग्रेटर नोएडा वेस्ट की इतनी अनदेखी क्यों। नोएडा, ग्रेटर नोएडा में सार्वजनिक परिवहन की तमाम सुविधाएं, लेकिन ग्रेटर नोएडा वेस्ट में कुछ भी नहीं।

आंदोलन में अहम भूमिका निभा रहे दीपांकर कुमार, राजकुमार, रोहित मिश्रा, आरसी भट्ट, अशोक श्रीवास्तव, अनिल रात्रा, अनुराग खरे ने कहा है कि मेट्रो के नाम पर सिर्फ ग्रेटर नोएडा वेस्ट में वोट लिया जाता है और फ्लैट बेचे जाते हैं, लेकिन मेट्रो का अभी तक कोई अता-पता नहीं है। इसलिए अब कार-बाइक रैली निकालेंगे और फिर जंतर-मंतर पर दोबारा धरना देने जाएंगे। लगातार मेट्रो को लेकर आंदोलन में शामिल हो रहे सीवी सिंह, सुधांशु किशोर, गंगेश कुमार, हिमांशु प्रकाश, अनुप दुबे, विपिन प्रसाद, सीपी शर्मा, कुंदन श्रीवास्तव, रवींद्र सिन्हा, राकेश रुहेला, नवीन राठौड़, रंजना सिंह, शैलेश कुमार सिंह, योगेश श्रीवास्तव, एलडी शर्मा, बीबी बलेचा ने कहा है कि पीछे हटने का सवाल ही नहीं है। मेट्रो हमारा अधिकार है और हमें जल्द से जल्द मेट्रो मिलनी चाहिए। सभी लोगों ने एक स्वर में कार-बाइक रैली और जंतर-मंतर पर विरोध प्रदर्शन पर अपनी सहमति दी है।

- **मांगों पर अमल नहीं किया गया तो कार-बाइक रैली निकालकर करेंगे प्रदर्शन**

एनसीसी गर्ल्स बटालियन के लिए ए सर्टिफिकेट परीक्षा का हुआ आयोजन

ग्रेटर नोएडा, 4 फरवरी (देशबन्धु)। 31वीं यूपी गर्ल्स बटालियन एनसीसी ने रविवार को जीएल बजाज कॉलेज के प्रांगण में 'ए' सर्टिफिकेट परीक्षा आयोजित की। इस सर्टिफिकेट परीक्षा में कुल 337 कैडेट परीक्षा के लिए उपस्थित हुए, जिसमें लिखित और प्रैक्टिकल के साथ कैडेट की थियोरिटीकल स्किल का आकलन भी किया गया। लिखित परीक्षा के अलावा ऑल मैप रीडिंग, ड्रिल, हथियार प्रशिक्षण के लिए प्रैक्टिकल भी आयोजित किए गए। कार्यवाहक कमांडिंग ऑफिसर मेजर प्रतिमा नागर ने कैडेट्स के साथ व्यवहारिक ज्ञान को साझा किया और परीक्षा के सुचारू संचालन के लिए जरुरी निर्देश दिए। परीक्षा का समन्वय (एसएम) महावीर सिंह के निर्देशन में ऐएनओ अधिकारी, पीआई और सिविल स्टॉफ ने किया। जीएल बजाज कॉलेज के निदेशक डॉ. मानस कुमार मिश्रा ने परीक्षा के सफल आयोजन के लिए समस्त स्टॉफ और कैडेट्स को बधाई दी। इस दौरान कॉलेज के डीन स्टूडेंट वैलफेयर प्रो. एमएस नरुका और अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

विश्व कैंसर दिवस पर नि:शुल्क कैंसर स्क्रीनिंग शिविर आयोजित

ग्रेटर नोएडा, 4 फरवरी (देशबन्धु)। विश्व कैंसर दिवस के अवसर पर रविवार को फोर्टिस हॉस्पिटल ग्रेटर नोएडा में नि:शुल्क कैंसर स्क्रीनिंग शिविर लगाया गया। जिसमें लगभग 80 लोगों ने अपनी जांच कराई और ऑन्कोलॉजिस्ट और गायनेकोलॉजिस्ट से नि:शुल्क परामर्श का लाभ भी लिया। इस अवसर पर फोर्टिस हॉस्पिटल ग्रेटर नोएडा में मेडिकल ऑन्कोलॉजी की कंसल्टेंट डॉ. सारिका बंसल ने कहा कि आज वर्ल्ड कैंसर दिवस के अवसर पर इस बीमारी के प्रति लोगों को जागरूक करने और खुद के स्वास्थ्य के प्रति लोगों को सजग रखने के उद्देश्य से इस कैंप का आयोजन किया गया था। समय-समय पर जांच और सही इलाज से कैंसर जैसी बीमारी को हराया जा सकता है, जरुरत है सजग रहने की, आगे भी हम जनहित में इस तरह के प्रयास करते रहेंगे। इसके अलावा कई लोगों ने शिविर में कैंसर की जांच के लिए रियायती पैकेज का भी लाभ उठाया, जिसमें पुरुष के लिए यूएसजी-एब्डोमेन का अल्ट्रासाउंड/केयूबी, सीबीसी, पीएसए और ऑन्कोलॉजिस्ट से परामर्श शामिल था, वहीं महिलाओं के लिए पैकेज में यूएसजी-एब्डोमेन का अल्ट्रासाउंड, सीबीसी, सीए-125, ब्रेस्ट जांच और अल्ट्रासाउंड, ऑन्कोलॉजिस्ट और गायनेकोलॉजिस्ट से परामर्श शामिल था।

समय-समय पर जांच और सही इलाज से कैंसर को रोकना है संभव

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में ग्रेड्स के बच्चों ने लिया हिस्सा

ग्रेटर नोएडा, 4 फरवरी (देशबन्धु)। ग्रैड्स इंटरनेशनल स्कूल ईटा-2, ग्रेटर नोएडा और डिवाइन मदर इंटरनेशनल स्कूल खुर्जा को हाल ही में इंडिया हैबिटेट सेंटर में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन और पीओपी उत्सव में भाग लेने का अवसर मिला। ग्रैड्स इंटरनेशनल स्कूल से विज्ञान परियोजना समन्वयक श्रुति द्विवेदी, अन्वेषण क्लब प्रभारी अलका सिंह, खेल विज्ञान शिक्षक मयंक खारी और डिवाइन मदर इंटरनेशनल स्कूल से सोनू, शिवानी, रमाकांत सहित कक्षा छह से नौ तक के छात्रों ने सम्मेलन में भाग लिया।<

पीओपी (प्रोटेक्ट आयर प्लैनेट) आंदोलन की स्थापना 2016 में पृथ्वी दिवस पर स्वर्गीय डॉ. आर.के.पचौरी द्वारा की गई थी। डॉ. पचौरी 2007 में अंतर सरकारी पैनल (आईपीसीसी) की ओर से जलवायु परिवर्तन पर काम करते के लिए नोबेल शांति पुरस्कार स्वीकार किया।

उनके बेटे, डॉ. ऐश पचौरी अब पीओपी का नेतृत्व करते हैं। महोत्सव में सम्मेलन के 6 सत्र, 2 कार्यशालाएं, 38 देश, 41 भागीदार, 30 युवा वक्ता और 56 प्रतिनिधियों थे, जिन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया।

महामहिम बान-की-मून जैसे यूएनओ के कई नेताओं और मानवाधिकार कार्यकर्ता, नोबेल शांति पुरस्कार (2014) विजेता कैलाश सत्यार्थी सहित यूएनडीपी के अन्य नेताओं ने भी ऑनलाइन माध्यम से भाग लिया। प्रथम ऑस्ट्रेलियाई नोबेल शांति पुरस्कार विजेता न्यूरोसर्जन डॉ. रूथ मिशेल की उपस्थिति समारोह में चार चांद लगा दी थी। यह वास्तव में छात्रों और शिक्षकों के लिए सीखने का एक उत्कृष्ट अनुभव था। ग्रैड्स इंटरनेशनल स्कूल की प्रधानाचार्य अदिति बासु रॉय और डिवाइन मदर इंटरनेशनल स्कूल की प्रधानाचार्य गुंजन अत्री को शाम को हाई प्रोफाइल पुरस्कार समारोह में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया था। ग्रैड्स इंटरनेशनल स्कूल ग्रेटर नोएडा के प्रधानाचार्य और द डिवाइन मदर इंटरनेशनल स्कूल, खुर्जा के प्रधानाचार्य को दुनिया के विभिन्न देशों के राजदूतों और वैश्विक जलवायु कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में जलवायु कार्रवाई में स्कूलों की सक्रिय भागीदारी के लिए डॉ. एश पचौरी और डॉ. सरोज पचौरी से पुरस्कार मिला।

पत्र नहीं मित्र
देशबन्धु
पश्चिमी उत्तर प्रदेश ब्यूरो कार्यालय
209 कृष्णा अपरा प्लाजा अल्फा कॉमर्शियल बेल्ट, ग्रेटर नोएडा
समाचार, विज्ञापन एवं प्रसार के लिए संम्पर्क करें
खोया-पाया/ सूचना/ नाम परिवर्तन/ आवश्यकता
फोनः- 0120-4270009

पत्र नहीं मित्र
देशबन्धु
समाचार, विज्ञापन एवं प्रसार के संपर्क करें
क्षेत्रिय कार्यालय रबुपुरा
Mob: 9411492655

Shiv Mahima Enterprises
सभी प्रकार के विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें
नाम परिवर्तन, खोया पाया, सूचना, अवश्यकता
Mob.: 9910280173
Off.-221, 2nd Floor, Meridian View Plaza, Alpha Comm. Belt, Gr. Noida

इनर व्हील क्लब ऑफ नवीन ने किया कन्या विवाह में योगदान

ग्रेटर नोएडा, 4 फरवरी (देशबन्धु)। इनर व्हील क्लब ऑफ नवीन ग्रेटर नोएडा ने आर्थिक रूप से कमजोर परिवार को बेटियों की शादी हेतु दी सहायता। प्रोजेक्ट चेयरपर्सन सुनीता गर्ग ने बताया कि इस माह में क्लब ने चार लड़कियों के परिवार को शादी में आर्थिक एवं सामग्री प्रदान कर सहयोग दिया। सभी क्लब सदस्यों ने मिलकर कम्बल, रजाई, रसोई घर के लिए मशीनें मिक्सी, कुकर, सलाई मशीन, वस्त्र आदि प्रदान कर योगदान किया। अध्यक्ष अनीता सिंगला ने बताया की क्लब का प्रयास है कि नवविवाहित जोड़े अपने जीवन में सुखी रहे एवं उन्हें गृहस्थ जीवन में मदद दें। क्लब सदस्य मोनिका दुआ, डॉ. मधुशी वर्मा, डॉ. अदिति भरद्वाज, भर्ती खत्री, डॉ. श्रीवास्तव, गरिंमा ने महत्वपूर्ण योगदान किया।

कुत्ते के बच्चे को ऊंचाई से फेंकने पर नाबालिग पर मुकदमा दर्ज

ग्रेटर नोएडा, 4 फरवरी (देशबन्धु)। बिसरख कोतवाली क्षेत्र के गौर सिटी 14वीं एवेन्यू में कुत्ते के पिल्ले के साथ हुई हैवानियत के मामले में पुलिस ने कड़ा दकम उठाया है। कुत्ते के बच्चे को उठा कर ऊंचाई से फेंकने वाले 10 साल के बच्चे पर अब मुकदमा दर्ज किया गया है। कुत्ते के बच्चे के साथ इस हैवानियत का वीडियो वायरल होने के बाद एक गैर सरकारी संस्था पीपल फार एनिमल (पीएफए) के एक सदस्य ने 9-10 साल के बच्चे पर एफआईआर दर्ज कराया है। इस एफआईआर में कहा गया है कि इस पूरी घटना को रिकॉर्ड किया गया था और सोसायटी के ग्रुप में इसे सर्कुलेट किया गया। इसके अलावा सोशल मीडिया पर इसे रील बनाकर भी शेयर किया गया और दूसरे को भी ऐसा करने के लिए उकसाया गया। एफआईआर में कहा गया है कि वीडियो क्लिप में नजर आ रहा लड़का एक वयस्क की देखरेख में करीब 4 महीने के कुत्ते के बच्चे को बेरहमी से पहले उठाता है। कुत्ते का यह बच्चा अपने अन्य भाई-बहनों के साथ झाड़ी में छिपा हुआ था।

लड़का इस बच्चे को सड़क की तरफ ले जाता है। इस दौरान यह कुत्ते का बच्चा चिल्लाता है और बच्चे की पकड़ से छूटने की कोशिश करता है। हताश होकर रो रहे इस कुत्ते के बच्चे की चीख सुनकर भी लड़का नहीं रूकता और उसे ऊंचाई से नीचे फैंक देता है। जिसकी वजह से उसकी मौत हो जाती है। एफआईआर में मांग की गई है कि लड़के को जुवेनाइल कोर्ट के समक्ष प्रस्तुत किया जाए और उसकी मानसिक स्थिति की भी जांच की जाए।

जिम्स में एसएनसीयू की एनएनएफ मान्यता के लिए टीम ने किया निरीक्षण

ग्रेटर नोएडा, 4 फरवरी (देशबन्धु)। राजकीय आयुर्विज्ञान संस्थान के बाल रोग और नवजात विज्ञान विभाग बीमार और कमजोर नवजात शिशुओं को गुणवत्तापूर्ण और स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एनएचएम, भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित 12 बिस्तरों वाली बीमार नवजात देखभाल इकाई (एसएनसीयू) की स्थापना के बाद से गुणवत्तापूर्ण नवजात सेवाएं प्रदान करने में एक लंबा सफर तय किया है। जिम्स ने आधिकारिक निकाय नेशनल नियोनेटोलॉजी फोरम ऑफ इंडिया (एनएनएफ) एनआईसीयू मान्यता के लिए आवेदन किया है। रविवार को सुविधाओं के निरीक्षकों ने सुविधा की जांच के लिए किया और अपने बहुमूल्य इनपुट प्रदान किए, दस्तावेजों की जांच की और नवजात देखभाल की गुणवत्ता का आकलन किया। मूल्यांकनकर्ता डॉ. सुरेंद्र सिंह बिष्ट, सचिव एनएनएफ, डॉ. गोपाल अग्रवाल और डॉ. शेखर विश्वास थे। डॉ. (ब्रिगेडियर) राकेश गुप्ता, निदेशक जीआईएमएस और डॉ. अनीता कुमारी, प्रोफेसर और एचओडी बाल रोग विभाग, जीआईएमएस के मार्गदर्शन में, डॉ. सुजया मुखोपाध्याय, सहायक प्रोफेसर बाल रोग और डॉ. रुचिका भटनागर, एसोसिएट प्रोफेसर, बाल रोग विभाग ने निरीक्षण की सुविधा प्रदान की, इस दौरान डॉ. राजजीव कुमार, डॉ. मीतू सिंह व डॉ. संजू यादव भी मौजूद थे। नेशनल नियोनेटोलॉजी फोरम ऑफइंडिया (एनएनएफ) ने नवजात गहन देखभाल इकाइयों (एनआईसीयू) की मान्यता कमजोर नवजात शिशुओं के लिए देखभाल के उच्चतम मानकों को सुनिश्चित करने में सर्वोपरि महत्व रखती है।

एनएनएफ, नवजात शिशु स्वास्थ्य देखभाल के लिए समर्पित एक प्रमुख संगठन के रूप में, देश भर में एनआईसीयू प्रथाओं के लिए दिशा निर्देश और मानक स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एनएनएफ द्वारा प्रत्यायन बुनियादी ढांचे, चिकित्सा प्रोटोकॉल और स्वास्थ्य देखभाल प्रथाओं को शामिल करते हुए कठोर गुणवत्ता मानकों के पालन का प्रतीक है।

संपादकीय

नई दिल्ली, सोमवार 5 फरवरी 2024

संस्थापक-सम्पादक : स्व. माणाराम सुरजन

भाजपा में कर्पूरी बनाम आडवाणी का द्वंद्व

गणतंत्र दिवस के दो दिन पूर्व पहले बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर को देश का सर्वोच्च अलंकरण 'भारत रत्न' (मरणोपरान्त) प्रदान करने के पखवाड़े के भीतर ही भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी को भी इसी पुरस्कार से नवाजा जाना जहां एक ओर भाजपा की केन्द्र सरकार द्वारा पुरस्कार के राजनैतिक दुरुपयोग की ओर इशारा करता है, वहीं पार्टी व सरकार की वैचारिक विसंगति की भी पोल खोलता है। दो विपरीत ध्रुवों पर खड़े व्यक्तियों को बहुत थोड़े अंतराल में पुरस्कृत करना बताता है कि भाजपा तेजी से खोती अपनी जमीन को पाने के लिये ऐसी बदहवास है कि उसे सूझ नहीं रहा है कि वह कहां जाये। कह सकते हैं कि दो भारत रत्नों के बीच भाजपा फंसी हुई है और बाहर निकलने के लिये वह जिस प्रकार से हाथ-पैर मार रही है, उससे उसकी स्थिति न केवल हास्यास्पद हो रही है बल्कि उसका वैचारिक खोखलापन भी उजागर हो रहा है।

इन दो लोगों को अलंकरण दिये जाने के पीछे अपनी वजहें और उद्देश्य हैं। कर्पूरी ठाकुर को भारत रत्न दिये जाने पर चर्चा करें तो साफ है कि हाल के दिनों में भारतीय राजनीति में सामाजिक न्याय का जो विमर्श बड़ी जगह बना रहा है, उससे भाजपा का चिंतित होना लाजिमी है। सामाजिक न्याय में समतामूलक समाज की अवधारणा अंतर्गुम्फित है जिसके जरिये संसाधनों एवं अवसरों में सभी वर्गों व समुदायों की न केवल समान भागीदारी की कल्पना है बल्कि अनुपात के अनुसार यह होनी ज़रूरी बताई गई है। कर्पूरी ठाकुर उन लोगों में से हैं जिन्होंने काफी पहले इसके पक्ष में आवाज उठाई थी। पहली बार दिसम्बर 1970 से जून 1971 तक एवं दूसरी बार जून 1977 से अप्रैल, 1979 तक बिहार के सीएम रहने के दौरान उन्होंने पिछड़ों एवं अति पिछड़ों को उनका वाजिब हक दिलाया था। उनका लोकप्रिय नारा था- 'सौ में नब्बे शोषित हैं, शोषितों ने ललकारा है। धन, धरती और राजपाट में नब्बे भाग हमारा है।।' उनके काम की शैली इस प्रकार थी कि उनके द्वारा वंचितों को उनका हक देने के बावजूद बिहार में सामाजिक वैमनस्यता पनप नहीं पाई थी और अन्य वर्गों ने भी इस व्यवस्था की आवश्यकता को स्वीकार किया था।

इसके विपरीत भाजपा के सपनों का ऐसा समाज है जिसमें सभी शक्तियों के केन्द्रीयकरण की बात कही जाती है- सारी राजनैतिक ताकत उसके हाथों में हो, सभी कारोबार चंद लोगों के द्वारा संचालित किये जायें एवं सामाजिक आधिपत्य समाज के उच्च वर्गों का ही हो। निचले तबकों का न तो सशक्त राजनैतिक प्रतिनिधित्व हो, न ही वे आर्थिक रूप से सम्पन्न हों और जहां तक उनकी सामाजिक स्थिति की बात है तो वे दोयम दर्जे के समझे जायें। यह मनुवादी सामाजिक व्यवस्था है जिसमें भाजपा एवं उसकी मातृसंस्था राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को विश्वास है। वह तो भारतीय संविधान को खारिज कर मनुस्मृति को लागू करना चाहती है। इसी दिशा में उसके बढ़ने के प्रयास हैं।

सवाल यह है कि ऐसी विचारधारा के चलते आखिर क्योंकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पहले कर्पूरी ठाकुर एवं अब आडवाणी को भारत रत्न देना पड़ा। अगर कोई यह सोचता है कि उन्होंने ऐसा इन दोनों के प्रति सम्मानस्वरूप किया है, तो उसे इस गलतफहमी को निकाल देना चाहिये। कर्पूरी को दिया पुरस्कार इस पार्श्वभूमि पर है कि पिछले कुछ समय से राहुल गांधी बड़े जोर-शोर से जातिगत जनगणना की बात कर रहे हैं और इस बात की वकालत कर रहे हैं कि देश में जिस वर्ग की जितनी आबादी है उसे सत्ता व नौकरियों में उतनी भागीदारी मिलनी चाहिये। कोरोना के चलते 2021 में देश में जनगणना नहीं हो पाई थी और केन्द्र सरकार इसे कराने का इरादा भी नहीं रखती क्योंकि इसके कारण वस्तुस्थिति सामने आ जायेगी। राहुल बता रहे हैं कि देश में सबसे ज्यादा जनसंख्या पिछड़े व अति पिछड़ों की है। तत्पश्चात दलित (एससी) व आदिवासियों की है। इसी अनुपात में लोगों की भागीदारी होनी चाहिये। वे बतलाते रहे हैं कि सचिव स्तर के 90 अधिकारियों में केवल 3 ही ओबीसी हैं और देश के सिर्फ 5 प्रतिशत बजट पर ही उनका नियंत्रण है। राहुल गांधी की फिलहाल जारी 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' इसलिये लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर रही है क्योंकि लोगों को इसका महत्व अब समझ में आ रहा है। जब कर्पूरी को इस पुरस्कार का ऐलान हुआ तब राहुल की यात्रा बिहार प्रवेश करने के नज़दीक थी तथा वहां के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से पाला बदलवाने की तैयारी भाजपा कर चुकी थी। नीतीश संयुक्त विपक्षी गठबन्धन इंडिया से तो छिटके परन्तु वे सामाजिक न्याय के चेहरे न रहें तथा राहुल के हाथ से भी वह मुद्दा छिन जाये- इन्हीं उद्देश्यों से पहला भारत रत्न दिया गया था। यह अलग बात है कि नीतीश को तो भाजपा ने निशस्त्र कर दिया परन्तु अब उसके (सामाजिक न्याय के) एकमात्र झंडाबरदार राहुल बन गये हैं।

इसके साथ ही राममंदिर का मसला भाजपा व नरेंद्र मोदी को वैसा डिविडेंड देता अब नज़र नहीं आ रहा जिसकी उम्मीद थी। साथ ही, राममंदिर के उद्घाटन समारोह में आमंत्रण देकर भी श्री आडवाणी को आने से रोकना लोगों को इसलिये पसंद नहीं आया क्योंकि राममंदिर आंदोलन का पुरोधा पार्टी के वयोवृद्ध नेता को ही माना जाता है। मंदिर उद्घाटन समारोह में सारी आभा को श्री मोदी द्वारा लूट लिये जाने को भी यकीनन भाजपा के हार्डकोर काडर ने सख्त नापसंद किया होगा। नरेंद्र मोदी की आलोचना हुई, सो अलग। सो, पहले कर्पूरी ठाकुर और अब लालकृष्ण आडवाणी को भारत रत्न देना भाजपा के अंतर्द्वन्द्व एवं ऊहापोह को ही दर्शाता है।

पीडीए और इंडिया का एक होकर लड़ना यूपी में बाजी पलट देगा?

अखिलेश यादव जब यह कहते हैं कि हमारा घर गंगाजल से धुलवाया गया तो केवल यादवों में नहीं सभी पिछड़ों और दलितों में प्रतिक्रिया होती है। यादव पिछड़ों में सबसे समर्थ जाति लेकिन अगर उसे भी अपवित्र समझा जाता है तो बाकी जातियां खुद समझ जाती हैं कि उन्हें क्या समझा जा रहा है!

अखिलेश इस लोकसभा चुनाव में नई रणनीति के साथ आ रहे हैं। उनका सारा जोर पीडीए पर है। पीडीए मतलब। पी यानि पिछड़ा, डी यानि दलित और ए मतलब अल्पसंख्यक। अखिलेश इस सामाजिक समीकरण के जरिए यूपी में भाजपा को चुनौती दे रहे हैं।

फिलहाल उनके जो तेवर हैं उसने भाजपा को मुश्किल में डाल दिया है। इस तरह का पहला जातीय समीकरण चौधरी चरण सिंह ने बनाया था। अजगर। अहीर जाट गुजर और राजपूत। सभी कृषि पर निर्भर रहने वाली सामाजिक रूप से शक्तिशाली जातियां। चरण सिंह की सफलता में इन्हीं जातियों का योगदान महत्वपूर्ण रहा। बाद में इसी तरह लालू यादव ने माई (एमवाई) समीकरण बनाया। मुसलमान-यादव। यह बिहार में बहुत सफल रहा और लालू की सफलता का मुख्य कारक रहा।

अब यूपी में अखिलेश का नया प्रयोग कितना कामयाब होता है यह सामाजिक समीकरणों के अलावा और कई बातों पर निर्भर करेगा। चरण सिंह और लालू यादव के समय धर्म की राजनीति नहीं थी और न ही कोई बड़ा दलित नेता था।

आज की तारीख में इन नए फैक्टरों का तोड़ अखिलेश कैसे निकालते हैं यह देखना होगा। धर्म की राजनीति का प्रभाव यह है कि 2012 तक जिसमें जीत कर वे मुख्यमंत्री बने थे उनका समुदाय यादव पूरी तरह उनके साथ था। मगर अब उसका एक हिस्सा भाजपा की तरफ झुकाव रखने लगा है। दूसरा दलित मायावती से तो टूटा है। मगर वह भी आर्थिक-सामाजिक आरक्षण जैसे मुद्दों पर कम ध्यान देकर धर्म के नाम पर भाजपा की तरफ झुकाव दिखाता है।

अखिलेश के लिए पीडीए के पहले दो पी और डी को अपनी तरफ खिंचना ही मुख्य चुनौती है। ए तो मतलब अल्पसंख्यक अभी सपा के साथ बना हुआ है। और जब सपा कांग्रेस और जयंत चौधरी साथ मिलकर लड़ेंगे जैसा अभी संभावना है तो मुसलमान उन्हीं के साथ रहेगा। मायावती और ओवैसी कोशिश करेंगे मुसलमान वोटों को विभाजित करके भाजपा को मदद पहुंचाने की मगर इन तीनों सपा, कांग्रेस और रालोद के साथ लड़ने से मुसलमान का बसपा या ओवैसी के साथ जाना मुश्किल हो जाएगा।

लेकिन इसके लिए सपा और कांग्रेस दोनों को यह ध्यान रखना होगा कि मिल कर लड़ें। अभी भारत जोड़ो यात्रा के लिए अखिलेश ने कहा कि हमें निमंत्रण नहीं मिलता है। जवाब में जयराम रमेश ने कहा कि यूपी का रूट फाइनल हो रहा है और उसके बाद उसे इंडिया गठबंधन के घटक दलों के साथ साझा किया जाएगा। उनका यात्रा में भाग लेना इंडिया गठबंधन को और मजबूत करेगा।

शकील अख्तर

> **कांग्रेस इन दिनों 1980 से पहले की टेस्ट टीम हो रही है। जहां बैट्समेन तीस-चालीस रन बनाकर भी टीम का महत्वपूर्ण स्तंभ माना जाता था। राहुल में सारे गुण हैं। वह कहते हैं ना हजार खूबी है उनमें लेकिन कमी है इतनी...! तो राहुल में सख्ती नहीं है। एक पार्टी में आंतरिक उदारवाद का बहुत पुराना असफल सिद्धांत लेकर चल रहे हैं। जिसने राजीव गांधी से लेकर, सोनिया और राहुल सबका नुकसान किया।**

यात्रा के 16 फरवरी को यूपी में आने की संभावना है। अभी तक के प्रोग्राम के अनुसार करीब 11 दिन यात्रा यूपी में रहेगी। जयराम ने रूट फाइनल होने की बात कही है। उसमें क्या परिवर्तन होगा पता नहीं। मगर पुराने कार्यक्रम के अनुसार यूपी के सारे मुख्य इलाकों को यात्रा छूने वाली थी। बनारस, प्रयागराज, अमेठी, रायबरेली, लखनऊ, मुरादाबाद, रामपुर अलीगढ़, आगरा करीब 20 जिलों से यात्रा गुजरेगी। अभी तक का प्रोग्राम 14 फरवरी को यात्रा का यूपी में आने का था। मगर अब जयराम के मुताबिक वह संभावित रूप से 16 को दोपहर बाद प्रवेश करेगी।

यात्रा का यह सबसे महत्वपूर्ण रास्ता है। इसी पर इंडिया गठबंधन की मजबूती तय होगी। और गठबंधन की एकता और मजबूती से ही यूपी में बीजेपी को चुनौती दी जा सकेगी। इस लोकसभा का फैसला यूपी ही तय करेगा। 2014 के मुकाबले 2019 में भाजपा की सीटें बढ़ीं। मगर यूपी में कम हो गईं। 2014 में भाजपा की 71 सीटें थी। जो 2019 में 62 रह गईं।

अब नए समीकरणों पीडीए से अखिलेश को उम्मीद है कि वह भाजपा को और नीचे ले जाएंगे। अब यह कितना हो पाता है यह कांग्रेस और सपा के साथ बने रहने पर निर्भर होगा।

बिहार में नीतीश के टूट जाने, बंगाल में ममता के आंखें दिखाने के बाद अब यूपी में कांग्रेस को बहुत राजनीतिक परिपक्वता दिखानी होगी।

राहुल की यात्रा बहुत सफल है। हर राज्य में पिछले राज्य से बढ़कर भीड़ आ रही है। ट्रेंड बता रहा है कि यूपी में ऐसा ही उत्साहपूर्ण माहौल रहने की संभावना है। मगर ऐसी ही भीड़ पहली यात्रा के दौरान मध्यप्रदेश और राजस्थान में उमड़ी थी मगर कांग्रेस उसका फायदा नहीं उठा पाई। दोनों जगह हार गई।

अब यूपी में तो कांग्रेस का कुछ है ही नहीं। 2014 में लोकसभा की दो सीटें थीं। सोनिया और राहुल की। मगर 2019 में उनमें से भी एक राहुल की गंवा दी। विधानसभा का जिक्र जो आखिरी चुनाव था, 2022 का कांग्रेस भी नहीं करना चाहती। केवल दो सीटें मिली थीं उसे।

कांग्रेस की हालत अब भी वैसी ही है। उससे खराब हो सकती है। बेहतर होने का तो न कोई संकेत है और न कांग्रेस ने कोई उपाय किया है। अपनी सबसे करिश्माई नेता मानी जाने वाली प्रियंका गांधी को कांग्रेस ने वहां की जिम्मेदारी दी थी। मगर पिछले 35 साल से कांग्रेस वहां इतनी कमजोर हो गई है कि प्रियंका की मेहनत और करिश्मा भी कुछ नहीं कर पाया। 1989 तक नारायण दत्त तिवारी वहां कांग्रेस के आखिरी मुख्यमंत्री थे। उसके बाद सपा बसपा भाजपा का ही नंबर आता रहा। कांग्रेस को तो केवल इतिहास ही बताया जाता रहा।

क्या कमी है? यह कांग्रेस कभी ढूंढ ही नहीं पाई या यह भी कहा जा सकता है कि कांग्रेस ने कभी कोशिश ही नहीं की। आप कांग्रेस के किसी बड़े नेता से पूछिए यूपी छोड़िए 2014, 2019 लोकसभा के इतने खराब प्रदर्शन का कारण! हर एक के पास अलग-अलग जवाब होगा और उनमें से एक भी सटीक नहीं। अभी मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ की हार का कारण। कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिलेगा। उससे पहले अभी गुजरात में इतनी बुरी हार, जबकि उससे पिछले 2017 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने भाजपा को सौ से नीचे रोक दिया था, का कारण? पंजाब, उत्तराखंड की हार जिसकी कोई संभावना नहीं थी।

कांग्रेस क्या दार्शनिक या आध्यात्मिक मुद्रा में राजनीति करने लगी है! जो मिल जाए वह भाग्य या राहुल की मेहनत। जो 2004 में सोनिया गांधी के आने के पहले की थी। जो हार मिले तो समभाव से स्वीकारना। हार-जीत तो होती रहती है। यह वह भाव है जो भारतीय क्रिकेट टीम में 1983 से पहले तक था। टेस्ट ड्रा करवाने को भी भारतीय क्रिकेट प्रेमी जीत मान लेते थे मगर उस वर्ल्ड कप में कपिल देव और उसके बाद महेन्द्र सिंह धोनी को जीत के लिए दम लगाया। फिर इतिहास गवाह है कि भारतीय क्रिकेट का रूप ही बदल गया।

कांग्रेस इन दिनों 1980 से पहले की टेस्ट टीम हो रही है। जहां बैट्समेन तीस-चालीस रन बनाकर भी टीम का महत्वपूर्ण स्तंभ माना जाता था। राहुल में सारे गुण हैं। वह कहते हैं ना हजार खूबी है उनमें लेकिन कमी है इतनी...! तो राहुल में सख्ती नहीं है। एक पार्टी में आंतरिक उदारवाद का बहुत पुराना असफल सिद्धांत लेकर चल रहे हैं। जिसने राजीव गांधी से लेकर, सोनिया और राहुल सबका नुकसान किया।

दूसरे कोई ऐसा राजनीतिक आदमी उनके पास नहीं है जो चीजों को बिगड़ने न दे और बिगड़ जाएं तो बनाए, संभाले।

उदाहरण बहुत हैं। मगर कांग्रेस में कोई सुनने को तैयार नहीं है। फिलहाल बस इतना ही कि यूपी को राहुल को खुद देखना चाहिए और गठबंधन को संभाल कर रखना चाहिए।

अखिलेश वखिलेश ने मन में बदला लेने की भावना नहीं आने दी और 11 सीटें कांग्रेस के लिए छोड़ने को तैयार हो गए हैं जिनमें दो-तीन की और बढ़ोतरी की भी संभावना है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार है)

यूरोपीय देशों ने की इज़रायल को नरसंहार रोकने के आईसीजे के आदेश की अनदेखी

■ **सात्यकी चक्रवर्ती**

यूरोपीय संघ के देश जो स्वतंत्रता और लोकतंत्र की बात करते हैं और मानवाधिकारों की रक्षा के मामले में खुद को अमेरिका सहित दूसरों से श्रेष्ठ मानते हैं, ने लगभग चार महीने से जारी इजरायल-हमास युद्ध में अपना असली रंग दिखा दिया है।

दक्षिण अफ्रीका द्वारा तेल अवीव पर 26 जनवरी को जारी अंतरराष्ट्रीय न्यायालय (आईसीजे) के आदेश की अनदेखी करने का आरोप लगाने के बाद, क्षेत्र के स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया कि गाजा में इजरायल के सैन्य हमले में 27,000 से अधिक लोग मारे गये हैं। तब से, इजरायल ने न केवल आईसीजे के आदेश का उपहास किया बल्कि गाजा पट्टी में फिलिस्तीनियों की हत्याओं को जारी रखकर प्रतिशोध के तहत इसे भी नजरअंदाज भी किया। ऐसा पता चला है कि आदेश जारी होने के बाद से इज़रायली हत्याओं की संख्या 1100 से अधिक हो गई है।

दक्षिण अफ्रीकी विदेश मंत्री नलेदीपंडोर ने बुधवार को कहा कि उनका देश इज़रायल द्वारा नागरिकों की हत्या को रोकने के लिए 'वैश्विक समुदाय के सामने अन्य उपायों का प्रस्ताव करने पर विचार करेगा'। उन्होंने कहा कि आईसीजे के फैसलों को नजरअंदाज कर दिया गया है क्योंकि इजरायल का मानना है कि उसे कोई भी कार्रवाई करने का लाइसेंस मिल गया है। उन्होंने कहा कि यह खतरा है कि अगर बड़े देशों ने इज़रायल के खिलाफ कोई निवारक उपाय नहीं किया तो बड़ी संख्या में नागरिक हताहत होंगे। 1994 के रवांडा नरसंहार जैसी संख्या हो सकती है।

> **अदालत का फैसला इज़रायल पर बाध्यकारी है, अगर वह आदेशों का उल्लंघन करते हुए पाया जाता है तो उसे सैद्धांतिक रूप से संयुक्त राष्ट्र के प्रतिबंधों का सामना करना पड़ सकता है, हालांकि किसी भी सजा पर संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा वीटो किया जाना लगभग तय है। अभी तक अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने ऐसा कोई संकेत नहीं दिया है कि वह इज़रायल को हत्याएं रोकने के लिए मनायेगा।**

अदालत का फैसला इज़रायल पर बाध्यकारी है, अगर वह आदेशों का उल्लंघन करते हुए पाया जाता है तो उसे सैद्धांतिक रूप से संयुक्त राष्ट्र के प्रतिबंधों का सामना करना पड़ सकता है, हालांकि किसी भी सजा पर संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा वीटो किया जाना लगभग तय है। अभी तक अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने ऐसा कोई संकेत नहीं दिया है कि वह इज़रायल को हत्याएं रोकने के लिए मनायेगा। यूरोपीय संघ के अन्य देश अमेरिका का अनुसरण कर रहे हैं। ब्रिटेन पहले से ही हथियार भेज रहा है और फ्रांस भी इज़रायली हत्याओं पर चुप्पी साधे हुए है।

दक्षिण अफ्रीका भी इज़रायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू पर युद्ध अपराधों का आरोप लगाते हुए अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय में दायर एक मामले को आगे बढ़ाने के लिए उत्सुक हैं। आईसीसी ने पहले रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को जारी युद्ध के दौरान यूक्रेन से बच्चों को निकालने के संबंध में युद्ध अपराधी करार दिया था। गिरफ्तारी का वारंट जारी किया गया और राष्ट्रपति पुतिन इसके कारण जी-20 बैठक के लिए भारत नहीं आ सके।

जहां तक यूरोप की बात है तो इज़रायल यूरोपीय यूनियन के नेताओं के विचारों का तब तक ख्याल नहीं रखता जब तक प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू को वाशिंगटन का समर्थन प्राप्त है और यूरोपीय यूनियन यह जानता है कि उसके अरब देशों के साथ अच्छे आर्थिक संबंध हैं लेकिन फिर भी इस इज़रायल-हमास युद्ध के मुद्दे पर, यूरोपीय संघ के देश प्रभावी रूप से अमेरिकी सरकार के पिछलग्गू सेवक के रूप में व्यवहार कर रहे हैं।

ब्रुसेल्स में मिस्र के विदेश मंत्री समेहशौकरी और यूरोपीय संघ के विस्तार आयुक्त ओलिवरवर्हेली के साथ एक संयुक्त संवाददाता सम्मेलन के दौरान बोरेल ने कहा कि 'इजरायल के पास फिलिस्तीनी लोगों के आत्मनिर्णय के लिए वीटो का अधिकार नहीं हो सकता है।' लेकिन इस टिप्पणी का यूरोपीय संघ सरकारों की कार्रवाई पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

अल-अक्सा बाढ़ ऑपरेशन के तुरंत बाद, जर्मन चांसलरओलाफस्कोल्ज़, इतालवी प्रधानमंत्री जोर्जियामेलोनी और फ्रांसीसी राष्ट्रपति इमैनुएलमैक्रॉन सहित यूरोपीय नेता, डच प्रधानमंत्री मार्करुटे के शब्दों में, तेल अवीव पहुंचे। उन्होंने दोहराया कि 'इज़रायल को अपनी रक्षा करने का पूरा अधिकार है।' तुरंत, यूरोपीय संघ की सरकारों ने सैन्य और खुफिया सहायता बढ़ा दी, यह जानते हुए भी कि इज़रायल हमास को खत्म करने के नाम पर फिलिस्तीनियों का नरसंहार कर रहा है।

'2 नवंबर तक, जर्मन सरकार ने इज़रायल को लगभग 303 मिलियन यूरो (323 मिलियन) मूल्य के रक्षा उपकरणों के निर्यात को मंजूरी दे दी है, 'रॉयटर्स ने रिपोर्ट की, इस बड़ी राशि की तुलना 32 मिलियन यूरो मूल्य के रक्षा निर्यात से करते हुए जिसे 2022 में बर्लिन द्वारा अनुमोदित किया गया था। यह सिर्फ एक उदाहरण है। शिपमेंट जारी है और जर्मन हथियार निर्माता यूरोपीय संघ के देशों के अन्य आपूर्तिकर्ताओं के साथ प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं।

राजनीतिक पर्यवेक्षकों के अनुसार, जबकि अमेरिकी गाजा युद्ध में भागीदार की भूमिका निभाने से नहीं कतराते थे, यूरोपीय संघ पूरी तरह से अमेरिकी रुख से सहमत नहीं था, लेकिन यह बेईमानी थी और जिसे कम से कम नैतिक रूप से असंगत कहा ही जा सकता है। उदाहरण के लिए, उत्साही मैक्रॉन हमास को निशाना बनाने के लिए आईएसआईएस-विरोधी सैन्य गठबंधन स्थापित करना चाहते थे, हालांकि स्पेन और बेल्जियम के नेताओं ने 24 नवंबर को मिस्र के राफा सीमा पर एक संवाददाता सम्मेलन के दौरान संयुक्त रूप से स्थायी युद्धविराम का आह्वान किया था।

कुछ यूरोपीय देश गाजा में इजरायल के प्रतिशोध से व्यथित हैं। वे कभी-कभी सार्वजनिक रूप से इसकी बात करते हैं, लेकिन इजरायल के विरोध को तत्काल कार्रवाई में तब्दील नहीं किया जा सकता है। यूरोप अमेरिकी भू-राजनीतिक रणनीति से बंधा हुआ है और यही यूरोप की त्रासदी है।

गुरवाणी विचार

गऊड़ी महला 5

जा कौ बिसरे राम नाम तांह की पीर।
साध संगति मिलि हरि खीरे से गुणी गहीर।
जा को गुरमुख रिदे बध, ताके करतल नव निधि सिधि।
जो नानहि हरि प्रभ धनी, किछु नांही ताके कभी।
करणे हार पछानियां, सरब सुख सां माणिआ।
हरि धन जाकै गृहि वसै, कहो नानक तिन संगि दुख नसै।

गुरवाणी की इन पंक्तियों द्वारा पांचवें नानक गुरु अर्जुन देव मानव मन को समझाइश देते हुए फरमा रहे हैं कि जिस जिस प्राणी ने माया मोह में गलतान होकर प्रभु परमात्मा भूल बैठा है उसे फिर हर प्रकार के दुख चिंता-फिकर आ घेरते हैं। उसके ठीक विपरीत जो जो प्राणी हर वक्त साध संगत में बैठकर प्रभु सिमरन में मन रमाये रखते हैं। वे ही हर प्रकार के गुणों के संपूर्ण रूप से खजाना बन जाते हैं क्योंकि प्रभु सिमरन बंदगी में रमे रहने के कारण उसे अपने अंदर और उसके हस्त रेखाओं पर नव निधि अठारह सिधियों के खजाने आ जाते हैं अर्थात प्रभु परमात्मा फिर आगे किसी भी प्रकार कमी नहीं आने देता। कहा भी गया है-

जिसके सिर ऊपर तूं सुवामी, सो दुख कैसा पावै।
बोल न जाने माइआ मदमाता, मरना चीत न आवै।

प्रभु परमात्मा की कृपादृष्टि जिस जिस प्राणी पर हो गई है वह फिर सदा आनंद ही आनंद में रहता है। तब उसे फिर किसी भी प्रकार का भय नहीं रहता। उसे इस बात का ज्ञान हो जाता है कि एक न एक दिन इस असार संसार से विदा तो होना ही है फिर मौत का डर क्यों किया जाए-

मरण लिखाये मंडल में आये।

हर इंसान के माथे पर लोहे की अदृश्य कलम से उसकी वापसी की तारीख लिख दी जाती है। जो इंसान प्रभु भक्ति में रमे रहमे के कारण यह ज्ञात कर लेता है या जिस की जान पहचान प्रभु परमात्मा की भक्ति में रमे रहने के कारण रजा समझकर शिरोधार्य करता है उस जीव को कमी नहीं रह जाती-

जा का मीत साजन है समिआं।
तिस जन को कहो का की कमिआं।

वह फिर आत्मिक रूप से और सांसारिक रूप से भी उसे हर प्रकार के सुखों की प्राप्ति हो जाती है। प्रभु परमात्मा ने इस समस्त संसार की रचना इस बात का प्रभु परमात्मा में रमे रहने के कारण उसे आभास हो जाता है क्योंकि उसे फिर प्रभु परमात्मा पर पूर्णरूप से भरोसा हो जाता है तो फिर उसे किसी भी प्रकार की कमी नहीं रहती।

गुरुदेव समझाइश दे रहे हैं कि हर वक्त सिमरन भक्ति में रमे रहना चाहिए पर यह संभव भी तभी हो सकता है जब प्रभु परमात्मा की हम पर कृपा दृष्टि हो जाने पर ही हमारा मन उसकी सिमरन भक्ति में रम पाता है। हम हर वक्त सिमरन में ही लगे रहें। इसका अर्थ यह नहीं है कि हम अपना कार विहार बंद कर प्रभु सिमरन में ही लगे रहें। हमें अपने और अपने परिवार के उदर पोषण के लिए रोजी रोटी भी कमाना है।

नाम कहे तिलोचना मुख ते राम संभाल।
हाथ पांव से काम सब चीत निरंजन नाल।।

इसलिए गुरवाणी में हमें पग पग समझाया गया है कि-उठत बैठत सोवत जागत ऐह मन तुझे चितारे। प्रभु परमात्मा से प्यार हो जाता है तो फिर हर प्रकार के दुखों (दैहिक- दैविक-भौतिक) से छुटकारा मिल जाता है। दुख कलेशों का नाश हो जाता है यहां तक कि जमदूत भी भाग खड़े होंगे।

तेरे सेवक को भओ किछ नाहीं। जम नहीं आवे नेडे। इसलिए इंसान को साध संगत कर प्रभु सिमरन में लग जाना चाहिए। प्रभु परमात्मा से हम विनती करते रहें-

विसर नहीं दातार अपना नाम देओ।
गुण कांवां दिन रात नानक चाव ऐहो।।

-इंदर सिंह आहुजा

आपके पत्र

स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक क्षेत्रों में व्यापक सुधार की जरूरत

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 1 फरवरी को अपना छठा बजट पेश किया, जहां उन्होंने पिछले 10 वर्षों में सरकार की व्यापक उपलब्धियों पर ध्यान केंद्रित किया। चूंकि यह चुनावी वर्ष है इसलिए बजट पूर्ण नहीं था, बल्कि लेखानुदान था और इसमें राजस्व या व्यय खाते पर प्रमुख घोषणाएं शामिल नहीं थीं। एक अंतरिम बजट, नियमित वार्षिक बजट से अलग, चुनावी वर्ष में प्रस्तुत किया जाता है (2024 लोकसभा के लिए चुनावी वर्ष है)। केंद्रीय बजट के समान, इस पर लोकसभा में बहस होती है और यह पूरे वर्ष के लिए वैध रहता है (भले ही यह लगभग 2-4 महीनों के लिए एक संक्रमणकालीन व्यवस्था के रूप में काम करने के लिए होता है)। आम तौर पर 'वोट-ऑन-अकाउंट' के रूप में जाना जाता है, यह नई सरकार के कार्यभार संभालने तक विशिष्ट व्यय को अधिकृत करता है। अनुच्छेद 116 तत्काल व्यय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए 'भारत की संचित निधि' से धन के अग्रिम आवंटन की अनुमति देता है। सरकार ने अपने दूसरे कार्यकाल के अंतिम बजट में इनकम टैक्स स्लैब में किसी तरह का बदलाव नहीं किया। ना ही डायरेक्ट व इनडायरेक्ट टैक्स में कोई बदलाव किया जा रहा है। जैसा कि विशेषज्ञ कहते हैं- चुनावी वर्ष के बजट से ज्यादा उम्मीदें नहीं की जानी चाहिए।

महिलाओं के प्रति झुकाव रखने वाला यह बजट उनकी सेहत पर भी केंद्रित है। हालांकि किसानों के लिए एमएसपी की घोषणा न करर सरकार अपनी गारंटी पूरी करने से चूकती नजर आ रही है। एक तरफ वह दलील देती है कि पचीस करोड़ लोगों को गरीबी रेखा से बाहर निकाला है तो दूसरी तरफ अस्सी करोड़ लोगों को मुफ्त राशन देने पर अपनी पीठ भी थपथाती है। कुल मिलाकर यह प्रशासनिक रवायत है। पिछले दस वर्षों में प्रत्यक्ष कर संग्रह तीन गुना से अधिक हो गया है और रिटर्न दाखिल करने वालों की संख्या 2.4 गुना तक बढ़ गई है। पीएम आवास योजना (ग्रामीण) के अंतर्गत अगले पांच वर्षों में दो करोड़ और घर बनाए जाएंगे। यद्यपि यह अंतरिम केंद्रीय बजट बहुत विस्तार वाला नहीं है। इसलिए यह समय ही बताएगा कि विकास की महत्वाकांक्षाओं को अधिक मजबूत करने के लिए एवं बजट की प्रतिबद्धताओं को पूरा करने के लिए सार्वजनिक निजी भागीदारी को कितना बढ़ावा देगा॥

उच्च और स्कूली शिक्षा दोनों को बजट में बढ़ा हुआ आवंटन मिला और पीएम स्कूल फॉर राइजिंग इंडिया (पीएम एसएचआरआई) जैसी योजनाओं को पिछले बजट की तुलना में लगभग 50त्न अधिक आवंटन मिला। स्कूल शिक्षा विभाग के लिए कुल आवंटन 73,008.10 करोड़ है जो पिछले आवंटन से अधिक है। आलोचकों का तर्क है कि एक बड़ा हिस्सा पीएम-एसएचआरआई परियोजना को वित्तपोषित करने में चला गया है जो देश में मौजूदा सरकारी स्कूलों को अपग्रेड करना है।

लोगों की औसत वास्तविक आय में 50त्न की वृद्धि हुई है, हमें इस बारे में ज्यादा नहीं बताता कि गरीबों का जीवन कैसे बदल गया क्योंकि जो मायने रखता है वह राष्ट्रीय आय का वितरण है। विशेषज्ञों का यह भी तर्क है कि औसत ग्रामीण श्रमिक आय में मामूली वृद्धि हुई है जो निजी अंतिम उपभोग व्यय में खराब वृद्धि में भी परिलक्षित होती है। कुल रोजगार में कृषि की हिस्सेदारी में वृद्धि से चिह्नित, रोजगार के संरचनात्मक बदलाव में एक उल्लेखनीय उलटफेर हुआ है। इससे कृषि के अलावा रोजगार के अवसरों की कमी का पता चलता है। पिछले 4-5 वर्षों में महिलाओं की श्रम बल भागीदारी दर में हालिया वृद्धि संकट से प्रेरित प्रतीत होती है, क्योंकि बड़ी संख्या में महिलाएं लाभकारी रोजगार के बजाय अवैतनिक पारिवारिक श्रम में लगी हुई हैं। व्यापक आर्थिक स्तर पर, बजट का दावा है कि 2023-24 में, केंद्र सरकार यह सुनिश्चित करने में कामयाब रही है कि उधार के अलावा उसकी प्राप्तियां बजट के लगभग बराबर हैं। इसने कर राजस्व के संबंध में बजटीय अपेक्षाओं को पूरा किया है और साथ ही बजट के सापेक्ष अपनी गैर-कर राजस्व प्राप्तियों में 25फीसदी की बढ़ोतरी की उम्मीद की है। व्यवसायों को फलने-फूलने के लिए एक सक्षम वातावरण बनाने, पर्यावरण से संबंधित मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने और समाज के हाशिए पर रहने वाले वर्ग के उत्थान की आवश्यकता है।

प्रियंका सौरभ

प्रकाशक, मुद्रक : राजीव रंजन श्रीवास्तव द्वारा पत्रकार प्रकाशन प्रा. लि. के लिए 506, आई.एन.एस. बिल्डिंग, 9, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित एवं बीएफएल इंफोटेक लि., सी 9, सेक्टर-3, नोएडा से मुद्रित। सम्पादक : राजीव रंजन श्रीवास्तव, (पी.आर.बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार)। आर.एन.आई. नं. DELHIN/2008/24216. दिल्ली कार्यालय :फोनः 011-23718195,23357784, फैक्सः 011-43581404, नोएडा कार्यालयः फोनः 0120-4114404 फैक्सः 0120-4273770 ई-मेलः deshbandhudelhi@gmail.com वेबः www.deshbandhu.co.in

देश विदेश

गाजा में हमास की 17 बटालियनों को नष्ट किया : नेतन्याहू

तेल अवीव। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने रविवार को कहा कि इजरायल रक्षा बलों (आईडीएफ) ने गाजा पट्टी में अपने अभियान के दौरान 24 हमास बटालियनों में से 17 को समाप्त कर दिया है, जिनमें से ज्यादातर एन्क्लेव के दक्षिण में सक्रिय हैं। श्री नेतन्याहू ने एक कैबिनेट बैठक में कहा, आज तक हमने 24 बटालियनों में से 17 को खत्म कर दिया है। शेष बटालियनों में से अधिकांश दक्षिणी गाजा पट्टी और (शहर) राफा में हैं और हम उन तक भी पहुंचेंगे।

बिलावल भुट्टो का पारंपरिक राजनीति को खत्म करने का वादा

इस्लामाबाद, 4 फरवरी (एजेंसियां)। पीपीपी अध्यक्ष बिलावल भुट्टो जरदारी, पाकिस्तान के पूर्व विदेश मंत्री और राजनीतिक

- नफरत की राजनीति को खत्म करने का वादा कर रहे बिलावल
- पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के अध्यक्ष भी है पूर्व विदेश मंत्री

इतिहास, संघर्ष और बलिदान की विरासत वाले भुट्टो परिवार के उत्तराधिकारी, एक समानांतर राजनीतिक कथा का प्रसार करने के लिए तैयार हैं, जिसका उद्देश्य है नफरत और बदले की ध्रुवीकृत राजनीति से बाहर निकलने का रास्ता पेश करें, जिससे वह देश में 8 फरवरी के आम चुनावों में एक मजबूत उम्मीदवार बन सकें।

बिलावल ने कहा कि पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी का प्रतीक तीर, उन्हें अपनी मां और पूर्व प्रधान मंत्री बेनजीर भुट्टो से विरासत में मिला है, जिनकी 2007 में हत्या कर दी गई थी, जो आत्मसम्मानित, भरोसेमंद, जीत का प्रतीक है।

उन्होंने कहा, हम पारंपरिक राजनीति और नफरत तथा विभाजन को खत्म करने का वादा कर रहे हैं और पाकिस्तान के लोगों से सोचने का नया तरीका चुनने की अपील कर रहे हैं।

8 फरवरी के आम चुनाव में पीटीआई के संस्थापक इमरान खान और उनकी पार्टी के चुनाव चिह्न को हटाए जाने के बाद बिलावल का मुख्य तर्क पीएमएल (नवाज) और तीन बार के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ हैं।

पीपीपी अध्यक्ष ने आरोप लगाया कि शरीफ देश के सैन्य प्रतिष्ठान के साथ एक सौदे के माध्यम से लौटे हैं और उनका ध्यान यह पूछने पर केंद्रित है कि उनकी सरकार को क्यों उखाड़ फेंका गया।

ऐसा लगता है कि बिलावल का प्रचार एक समानांतर आख्यान पर केंद्रित है, जो शरीफ जैसे राजनेताओं द्वारा की जाने वाली विभाजन की पारंपरिक राजनीति को समाप्त करने की मांग कर रहा है।

बिलावल ने एक सार्वजनिक सभा को संबोधित करते हुए कहा, हम स्वीकार करते हैं कि लोगों के अलग-अलग दृष्टिकोण हैं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि आपको व्यक्तिगत दुश्मनी विकसित करनी होगी।

यह कहना गलत नहीं होगा कि बिलावल का मुख्य फोकस पंजाब और खैबर पख्तूनख्वा (केपी) प्रांतों में मजबूत पैठ बनाना है क्योंकि उन्होंने लाहौर से भी अपना नामांकन पत्र दाखिल किया है।

राजनीतिक विश्लेषक अदनान शौकत ने कहा, इमरान खान जेल में हैं और चुनाव नहीं लड़ रहे हैं, उनकी पार्टी (पीटीआई) को 9 मई के बाद से एक कार्रवाई के माध्यम से खत्म कर दिया गया है, नवाज शरीफ वापस आ गए हैं और सभी ने उनकी कानूनी प्रतिबद्धताओं को सचमुच लुप्त होते देखा है, यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि वह और उनकी पार्टी आ गई है। शक्तिशाली सेना के साथ समझौते के माध्यम से, और शरीफ के राजनीतिक भाषण खान की सरकार में समस्याओं को उजागर करने पर अधिक केंद्रित रहे हैं। इस परिदृश्य में जहां पार्टियां एक-दूसरे को गद्दार कह रही हैं, बिलावल ने खुद को अलग और संयमित तरीके से स्थापित किया है।

श्रीलंकाई नौसेना ने 23 मछुआरों को किया गिरफ्तार

चेन्नई, 4 फरवरी (एजेंसियां)। श्रीलंकाई नौसेना द्वारा जिले के कई मछुआरों को गिरफ्तार किए जाने के बाद तमिलनाडु के रामनाथपुरम जिले में रविवार को मछुआरा संघों ने लोकसभा चुनाव का बहिष्कार करने की धमकी दी। श्रीलंकाई नौसेना ने शनिवार को रामेश्वरम और थंगाचीमादम से 23 मछुआरों को गिरफ्तार किया और उनकी मोटर वाली दो नौकाओं को भी जब्त कर लिया। मछुआरे नेदुनथीवु में मछली पकड़ने में लगे हुए थे जब उन्हें श्रीलंकाई नौसेना ने गिरफ्तार कर लिया। उपलब्ध जानकारी के अनुसार, श्रीलंकाई अधिकारी 23 मछुआरों को माइलिटी बंदरगाह ले गए हैं और उन्हें अदालत में पेश किए जाने की संभावना है। मछुआरा संघों द्वारा रविवार को थंगाचीमादम में एक तत्काल बैठक बुलाई गई, जहां एक प्रस्ताव पारित किया गया जिसमें केंद्र से श्रीलंका के 23 मछुआरों की रिहाई सुनिश्चित करने की अपील की गई। बैठक में श्रीलंका के बंदरगाहों में पड़ी जब्त

- लोकसभा चुनाव का बहिष्कार करेंगे मछुआरा संघ

की गई 150 मोटर वाली नौकाओं को बिना किसी देरी के वापस लेने का प्रस्ताव भी पारित किया गया, क्योंकि इससे मछुआरों को कर्ज से मुक्ति मिलेगी। प्रस्ताव में यह भी कहा गया है कि यदि मछुआरों की मांगों पर ध्यान नहीं दिया गया तो मछुआरे लोकसभा चुनाव का बहिष्कार करेंगे और अपने किसी भी सदस्य को रामेश्वरम और थंगाचीमादम के मछली पकड़ने वाले गांवों में मतदान केंद्रों पर वोट डालने की अनुमति नहीं देंगे।

श्रीलंकाई नौसेना कर्मियों ने शनिवार रात जे. सहायराज और ए. जेम्स की नावें पकड़ लीं जिनमें 23 मछुआरे मध्य समुद्र में मछली पकड़ने में लगे हुए थे।

सुडोकू 6457

								7
8	2					6	9	
		4		3		5	2	
		2			9	1	6	
3			1		6			2
	1	8	2			7		
	4	5		2		3		
	8	6					1	5
7								

: नियम :

1. कुल 81 (9×9) वर्ग हैं, जिसमें 9 (3×3) वर्गों का एक खंड (ब्लॉक) बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1 से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते हैं।
3. बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कॉलम, कतार और खंड में 1 से 9 अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते हैं।

हल आज ही के अंक में

दैनिक पंचांग

mypandit.com 24 hour astrology service

■ बेजान दारुवाला

ग्रह स्थिति : सोमवार 5 फरवरी , 2024 माघ कृष्ण पक्ष 11

राशिफल

मेष -आज का दिन मिश्रित फलदायी है। आज आपको वाणी और व्यवहार में संयम रखने की सलाह दी जाती है। अपने छिपे हुए शत्रुओं से संभलकर रहें। ज्योतिष और आध्यात्मिक बातों में आज आपकी रुचि रहेगी। यात्रा प्रवास टालें।

वृषभ -आज आपके जीवन साथी के साथ संबंध अधिक प्रगाढ़ होंगे। उनके साथ रोमांस के पल गुजारेंगे। पारिवारिक या सामाजिक प्रसंगों में जाना होगा। प्रवास की संभावना है। आप मौज-मस्ती में समय व्यतीत कर सकेंगे।

मिथुन -अधूरे कामों को पूरा करने के लिए अच्छा समय है। आपके परिवार में आनंद और उत्साह का वातावरण होगा। अपने काम में यश एवं प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकेंगे। लोगों के साथ संपर्क के दौरान स्वभाव को शांत रखना आवश्यक है।

कर्क -आज आप शांतिपूर्वक दिन व्यतीत करें। किसी बात की चिंता आपको रह सकती है। आपको पेट सम्बंधी कोई तकलीफ हो सकती है। अचानक धन खर्च होने की संभावना है। प्रेमियों के बीच मतभेद हो सकता है।

सिंह -आज का दिन शुभ फलदायी नहीं है। घर में वाद-विवाद का वातावरण रहेगा। आप शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। मन किसी चिंता में रहेगा। नेगेटिव विचार आपको परेशान करेंगे।।

कन्या -आज आपको किसी भी काम में बिना सोचे-समझे भाग नहीं लेना है। साथियों के साथ अच्छी तरह से समय गुजरेगा। भावनात्मक संबंधों में आप नरम रहेंगे। मित्रों एवं स्वजनों से भेंट होगी। भाई-बहनों से लाभ होगा।

तुला -आज आपका मन दुविधाओं में उलझा रहेगा। निर्णय न ले पाने के कारण नए काम शुरू नहीं कर पाएंगे। आज आप सम्बंधों में औपचारिकता रखें, नहीं तो मनमुटाव होने की संभावना है।

वृश्चिक -आज का दिन अच्छा रहने वाला है। दोपहर के बाद तन और मन की प्रसन्नता रहेगी। सुख एवं आनंद की प्राप्ति होगी। परिजनों के साथ आनंद-उल्लास में समय व्यतीत होगा। मित्रों, स्नेहीजनों से उपहार मिलने से मन खुश होगा।

धनु -आज का दिन कुछ कष्टदायक है, इसलिए आपको संभलकर चलना चाहिए। परिजनों के साथ मनमुटाव के प्रसंग बन सकते हैं। स्वभाव में उग्रता तथा आवेश के कारण किसी से विवाद न हो इस बात का विशेषरूप से ध्यान रखें।

मकर -सामाजिक कामों से आपको लाभ होगा। मित्रों तथा सम्बंधियों के साथ हुई भेंट आपके लिए लाभदायी सिद्ध हो सकती है। विवाहोत्सुक जातकों का रिश्ता पक्का हो सकता है। घर में शुभ प्रसंग का आयोजन होगा।

कुंभ -आज आपका दिन अनुकूल है। आप का हर काम सरलता से पूरा होगा, जिस वजह से आप प्रसन्न रहेंगे। कार्यालय और व्यापार में अनुकूल परिस्थिति का वातावरण रहेगा। बड़ी सफलता भी मिल सकती है।

मीन -मन में व्याकुलता एवं अशांति का अहसास बना रहेगा। शारीरिक रूप से आपको थकान का अनुभव होगा। अधिकारियों के साथ संभलकर चलें। संतान के विषय में चिंता हो सकती है। व्यर्थ में धन खर्च होगा।

नोट-उपरोक्त राशिफल बेजान दारूवाला द्वारा पूर्वलिखित है।

शी जिनपिंग ने थ्येनचिन में तैनात सैनिकों से मुलाकात की

बीजिंग, 4 फरवरी (एजेंसियां)। चीनी पारंपरिक वसंत महोत्सव की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने 2 फरवरी को थ्येनचिन शहर में तैनात सैनिकों से मुलाकात की। उन्होंने देश भर में सभी सैनिकों को हार्दिक बधाई और नव वर्ष की शुभकामनाएं दीं।

शी जिनपिंग ने कहा कि पिछले वर्ष थ्येनचिन में तैनात सैनिकों ने सीपीसी केंद्रीय समिति और केंद्रीय सैन्य आयोग के निर्णयों और निर्देशों को दृढ़ता से लागू किया, विभिन्न कार्यों में ठोस प्रगति की और उत्कृष्ट प्रदर्शन के साथ प्रमुख मिशनों को पूरा किया - खासकर गर्मियों में बाढ़ विरोधी कार्य में लोगों की जान और संपत्ति की रक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। शी ने जोर देते हुए कहा कि नए साल में सैनिक अपना मिशन पूरा करने, ठोस रूप से कार्यों का कार्यान्वयन करने, सेना के निर्माण में नई स्थिति तैयार करने, पार्टी और जनता द्वारा दिये गये विभिन्न कार्यों को दृढ़तापूर्वक पूरा करने के प्रयास करेंगे।

बाइडेन ने पहली डेमोक्रेटिक प्राइमरी में हासिल की जीत

वाशिंगटन, 4 फरवरी (एजेंसियां)। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने दक्षिण कैरोलिना में आयोजित पार्टी के पहले प्राइमरी में जीत के साथ राष्ट्रपति पद के लिए डेमोक्रेटिक नामांकन पर अपने दावे की शुरुआत की। बाइडेन ने पिछले सप्ताह दक्षिण कैरोलिना में एक अभियान के दौरान कहा, सच्चाई यह है कि मैं दक्षिण कैरोलिना के डेमोक्रेटिक मतदाताओं के बिना यहां नहीं होता। इसके लिए मैं तहे दिल से धन्यवाद देता हूं। शनिवार रात कई अमेरिकी मीडिया आउटलेट्स ने मतदान समाप्त होने के तुरंत बाद बाइडेन की जीत का अनुमान लगाया था।

- डेमोक्रेटिक नामांकन पर अपने दावे की शुरुआत की

टिकट के लिए उनके प्रतिद्वंद्वी प्रतिनिधि सभा के सदस्य डीन फिलिप्स और स्वयं सहायता लेखक मैरिएन विलियमसन हैं। राष्ट्रपति जॉन एफ कैनेडी के भतीजे डेमोक्रेट रॉबर्ट कैनेडी जूनियर ने खुद को स्वतंत्र घोषित कर दिया है और रूढ़िवादियों के बीच उदारवादियों के समान ही ध्यान आकर्षित कर रहे हैं। डेमोक्रेट्स ने इस साल अपने प्राइमरी कार्यक्रम में बदलाव किया और परंपरा के उलट कॉकस के लिए आयोवा और प्राइमरी के लिए न्यू हैम्पशायर को छोड़कर अपने पहले राज्य के रूप में दक्षिण कैरोलिना को चुना। इस राज्य ने प्रचंड जीत के साथ बाइडेन के 2020 अभियान की किस्मत बदल दी थी। उन्हें राष्ट्रपति पद की दौड़ में सबसे आगे कर दिया था। राज्य में बाइडेन की अनुमानित जीत ने उनके पुन: नामांकन और दूसरे कार्यकाल की शुरुआत को चिह्नित किया। बाइडेन के रिपब्लिकन प्रतिद्वंद्वी उनके पूर्ववर्ती और 2020 के प्रतिद्वंद्वी, पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प होने की संभावना है, अगर उनके खिलाफ चल रहे कई मामलों में से किसी में उन्हें दोषी नहीं ठहराया जाता और जेल नहीं भेजा जाता।

वर्ग पहेली 6457

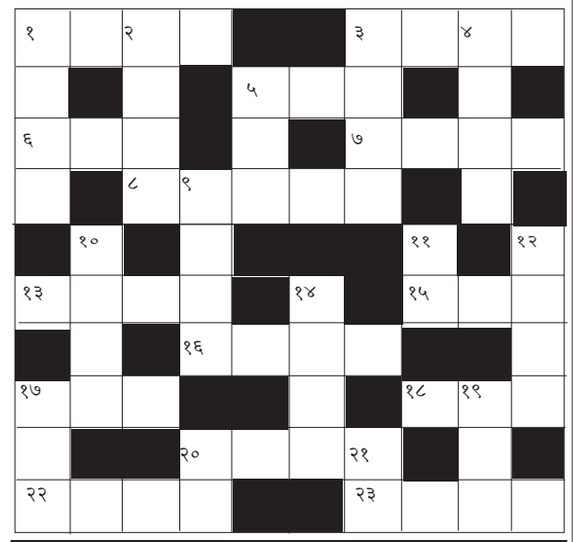

बायें से दायें:-

१. गुरु या आचार्य का वास स्थान जहां रहकर छात्र विद्याध्ययन करते हैं, प्राचीन पद्धति पर स्थापित विद्यापीठ
३. दोष, ऐब, बुराई
५. अलगाव, विस्तार, विभाग, पार्थक्य
६. अंतिम सीमा, पराकाष्ठा, हद दरजे का
७. मन की हालत
८. अचानक, एकाएक (उर्दू)
१३. मेहनत
१५. कठिनाई, असुविधा (उर्दू)
१६. अंधकार में विचरण करने वाला
१७. जिसकी मृत्यु हो चुकी हो
१८. पैर,पद
२०. हुक्म की तामील करने वाला
२२. मुंह तक या पूरी तरह भरा हुआ (उर्दू)
२३. एक प्रकार का धार्मिक कृत्य, जिसमें हिंदू मृतक के नाम तिल मिश्रित जल की अंजलि देते हैं,

ऊपर से नीचे:-

१. जासूस, भेदिया
२. बुरा वक्त, बुरा समय
३. जड़मति, मूर्ख, नासमझ
४. फूलों का गुच्छा
५. देर, देरी
९. प्रलय (उर्दू)
१०. पहचान का
११. प्रथम, मूल, प्रधान, आरंभ, वगैरह
१२. बांटना
१४. कोई खास काम न करने या नियत तिथि पर उपस्थित होने का प्रतिज्ञापत्र जिसका उल्लंघन करने पर प्रतिज्ञा कर्ता अर्थदंड देना स्वीकार करता है (उर्दू)
१७. कमल
१९. सूर्य से उत्पन्न, कर्ण
२०. पानी, जल (उर्दू)
२१. पद्धति, तरीका, प्रणाली

वर्ग पहेली-6456

१ खा	सि	२ य	त		३ वि	फ	४ ल	ता
न		था		५ कुं	ठि	त		था
६ दा	खि	ला		भ		७ र	ग	ड़	ना
न		८ भ	९ य	ज	न	क		ना	
	१० स		था				११ पा		१२ रा
१३ का	मा	य	नी		१४ बे		स	रो	ज
	न		१६ ति	रो	हि	त			नी
१७ बे	ता	ब			सा		प्र	ग	ति
ग			२० का	दं	ब	२१ री		वा	
२२ म	धु	शा	ला			२३ छ	र	ह	रा

युसूफ कुरैशी, मो. 8109948408

दिल्ली में अमेरिकी नागरिकों को ठगने वाले फर्जी कॉल सेंटर का भंडाफोड़

नई दिल्ली, 4 फरवरी (एजेंसियां)। दिल्ली पुलिस ने एक अंतरराष्ट्रीय फर्जी कॉल सेंटर का भंडाफोड़ करने का दावा किया है, जो कथित तौर पर खुद को माइक्रोसॉफ्ट और एप्पल जैसी शीर्ष कंपनियों के अधिकारियों के

- ऑनलाइन सहायता प्रदान करने के बहाने करते थे ठगी

रूप में पेश कर विदेशी नागरिकों को ऑनलाइन सहायता प्रदान करने के बहाने अमेरिकी नागरिकों को ठग रहा था। दिल्ली पुलिस ने रविवार को बताया कि तीन आरोपियों को भी गिरफ्तार किया गया है। जिनकी पहचान रानी बाग निवासी शुभम चौधरी (24), राजौरी गार्डन निवासी अखिल बरदिया (30) और हरि नगर निवासी राहुल गुसाईं (26) के रूप में हुई है। पुलिस ने कहा कि 30 जनवरी को, बाहरी जिले के साइबर पुलिस स्टेशन में विशेष सूचना प्राप्त हुई थी जिसमें बताया गया कि पश्चिम विहार इलाके में एक कॉल सेंटर चलाया जा रहा है, जो अमेरिकी नागरिकों के साथ बड़े पैमाने पर साइबर धोखाधड़ी में शामिल हो सकता है। यह खुद को प्रमुख इंटरनेट कंपनियों के अधिकारियों के रूप में प्रस्तुत करता है और नागरिकों को एक गैर-मौजूद समस्या को हल करने के आधार पर उन्हें पैसे देने के लिए प्रेरित करता है। बाहरी जिले के पुलिस उपायुक्त जिमी चिराम ने कहा कि इनपुट पर कार्रवाई करते हुए पुलिस की टीम ने पश्चिम विहार इलाके में मौके पर छापेमारी की और तीन लोगों को पकड़ लिया। ये व्यक्ति माइक्रोसॉफ्ट और एप्पल के अधिकारियों का प्रतिरूपण करने के लिए अंग्रेजी नामों का उपयोग कर रहे थे। पूछताछ के दौरान पता चला कि धोखेबाज अवैध तकनीकों, वीओआइपी कॉलिंग, लीगल इंटरनेशनल लॉन्ग डिस्टेंस गेटवे को दरकिनार करने में लगे हुए थे, और इस तरह सरकारी खजाने को गलत नुकसान पहुंचा रहे थे तथा खुद को गलत लाभ पहुंचा रहे थे।

नामीबिया के राष्ट्रपति गिंगोब का निधन

विंडहोक, 4 फरवरी (एजेंसियां)। नामीबिया के राष्ट्रपति हेज जी. गिंगोब का रविवार तड़के राजधानी विंडहोक के एक अस्पताल में कैंसर के इलाज के दौरान निधन हो गया। वह 82 वर्ष के थे।

राष्ट्रपति कार्यालय ने यह घोषणा की है। कार्यवाहक राष्ट्रपति नांगोलो म्बुम्बा ने नामीबियाई राष्ट्रपति के आधिकारिक सोशल मीडिया अकाउंट पर एक बयान में कहा अत्यंत दुख और अफसोस के साथ मैं आपको सूचित कर रहा हूं कि नामीबिया गणराज्य के राष्ट्रपति, हमारे प्रिय डॉ. हेज जी. गिंगोब का आज, रविवार 04 फरवरी 2024 को लगभग 00:04 बजे लेडी पोहाम्बा अस्पताल में निधन हो गया, जहां उनका उपचार चल रहा था। श्री गिंगोब ने 21 मार्च, 2015 से नामीबिया के तीसरे राष्ट्रपति के रूप में कार्य किया और 2019 में दोबारा पांच साल के कार्यकाल के लिए चुने गए। उन्होंने अन्य प्रमुख मंत्री और नेतृत्व भूमिकाओं के अलावा, 1990-2002 और 2012-2015 में प्रधानमंत्री के रूप में भी कार्य किया। बयान में कहा गया, उनकी मेडिकल टीम यह सुनिश्चित करने की पूरी कोशिश कर रही थी कि हमारे राष्ट्रपति ठीक हो जाएं। दुर्भाग्य से, उनके जीवन को बचाने के लिए टीम के उत्साही प्रयास के बावजूद श्री गिंगोब का निधन हो गया।

आज का इतिहास

1630-सिखों के सातवें गुरु हर राय का पंजाब के कीरतपुर में जन्म।
1679-जर्मन शासक लियोपोल्ड प्रथम ने फ्रांस के साथ शांति समझौते पर हस्ताक्षर किये।
1783-इटली के कालाब्रिया में भीषण भूकंप में 30000 लोग मारे गये।
1870-फिलाडेल्फिया के थियेटर में पहली बार चलचित्र दिखाया गया।
1900-अमेरिका और ब्रिटेन के मध्य पनामा नहर समझौते पर हस्ताक्षर।
1904-क्यूबा अमेरिका के कब्जे से मुक्त हुआ।
1917-मैक्सिको ने नया संविधान अंगीकृत किया।
1922-उत्तर प्रदेश के गोरखपुर के पास चौरी चौरा कस्बे में उग्र भीड़ ने थाने में आग लगा दी जिसमें 22 पुलिसकर्मियों की मौत हो गयी।
1924-रेडियो समय संकेतक जीएमटी का पहली बार प्रसारण रायल ग्रीनविच से हुआ।
1931-मैक्सिने डनलप पहली ग्लाइडर पायलट बनी।
1932-प्रसिद्ध बांग्ला कवि, आलोचक एवं शिक्षाविद शंख घोष का जन्म।
1961-ब्रिटिश समाचार पत्र संडे टेलीग्राफ के पहले संस्करण का प्रकाशन हुआ।
1970-अमेरिका ने नेवादा में परमाणु परीक्षण किया।
1990-भारतीय तेज गेंदबाज भुवनेश्वर कुमार का जन्म।
1994-सरायेवो के बाजार में नरसंहार हुआ। सरायेवो के मुख्य बाजार में एक मोर्टार बम के फटने से 68 लोगों की मौत हो गई थी और 200 लोग घायल हुए थे।
2004-पाकिस्तान के राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ़ ने परमाणु प्रौद्योगिकी के ग़लत इस्तेमाल के मामले में परमाणु वैज्ञानिक अब्दुल कादिर ख़ान को माफी दी।

बीमारी प्लास्टिक की बोतलें, टी बैग, बढ़ा रहे कैंसर का खतरा

कैंसर के बढ़ते मामलों के पीछे रोजमर्रा की चीजें भी जिम्मेदार

नई दिल्ली, 4 फरवरी (एजेंसियां)। विश्व कैंसर दिवस पर स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने चेतावनी देते हुए कहा कि घरों में इस्तेमाल होने वाली रोजमर्रा की वस्तुएं जैसे प्लास्टिक की बोतलें, टी बैग, सौंदर्य उत्पाद, ई-सिगरेट और हुक्का कैंसर के बढ़ते खतरे में योगदान दे रहे हैं। इस सप्ताह की शुरुआत में विश्व स्वास्थ्य संगठन की कैंसर एजेंसी इंटरनेशनल एजेंसी फॉर रिसर्च ऑन कैंसर (आईएआरसी) ने एक सख्त चेतावनी में कहा था कि 2050 तक नए कैंसर के मामलों में 77 प्रतिशत की वृद्धि होने का अनुमान है, जो सालाना 35 मिलियन से अधिक मामलों तक पहुंच जाएगा।

एजेंसी ने इस खतरनाक स्थिति के लिए जीवनशैली और पर्यावरणीय कारकों को जिम्मेदार ठहराया है, जिसमें तंबाकू, शराब, मोटापा और वायु प्रदूषण को प्रमुख दोषी माना गया है।

एक्शन कैंसर अस्पताल में मेडिकल ऑन्कोलॉजी के वरिष्ठ सलाहकार डॉ. जे.बी. शर्मा के अनुसार, घर में आमतौर पर इस्तेमाल होने वाली कई चीजें संभावित रूप से कैंसर के खतरे को बढ़ा रही हैं। डॉ. जे.बी. शर्मा ने आईएएनएस को बताया, पीने के पानी के लिए उपयोग की जाने वाली प्लास्टिक की बोतलों में माइक्रोप्लास्टिक हो सकते हैं और प्लास्टिक की थैलियों से गर्म चाय पीने या कुछ खाने से आपके शरीर में एपिक्लोरोहाइड्रिन जैसे हानिकारक रसायन प्रवेश कर सकते हैं, जिससे कैंसर की

- 2050 तक नए कैंसर के मामलों में 77 प्रतिशत की वृद्धि होने का अनुमान

संभावना बढ़ जाती है। इसके अलावा, आधुनिक चीजें जीवन को आसान बनाने के साथ-साथ जोखिम भी पैदा करती हैं। ओवन में प्लास्टिक के बर्तनों का उपयोग करने या नॉन-स्टिक कुकवेयर में पकाए गए भोजन का सेवन करने से व्यक्ति हानिकारक रसायनों के संपर्क में आ सकते हैं, जो संभावित रूप से कैंसर का कारण बन सकते हैं। विशेषज्ञों ने कहा कि जोखिम को कम करने और स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देने के लिए इन कारकों के बारे में जागरूकता महत्वपूर्ण है। इसके अलावा रोजमर्रा के सौंदर्य उत्पाद भी कैंसर के खतरे को बढ़ाते हैं। नेल पॉलिश और नेल पॉलिश रिमूवर में खतरनाक रसायन होते हैं, जिनमें टोल्यूनि, फॉर्मेल्डिहाइड और एसीटोन शामिल हैं, जिन्हें कार्सिनोजेन के रूप में जाना जाता है। धर्मशिला नारायण सुपरस्पेशलिटी अस्पताल में मेडिकल ऑन्कोलॉजी में वरिष्ठ सलाहकार डॉ. रजित चन्ना ने कहा, %%केमिकल युक्त हेयर प्रोडक्ट जैसे फॉर्मेल्डिहाइड और फॉर्मेल्डिहाइड रिलीजिंग एजेंट कैंसर का महत्वपूर्ण खतरा पैदा करते हैं। वहीं कुछ हेयर स्ट्रेटनिंग उत्पादों के उपयोग से अल्पकालिक और दीर्घकालिक दोनों तरह की स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं।

दुनिया को जानें

फिटनेस प्रेमियों के बीच रहने से स्ट्रोक के बाद भी उबरने की संभावना

सैन फ्रांसिस्को, 4 फरवरी (एजेंसियां)। अगर लोग अधिक मनोरंजन और फिटनेस प्रेमियों के बीच में रहें तो स्ट्रोक के बाद उनकी शारीरिक गतिविधियां बनी रहने की संभावना अधिक हो सकती है। यह बात एक शोध में सामने आई है। जर्नल अमेरिकन स्ट्रोक एसोसिएशन में प्रकाशित अध्ययन में पाया गया कि अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर में जो लोग हल्के स्ट्रोक से बच गए, उनकी शारीरिक गतिविधि का स्तर स्ट्रोक से पहले की तरह ही बनाए रखने की संभावना अधिक थी, जहां आस-पास अधिक मनोरंजन केंद्र और फिटनेस संसाधन हैं। पीएचडी, एमपीएच, सहायक प्रोफेसर और प्रमुख अध्ययन लेखक जेफरी विंग ने कहा, हमारे निष्कर्ष बताते हैं कि स्ट्रोक के रोगियों के साथ उनके क्षेत्र में उपलब्ध शारीरिक गतिविधि संसाधनों के बारे में बातचीत करना महत्वपूर्ण है, ताकि वे अस्पताल से छुट्टी के बाद भी अपनी रिकवरी जारी रख सकें।शोधकर्ताओं ने न्यूयॉर्क शहर में रहने वाले 333 लोगों के बीच उपलब्ध फिटनेस/व्यायाम केंद्रों, पूल और जिम और शारीरिक गतिविधि के बीच संभावित लिंक की जांच की।

प्रादेशिकी

हिल्सक्वीन में उमड़े सैलानी, होटलों में 70 फीसदी कमरे बुक

शिमला, 4 फरवरी (एजेंसियां)। हिमाचल प्रदेश में हिमपात देखने के लिए हिल्सक्वीन शिमला में सैलानियों की भारी भीड़ उमड़ी है। शहर के होटलों में 70 फीसदी कमरे बुक हैं। वीकेंड पर छुट्टी मनाने शिमला पहुंचे हजारों सैलानियों की शनिवार को हिमपात देखने की हसरत भी पूरी हो गई। रिज मैदान पर बर्फ के फाहे गिरते देख सैलानी झूम उठे। बर्फ में अठखेलियां करने के साथ सैलानी इस दृश्य को अपने फोन और कैमरे में भी कैद करते रहे। कुछ सैलानियों ने रील भी बनाई। शहर के अलावा सैलानी कुफरी और नारकंडा का रुख भी कर रहे हैं। गत गुरुवार को शिमला में हुई इस सीजन की पहले हिमपात के बाद चंडीगढ़, पंजाब, हरियाणा और दिल्ली के सैलानी शिमला का रुख कर रहे हैं।

परिवहन विभाग और निगम के 122 अभ्यर्थियों को सीएम धामी ने सौंपे नियुक्ति पत्र

देहरादून, 4 फरवरी (देशबन्धु)। मुख्यमंत्री पुष्कर धामी ने परिवहन निगम के अंतर्गत चालक एवं परिचालक पद के लिए 106 अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र प्रदान किए। इन अभ्यर्थियों को मृतक आश्रित के रूप में परिवहन विभाग में नियुक्ति दी गई है। परिवहन विभाग के अंतर्गत चयनित 16 सहायक लेखाकारों को भी सीएम धामी ने नियुक्ति पत्र सौंपा। इस दौरान सीएम धामी ने सड़क सुरक्षा माह के तहत राज्य स्तरीय सड़क सुरक्षा जन जागरूकता रैली का फ्लैग ऑफ किया। इसके अलावा उन्होंने सड़क सुरक्षा आधारित डाटा बुक और कैलेंडर का विमोचन भी किया। परिवहन विभाग से निशुल्क ड्राइविंग प्रशिक्षण लेने वाले के 16 महिलाओं को सीएम धामी ड्राइविंग लाइसेंस भी प्रदान किए।

मुख्यमंत्री पुष्कर धामी ने नियुक्ति पत्र पाने वाले परिवहन निगम और परिवहन विभाग के सभी अभ्यर्थियों को शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि अपनी नौकरी की शुरूआत से ही अपने कर्तव्यों का ईमानदारी, सच्ची लगन और कड़ी मेहनत से निर्वहन करें। चालक और परिचालक का परिवहन सेवा को सुचारू रखने में अहम दायित्व होता है। सरकारी सेवा में आत्म अनुशासन का होना बेहद जरूरी होता है। नौकरी की शुरुआती चरण से ही अपनी नियमित दिनचर्या के साथ काम करना शुरू करेंगे, तो यही दिनचर्या आदत में शामिल हो जाएगी।

सीएम धामी ने कहा कि उत्तराखंड

जागरूकता रैली को दिखाई हरी झंडी

में श्रद्धालुओं और पर्यटकों की संख्या में तेजी से इजाफा हो रहा है। इनकी सुख सुविधाओं को और बेहतर बनाने में भी परिवहन विभाग और परिवहन निगम पर बड़ी जिम्मेदारी होती है। युवाओं को रोजगार और स्वरोजगार से जोड़ने के लिए सरकार की ओर से लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। लोक सेवा आयोग और अधीनस्थ सेवा चयन आयोग के माध्यम से कई भर्ती प्रक्रियाएं गतिमान हैं। पिछले दो सालों में तेजी से भर्ती प्रक्रियाएं पूरी की गई हैं। सभी भर्तियां पूरी तरह से पारदर्शिता के साथ हों, इसके लिए सख्त नकल विरोधी कानून लागू किया गया है।

रितु बाहरी बनी उत्तराखंड हाईकोर्ट की पहली महिला मुख्य न्यायाधीश

■ अमरनाथ तिवारी

देहरादून, 4 फरवरी (देशबन्धु)। उत्तराखंड हाईकोर्ट की मुख्य न्यायाधीश के तौर पर रितु बाहरी ने आज शपथ ली। राज्यपाल ले.ज. गुरमीत सिंह ने देहरादून राजभवन में मुख्य न्यायाधीश पद की शपथ दिलाई। मुख्य न्यायाधीश के शपथ ग्रहण समारोह में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी समेत प्रदेश के कई गणमान्य लोग शामिल हुए। उत्तराखंड में सर्वोच्च पदों पर महिलाओं को जगह मिलने का सिलसिला जारी है। राज्य में ब्यूरोक्रेसी की बॉस के रूप में जहां राधा रतूड़ी को जगह दी गई है तो वहीं उत्तराखंड में विधानसभा अध्यक्ष के तौर पर भी ऋतु खंडूरी जिम्मेदारी संभाल रही हैं। इस बीच अब उत्तराखंड हाईकोर्ट की मुख्य न्यायाधीश पद पर भी रितु बाहरी ने शपथ ले ली है। राजभवन में शपथ ग्रहण समारोह के दौरान के लिए बाहरी ने मुख्य न्यायाधीश पद की शपथ ली। राज्यपाल ले.ज. गुरमीत सिंह ने मुख्य न्यायाधीश पद की शपथ दिलाई।

इस दौरान शपथ ग्रहण समारोह में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी और उनकी कैबिनेट के कुछ सदस्यों के साथ ही दूसरे कई गणमान्य लोग शामिल हुए। दरअसल

राज्यपाल गुरमीत सिंह ने दिलाई शपथ

रितु बाहरी हरियाणा और चंडीगढ़ हाई कोर्ट में न्यायमूर्ति के तौर पर जिम्मेदारी संभाल रही थी। उत्तराखंड हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश विपिन सांघी के 26 अक्टूबर को सेवानिवृत होने के बाद से ही इस पद पर स्थायी मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति होना लंबित था। इसके बाद वरिष्ठ न्यायाधीश मनोज कुमार तिवारी कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश के तौर पर जिम्मेदारी संभाल रहे थे। राष्ट्रपति के अनुमोदन के बाद रितु बाहरी के मुख्य न्यायाधीश पद पर नियुक्ति को लेकर अधिसूचना जारी कर दी गई थी।

इससे पहले सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम ने पंजाब और हरियाणा हाई कोर्ट की न्यायाधीश रितु बाहरी को नैनीताल हाईकोर्ट की मुख्य न्यायाधीश को लेकर सिफारिश की थी। रितु बाहरी का जन्म पंजाब में 1962 में हुआ और उन्होंने अपनी पढ़ाई चंडीगढ़ में की है। इसके अलावा पंजाब यूनिवर्सिटी से ही उन्होंने लॉ की डिग्री हासिल की है। पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट में वकालत शुरू करते हुए बाद में उन्हें पंजाब हरियाणा हाईकोर्ट का जज नियुक्त कर दिया गया। रितु बाहरी के पिता भी पंजाब हरियाणा हाईकोर्ट में जज रहे हैं।

सार संक्षेप

सिरसा चिकित्सा शिविर में 103 लोगों की हुई जांच

सिरसा। हरियाणा के सिरसा में श्री भार्गव सभा द्वारा नोहरिया बाजार स्थित भार्गव धर्मशाला में पहला निशुल्क आंख व नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 103 लोगों की जांच की गई तथा दवाइयां वितरित की गई। इस चिकित्सा शिविर में नेत्र रोग विशेषज्ञ डा. विवेक तथा दंत रोग विशेषज्ञ डॉ शीनम मित्तल ने मरीजों की जांच की तथा उचित परामर्श दिया। चिकित्सा शिविर के उद्घाटन अवसर पर श्री भार्गव सभा के प्रधान सुरेश भार्गव , कोषाध्यक्ष रवि भार्गव, उप सचिव राजाराम भार्गव , संरक्षक दीपक भार्गव, उप कोषाध्यक्ष महेंद्र भार्गव, नरेंद्र भार्गव , गोविंद भार्गव, भंवर लाल सोनी, ख्याली भार्गव, धर्मपाल, हिमांशु भार्गव, जतिन भार्गव सहित अन्य सदस्य मौजूद रहे। भार्गव सभा के प्रधान सुरेश भार्गव ने शिविर के उद्घाटन अवसर पर कहा कि भार्गव सभा धार्मिक कार्यक्रमों के साथ-साथ समाज सेवा में भी बढ़ चढ़कर भाग लेगी। उन्होंने बताया कि इस चिकित्सा शिविर से क्षेत्र के अनेक लोग लाभान्वित हुए हैं। उन्होंने बताया कि भविष्य में भी संस्था द्वारा यह नेक प्रयास जारी रखा जाएगा।

बद्रीनाथ मंदिर में नवनिर्मित शीला कक्ष का लोकार्पण

सिरसा। हरियाणा के सिरसा में उत्तराखंड प्रवासी सभा की ओर से वार्ड नंबर एक, महावीर कॉलोनी, चत्तरगढ़पट्टी स्थित श्री बद्रीनाथ मंदिर के स्थापना दिवस के अवसर पर संगीतमय अखंड रामायण एवं 12वां विशाल भंडारा लगाया गया। इस कार्यक्रम में ओडिशा के पूर्व राज्यपाल प्रो. गणेशीलाल ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। मंदिर कमेटी के प्रबंधकों ने प्रोफेसर गणेशी लाल का मंदिर परिसर में पहुंचने पर भव्य स्वागत किया। इस दौरान समाजसेवी मनीष सिंगला द्वारा मंदिर में अपनी माता स्व. सुशीला देवी की पुण्य स्मृति में निर्माणित शीला कक्ष का उद्घाटन प्रो. गणेशीलाल ने अपने कर कमलों से किया। इस मौके पर प्रो. गणेशीलाल ने कहा कि भगवान श्रीराम का गुणगान करने के लिए देश में हजारों कथाएं चल रही है। गंगा संस्कृति से आप लोग हैं। भगवान बद्रीनाथ के चरणों से निकलकर आप ज्ञानवान हैं। भगवान बद्रीनाथ के चरण कमल सिरसा में स्थापित होना, भारतवर्ष में होना और भारतवर्ष से बाहर भी बहुत बड़ी बात है। परमात्मा का सुमिरन करने वाला व्यक्ति अपने आप धन्य हो जाता है। जिस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण ने सुदामा के पैर धोए, ठीक उसी प्रकार आप भी कर्मयोगी बनें। ऐसा सौभाग्य हर किसी को नहीं, सिर्फ और सिर्फ नसीब वाले को मिलता है। उन्होंने समाज के लोगों व मंदिर कमेटी के पदाधिकारियों को हर संभव सहयोग के लिए आश्वस्त किया। इस दौरान मनीष सिंगला ने हनुमान जी व श्याम बाबा के दो मधुर भजन गाकर माहौल को भक्तिमय बना दिया। इस मौके पर महिला कीर्तन मंडल द्वारा भी भजनों की अमृतवर्षा की गई। वहीं संगीतमय रामायण का अखंड पाठ भी मंदिर में शुरू किया गया है।

सुडोकू 6457 का हल

5	3	1	6	9	2	8	4	7
8	2	7	4	1	5	6	9	3
9	6	4	8	3	7	5	2	1
4	5	2	3	7	9	1	6	8
3	7	9	1	8	6	4	5	2
6	1	8	2	5	4	7	3	9
1	4	5	9	2	8	3	7	6
2	8	6	7	4	3	9	1	5
7	9	3	5	6	1	2	8	4

मेयर चुनाव में धांधली के खिलाफ आप नेता करेंगे भूख हड़ताल: अहलूवालिया

चंडीगढ़, 4 फरवरी (एजेंसियां)। आम आदमी पार्टी के नेता चंडीगढ़ मेयर चुनाव में धांधली के खिलाफ लगातार विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं और अब पार्टी ने घोषणा की है कि उसके नेता सेक्टर 17 स्थित नगर निगम भवन के सामने भूख हड़ताल करेंगे।

आप चंडीगढ़ के सह-प्रभारी डॉ. सनी अहलूवालिया ने रविवार को विरोध प्रदर्शन के दौरान इसकी जानकारी देते हुए मीडिया को बताया कि रविवार से रोजाना पांच आप नेता (एक पार्षद और चार कार्यकर्ता) 24 घंटे की भूख हड़ताल करेंगे और उसके बाद अगले दिन अन्य पांच नेता 'लोकतंत्र के हत्यारों' के खिलाफ उपवास करेंगे। डॉ. अहलूवालिया ने कहा कि यह भूख हड़ताल तब तक जारी रहेगा जब तक मेयर चुनाव में धांधली के लिए जिम्मेदार पीठासीन अधिकारी अनिल मसीह के खिलाफ कार्रवाई नहीं की जाती और भाजपा के फर्जी मेयर को हटाया नहीं जाता। उन्होंने कहा कि श्री अनिल मसीह कोई अधिकारी नहीं हैं जिन्हें मेयर चुनाव की देखरेख के लिए नियुक्त किया गया था। वह भाजपा के अल्पसंख्यक विंग के सचिव रहे हैं। उन्होंने 30 जनवरी को चंडीगढ़ में 'लोकतंत्र की हत्या' की। इसलिए चंडीगढ़ के हमारे सभी वरिष्ठ आप नेताओं, प्रदीप छाबड़ा, चंद्रमुखी शर्मा, प्रेम लता और सभी पार्षदों ने इसके खिलाफ प्रदर्शन करने का फैसला किया है। उन्होंने कहा कि इसके अलावा आप चंडीगढ़ के प्रमुख स्थानों जैसे रोज गार्डन और सुखना लेक पर भी कैंडल मार्च निकालेगी। हम घर-घर जाकर लोगों को भाजपा की तानाशाही के खिलाफ जागरूक करेंगे।

श्री अहलूवालिया ने आगे कहा कि सोमवार सुबह 10:30 बजे सुप्रीम कोर्ट में भी इस मामले की सुनवाई होनी है और हमें यकीन है कि कोर्ट का फैसला हमारे पक्ष में होगा। उन्होंने कहा कि पूरे देश ने चंडीगढ़ मेयर चुनाव में भारतीय जनता पार्टी का बेईमानी भरा खेल देखा। हम हमेशा से कहते थे कि बीजेपी चुनाव जीतने के लिए गलत तरीकों का सहारा लेती है, लेकिन इस बार उनकी धांधली लाइव वीडियो में रिकॉर्ड हो गई है। उन्होंने कहा कि चुनाव के समय भाजपा पार्षद और मनोनीत सदस्य अनिल मसीह को कवर करने के लिए वेल में खड़े थे। मीडिया को भी चुनाव कवर करने की इजाजत नहीं थी। भाजपा पार्षदों ने हमारे पार्षदों को आपत्ति जताने से रोकने के लिए निशान लगाए। आप नेता ने कहा कि इसका मतलब है कि भाजपा चुनाव कराना ही नहीं चाहती थी। उनका मकसद धोखाधड़ी कर चुनाव जीतने का था। उन्होंने कहा कि इंडिया गठबंधन के पास कुल 20 वोट थे और भाजपा के पास केवल 16 वोट थे। फिर भी उन्होंने बलपूर्वक और अनुचित तरीकों से अपना मेयर बनाया। इम इसके खिलाफ लड़ेंगे। हम भाजपा की इन असंवैधानिक गतिविधियों का विरोध करते रहेंगे।

आज से शुरू हो रहा विधानसभा सत्र

देहरादून, 4 फरवरी (देशबन्धु)। आज से उत्तराखंड विधानसभा का विशेष सत्र शुरू होने जा रहा है। जिसकी सभी तैयारियां पूरी कर ली गई है। एक तरफ जहां सरकार इस सत्र में समान नागरिक संहिता के ड्राफ्ट को विधेयक के रूप में पेश करने जा रही है तो वहीं विपक्ष भी अपने मुद्दों के साथ तैयार है। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष करन माहरा का कहना है कि इस बार विधानसभा सत्र में पार्टी उत्तराखंड से जुड़े तमाम अहम विषयों को उठाने जा रही है। उन्होंने कहा कि पेपर लीक के आरोपी हाकम सिंह का बाहर आ जाना, केदारनाथ गर्भगृह में सोने की परत का मामला, अंकिता भंडारी मर्डर केस में वीआईपी का नाम सामने न आना, यूकेएसएसएससी भर्ती घोटाला, पटवारी पेपर लीक मामला, जोशीमठ भूधंसाव, सिलक्यारा टनल हादसा और बिगड़ती कानून व्यवस्था जैसे तमाम मुद्दे हैं, जिसको लेकर इस बार सदन में विपक्ष इन तमाम मुद्दों को उठाएगा।

करन माहरा का कहना है कि ऋषिकेश कर्णप्रयाग रेल लाइन के 120 किलोमीटर ट्रैक में करीब 80 किलोमीटर रेल लाइन टनल के अंदर से जा रही है। कांग्रेस की तरफ से सुरक्षा के मद्देनजर इसका जियोलॉजिकल सर्वे कराकर भू वैज्ञानिकों से बातचीत किए जाने की मांग की गई थी, लेकिन

■ सवालों की बौछार के लिए तैयार विपक्ष
■ इन मुद्दों पर सरकार को घेरेगी कांग्रेस

अभी तक इस दिशा में सरकार की ओर से कोई काम नहीं किया गया। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष करन माहरा ने कहा कि इसी तरह सिलक्यारा टनल में में भी बगैर रिपोर्ट आए दोबारा काम शुरू कर दिया गया है। जिला विकास प्राधिकरणों की तरफ से तुगलकी फरमान जारी किए जाते रहे हैं। उससे लोगों को खासी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। कांग्रेस इन विषयों को भी विधानसभा सत्र में उठाने जा रही है।

पुलिस ने किया रमेश हत्याकांड का खुलासा, कबूतर मारने पर हुआ था विवाद, हत्यारा गिरफ्तार

रुड़की, 4 फरवरी (देशबन्धु)। हरिद्वार के मंगलौर कोतवाली क्षेत्र में बीते दिनों अधेड़ की धारदार हथियार से हत्या कर शव को नाले में फेंकने वाली घटना का मंगलौर पुलिस ने खुलासा कर दिया है। पुलिस ने अधेड़ की हत्या करने वाले आरोपी अंकित को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने आरोपी के पास से हत्या में प्रयुक्त कुल्हाड़ी भी बरामद की है। वृद्ध और आरोपी के बीच विवाद कबूतर को मारने पर बढ़ा था।

मंगलौर कोतवाली पुलिस को 30 जनवरी को सूचना मिली थी कि मोहम्मदपुर जट गांव में अकेले रह रहे अधेड़ का बिस्तर खून से सना हुआ है। लेकिन अधेड़ गायब है। पुलिस के खोजबीन में अधेड़ का शव बुरी स्थिति में घटनास्थल से कुछ दूरी पर गंदे नाले से बरामद हुआ था। घटना की संवेदनशीलता को देखते हुए एसएसपी हरिद्वार प्रमेंद्र डोबाल के निर्देश पर कई पुलिस अधिकारियों ने फॉरेंसिक टीम और स्क्वायड डॉग के साथ घटनास्थल का निरीक्षण किया। घटना के खुलासे के लिए कई टीमें गठित की गईं।

पुलिस की जांच में पाया गया कि किसी धारदार हथियार से वीभत्स तरीके से हत्या को अंजाम दिया गया है। मृतक द्वारा मोबाइल फोन का इस्तेमाल न करना। लोगों से कम मिलना जुलना और अन्य भी किसी प्रकार की कोई इलेक्ट्रॉनिक एविडेंस न मिलने के कारण घटना का खुलासा करना हरिद्वार पुलिस के लिए एक बड़ा चैलेंज बन गया। घटना के संबंध में मृतक के भतीजे सुखपाल पुत्र रूपराम निवासी मोहम्मदपुर जट कोतवाली मंगलौर की लिखित शिकायत पर आईपीसी की धारा 302, 201 के तहत अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया।

इस दौरान पुलिस को जांच में बड़ी लीड मिली। पुलिस को पता चला कि संदिग्ध युवक अंकित (जो लगातार अपने ठिकाने बदलता है और जंगलों में निवास करता है) का मृतक से वार्तालाप होता था और लेकिन पिछले कुछ समय से विवाद भी था। मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने रविवार को नारसन क्षेत्र अंकित को हिरासत में लिया और पूछताछ शुरू की। पूछताछ में पुलिस को पता चला कि अंकित कई दिनों बाद राजस्थान से वापस लौटा है।

प्रदेशवासियों का विकास कांग्रेस की प्राथमिकता से बाहर : ठाकुर

धर्मशाला, 4 फरवरी (एजेंसियां) हिमाचल प्रदेश के नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर ने कहा कि कांग्रेस सरकार अपना एक चौथाई कार्यकाल पूरा कर चुकी लेकिन प्रदेश और प्रदेशवासियों का हित उनकी प्राथमिकता में कहीं नहीं है। सरकार सिर्फ़ अपने विधायकों और मंत्रियों को संतुष्ट करने में लगी है जबकि प्रदेश के लोग सरकार की जनविरोधी नीतियों के कारण सड़कों पर उतर गये हैं।

श्री ठाकुर ने कहा कि ऐसे में सवाल यह उठता है कि आम जन सरकार के विकास और सुविधाओं की बात यह सरकार कब करेगी। उन्होंने कहा कि हिमाचल के प्रदेश में पहली बार ऐसी सरकार आई है जिसका विकास से कोई लेना देना नहीं है। यह सरकार प्रदेश को फ़ॉरवर्ड गियर के बजाय रिवर्स गियर में ले जा रही है। उन्होंने कहा कि इस सरकार ने क़र्ज़ लेने,विकास न करने के साथ-साथ प्रदेश के लोगों से झूठ बोलने का रिकॉर्ड बनाया है।

नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि अपने पहले फ़ैसले से लेकर अब तक इस सरकार ने

हिमाचल के प्रदेश में पहली बार ऐसी सरकार आई है जिसका विकास से कोई लेना देना नहीं है। यह सरकार प्रदेश को फ़ॉरवर्ड गियर के बजाय रिवर्स गियर में ले जा रही है:- जयराम ठाकुर, नेता प्रतिपक्ष

एक भी जनहित के काम नहीं किए हैं। आज 14 महीनें के कार्यकाल में कांग्रेस के पास लोगों को बताने के लिए एक भी काम नहीं हैं। जिसे बताकर प्रदेश के लोगों को कह सकें कि हमने भी कुछ किया है। सिर्फ पिछली सरकार को कोस कर कांग्रेस के लोग सरकार चलाना चाह रहे हैं। आज विपक्ष ही नहीं कांग्रेस के विधायक और महत्वपूर्ण पदाधिकारी सरकार की कार्यप्रणाली और नीतियों पर सवाल उठा रहे हैं। इस सरकार से न प्रदेश के लोग खुश हैं नहीं कांग्रेस के विधायक मंत्री और पार्टी के नेता और पदाधिकारी। ऐसे में कांग्रेस का क्या भविष्य हो सकता है। अपने ही नेताओं द्वारा सरकार पर सवाल उठाना सरकार के नाकामी की कहानी कहने के लिए काफ़ी है।

श्री ठाकुर ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पूरे देश से मिल रहे अपार जनसमर्थन से यह साफ़ हो गया है कि देश के लोगों ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को प्रचंड बहुमत से तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने का निर्णय कर लिया है। इस बार देश के लोग प्रधानमंत्री को ऐतिहासिक जनमत के साथ विजयी बनाएँगे और इसमें हिमाचल प्रदेश के हर बूथ से भाजपा को जीत मिलेगी।

अवकाश के दिन 30 कर्मचारियों की टीम बजट तैयार करने के लिए सचिवालय पहुंची

शिमला, 4 फरवरी (देशबन्धु)। प्रदेश सरकार का दूसरा बजट तैयार करने के लिए योजना और वित्त विभागों के अधिकारियों व कर्मचारियों की तीस सदस्यीय टीम सचिवालय पहुंची। रविवार को भी पूरा दिन बजट को अंतिम रूप देने का कार्य चलता रहा। योजना विभाग से योजना सलाहकार डा. बसु सूद और वित्त विभाग के उप- सचिव प्रदीप जस्वाल सुबह ग्यारह बजे सचिवालय में पहुंचे। पूरा दिन बजट तैयार करने का काम चलता रहा। मुख्य सचिव प्रबोध सक्सेना नियमित तौर पर रोजाना सांय पांच बजे बजट संबंधी फीडबैक लेते हैं। बजट तैयार करके दस फरवरी को सरकार को सौंप दिया जाएगा। सुक्खू सरकार का दूसरा बजट महिलाओं और युवाओं पर केंद्रित रहेगा। बजट में दोनों वर्गों को प्रमुखता से रखा जा रहा है।

योजना सलाहकार डा. बसु सूद और उप- सचिव वित्त प्रदीप जस्वाल पहुंचे

राज्यपाल का अभिभाषण तैयार

सामान्य प्रशासन विभाग की ओर से राज्यपाल का अभिभाषण तैयार करने का काम पूरा कर लिया गया है। विधानसभा में बजट सत्र के पहले दिन राज्यपाल का अभिभाषण होगा, अभिभाषण में प्रदेश सरकार की एक साल की उपलब्धियों में प्रमुखता से 1.36 लाख कर्मचारियों को पुरानी पेंशन बहाल करने और प्राकृतिक आपदा से प्रदेश के लोगों को बाहर निकालने के लिए 4500 करोड़ का पैकेज जारी करने का उल्लेख शामिल रहेगा।

सात हजार एकल व विधवा नारियों को गृह निर्माण को मिलेगा अनुदान: बाली

शिमला। हिमाचल प्रदेश पर्यटन निगम के अध्यक्ष आरएस बाली ने कहा कि राज्य सरकार चालू वित वर्ष में सात हजार विधवा तथा एकल नारियों को गृह निर्माण के लिए डेढ़-डेढ़ लाख रुपए का अनुदान देगी ताकि महिला सशक्तिकरण की दिशा में आगे बढ़ सकें। श्री बाली ने कहा कि महिलाओं को स्वरोजगार के जोड़ने के लिए भी ग्रामीण विकास विभाग के माध्यम से कई कार्यक्रमों एवं योजनाओं का संचालन सुनिश्चित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि स्वयं सहायता समूहों को सुदृढ़ किया जाएगा तथा महिलाओं द्वारा तैयार उत्पादों को बिक्री के लिए उचित कदम भी उठाए जाएंगे ताकि स्वयं सहायता समूहों की आर्थिक स्थिति मजबूत हो सके। उन्होंने कहा कि स्वयं सहायता समूहों को अपने उत्पादों के विपणन के लिए कारगर कदम उठाए जाएंगे इस के लिए यूनिटी मॉल भी स्थापित किया जाएगा इसके साथ ही अपना कांगड़ा ऐप के माध्यम से भी उत्पादों को विक्रय करने के लिए कार्य योजना तैयार की गई है। बाली ने कहा कि महिला सशक्तिकरण की दिशा में प्रगाढ़ता के साथ प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू के कुशल नेतृत्व में जनकल्याणकारी योजनाएं आम जनमानस तक पहुंच रही हैं। उन्होंने कहा सरकार द्वारा अनेकों जनकल्याणकारी योजनाएं चलाई जा रही हैं जिनका सीधा लाभ लोगों को प्राप्त होता है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने 4000 अनाथ बच्चों को चिल्ड्रन ऑफ द स्टेट के रूप में अपनाया तथा दस माह में इस योजना को धरातल पर उतारा गया। वर्तमान राज्य सरकार ने देश का पहला कानून बनाया और मुख्यमंत्री सुख आश्रय योजना आरम्भ की, जिसके तहत 27 वर्ष की आयु तक उनकी देखभाल, उनकी उच्च शिक्षा तथा उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए सहायता देगी।

हिमाचल में जीतेंगे चारों लोकसभा सीटें : नड्डा

धर्मशाला, 4 फरवरी (एजेंसियां)। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा ने रविवार को दावा किया कि उनकी पार्टी हिमाचल प्रदेश की लोकसभा की चारों सीटें जीतेंगी। श्री नड्डा धर्मशाला के नजदीक गगल में भाजपा हिमाचल प्रदेश की प्रदेश स्तरीय संगठनात्मक बैठक में भाग लेने के दौरान इस आशय का दावा किया। बैठक में उनके साथ भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ राजीव बिंदल, नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर, केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सौदान सिंह, प्रदेश प्रभारी अविनाश राय खन्न, चुनाव प्रभारी श्रीकांत शर्मा, सह प्रभारी संजय टंडन, संगठन महामंत्री सिद्धार्थन, बिहारी लाल शर्मा, त्रिलोक कपूर व सिकंदर कुमार भी उपस्थित थे। बैठक में भाजपा प्रदेश पदाधिकारी, जिला अध्यक्ष, मोर्चा अध्यक्ष, प्रकोष्ठ संयोजक और विभिन्न प्रतिनिधियों ने भाग लिया। श्री नड्डा ने ढाई घंटे चली इस बैठक में लोकसभा चुनाव 2024 के मद्देनजर विभिन्न व्यवस्थाओं को लेकर मार्गदर्शन किया। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ राजीव बिंदल ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के अनेक-अनेक अभियान चल रहे हैं, जिसमें गांव चलो अभियान है जिसके कार्यों की समीक्षा बैठक में की गई।

बैठक में बूथ कैसे मजबूत हों, इसका चिंतन किया गया, मन की बात कार्यक्रम को कैसे और प्रभावशाली बनाया जाए, मन की बात कार्यक्रम में हर बूथ की बैठक हो अर्थात ग्राउंड जीरो के ऊपर नरेन्द्र मोदी सरकार की उपलब्धियां किस प्रकार से पहुंचे और इंडी गठबंधन और कांग्रेस पार्टी की जो नकारात्मक नीतियां हैं, जो परिवारवाद हैं इन सभी विषयों को लेकर श्री नड्डा ने जानकारी दी।

प्रादेशिकी

फर्रुखाबाद में पेशेवर बालू खनन माफियाओं पर मामला दर्ज

फर्रुखाबाद, 4 फरवरी (देशबन्धु)। खनन अधिकारी संजय प्रताप ने बालू का आए दिन खनन करने वाले माफियाओं के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज कराई है। रिपोर्ट में कोतवाली मोहम्मदाबाद के ग्राम नवादा निवासी वरुण राजावत ग्राम जैतपुर निवासी आयुष उर्फ मुरारी पुत्र उमेश, राहुल ठाकुर बहादुर नगला निवासी अंबर यादव उर्फ अमित ग्राम मलोखर निवासी कुंती यादव व उसके साथियों को आरोपी बनाया गया है। उक्त लोग संगठित रूप से बालू का खनन कर चोरी से बिक्री किया जाता है। इसी सूचना पर ग्राम दुर्गुपुर में 31 जनवरी को समय लगभग 2.33 बजे औचक छापेमारी की गई। मौके से एक ट्रेक्टर न्यू हालैंड मय ट्राली बालू लदी अवैध खनन कर परिवहन करते पाया गया। इस वाहन को रोकने का प्रयास किया गया जिस पर चालक वाहन छोड़ कर भाग गया।

उद्योगों की मांग के अनुरूप चलाएं पाठ्यक्रम : योगी

मुख्यमंत्री ने वृहद रोजगार मेला व नवचयनित अभ्यर्थियों के नियुक्ति पत्र वितरण समारोह को किया संबोधित

लखनऊ, 4 फरवरी (देशबन्धु)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि फरवरी 2023 में हुए ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में प्रदेश को 40 लाख करोड़ रुपए के निवेश प्रस्ताव मिले हैं। इनसे 1.10 करोड़ युवाओं को रोजगार और नौकरी मिलेगी। इसके लिए जरूरी है कि सभी आईटीआई, पॉलिटेक्निक जैसे संस्थान इंडस्ट्री की मांग को समझकर, उसके अनुरूप ट्रेड व पाठ्यक्रम तैयार करें। युवाओं को जाब व सुरक्षा की गारंटी मिलनी चाहिए।

मुख्यमंत्री रविवार को मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय परिसर में वृहद रोजगार मेला एवं नवचयनित अभ्यर्थियों के नियुक्ति पत्र वितरण समारोह को संबोधित कर रहे थे। उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन की तरफ से आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने कहा कि युवाओं को ट्रेनिंग से जोड़कर उन्हें आगे बढ़ाने की जरूरत है। मुख्यमंत्री इंटर्नशिप कार्यक्रम के साथ युवाओं को जोड़कर आगे बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। इस योजना में आधा मानदेय सरकार व आधा इंडस्ट्री द्वारा दिया जाता है। इससे युवा अपने शिक्षा के दौरान परिवार पर न निर्भर होकर आत्मनिर्भर रहेगा। उसको शिक्षा

ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के निवेश प्रस्तावों से 1.10 करोड़ लोगों को मिलेगी नौकरी : योगी आदित्यनाथ

के साथ मानदेय भी प्राप्त होगा। सीएम योगी ने इस बात और प्रसन्नता जताई कि एक वर्ष में दूसरी बार मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में वृहद रोजगार मेला का आयोजन हो रहा है। जिसमें लगभग 15 हजार युवाओं को रोजगार प्राप्त हो रहा है। उन्होंने कहा कि जो नौजवान आज यहां प्लेसमेंट नहीं पाए हैं वे प्रयास करते रहें, उनके लिए भी शासन द्वारा रोजगार सृजन का कार्य हो रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हर हाथ को काम आज उत्तर प्रदेश शासन की प्राथमिकता है। आज का उत्तर प्रदेश नए भारत का एक नया उत्तर प्रदेश है जहां हर क्षेत्र में सफलता के नित नए प्रतिमान स्थापित हो रहे हैं। विकास के नए माडल दिए जा रहे हैं।

उन्होंने कहा कि डाटा टेक्नोलॉजी से जुड़कर व्यावसायिक शिक्षा विभाग वैश्विक मानक के अनुरूप नए कोर्सेज के लिए कार्य कर रहा है। विगत दिनों से पूरे विश्व में कुशल एवं योग्य युवाओं की मांग हो रही है। शासन ने व्यावसायिक शिक्षा विभाग के माध्यम से इजरायल, रूस, जर्मनी से संवाद स्थापित करके युवाओं को रोजगार के लिए वहां भेजने का कार्य किया है।

इजरायल भेजने के लिए युवाओं का चयन किया गया है। वहां इन युवाओं को मुफ्त भोजन व आवास के साथ 1.5 लाख रुपये प्रतिमाह का वेतन प्राप्त होगा। यहां के युवा आईटीआई करके 1.5 लाख प्रतिमाह कमाएंगे तो है उनके घर के साथ पूरे गांव, राज्य व पूरे राष्ट्र में खुशहाली आएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि जर्मनी में भी अच्छे नर्सिंग प्रोफेशनल्स की अत्यधिक मांग है। हमें इसके लिए ध्यान देना होगा। एक प्लेसमेंट सेल के माध्यम से युवाओं की कैरियर काउंसलिंग कर उनको देश व विदेश में रोजगार के अवसर से जागरूक कराना होगा। युवाओं को उस देश के भाषा के लिए भी प्रशिक्षित करने के कार्यक्रम को भी शुरू करना होगा। प्रशिक्षण के दौरान ही उन्हें उस देश की भाषा सिखा दी जाएगी, तो उन्हें एक बेहतरीन पैकेज की प्राप्ति भी हो जाएगी। उन्होंने कहा कि मध्य पूर्व एशिया व दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में भी कुशल युवाओं की मांग है। इजरायल फिर से यहां के युवाओं के लिए मांग कर रहा है।

प्रदेश चहुमुखी विकास की ओर अग्रसर : अग्रवाल

वृहद रोजगार मेले में व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास एवं उद्यमशीलता विभाग के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) कपिलदेव अग्रवाल ने कहा कि सीएम योगी के कुशल नेतृत्व में प्रदेश चहुमुखी विकास की ओर अग्रसर है। भारत को विश्व गुरु बनने में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रदेश सरकार युवाओं को लगातार कौशल विकास और रोजगार से जोड़ने का अभियान चला रही है। आज उत्तर प्रदेश तीव्रगति से आगे बढ़ रहा है। नई शिक्षा नीति 2020 के तहत परम्परागत पाठ्यक्रम के साथ कौशल विकास के पाठ्यक्रम जोड़े गए हैं ताकि हर युवा के हाथ में हुनर हो। प्रदेश का युवा नौकरी लेने की बजाय नौकरी देने वाला बनें। कार्यक्रम को सांसद रविकिशन शुक्ल ने भी संबोधित किया।

संवेदनशील परीक्षा केंद्रों की निगरानी करेगी एलआईयू

लखनऊ, 4 फरवरी (देशबन्धु)। योगी सरकार यूपी बोर्ड की परीक्षाओं को नकलविहीन संपन्न कराने के लिए पूरी मुस्तैदी से काम कर रही है। इसके लिए व्यापक पैमाने पर तैयारी की गई है। सरकार का पूरा फोकस सुरक्षा व्यवस्था को लेकर है। इसके लिए स्ट्रांग रूम से लेकर उत्तर पुस्तिकाओं के कलेक्शन सेंटर की सुरक्षा की फूलप्रूफ योजना है। इसके साथ ही संवेदनशील और अतिसंवेदनशील परीक्षा केंद्रों की निगरानी के लिए एलआईयू की मदद ली जाएगी।

इसके साथ ही अन्य विभागों के साथ भी समन्वय स्थापित किया गया है, ताकि परीक्षाओं को सुचारू रूप से संचालित किया जा सके। उल्लेखनीय है कि यूपी बोर्ड की परीक्षाएं 22 फरवरी से शुरू हो रही हैं जो 9 मार्च तक चलेंगी। इस बार हाईस्कूल (29,47,325)और इंटरमीडिए (25,77,965) में कुल 55,25,290 छात्रों ने रजिस्ट्रेशन कराया है। वहीं बोर्ड की ओर से प्रदेश भर में कुल 8265 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं, जिनमें राजकीय परीक्षा केंद्रों की संख्या 566 है, सवित्त परीक्षा केंद्र 3479 और वित्तविहीन 4220 परीक्षा केंद्र हैं। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के सचिव दिव्यकांत शुक्ल ने बताया कि बोर्ड परीक्षा में सुरक्षा को लेकर सीएम योगी की मंशा के अनुरूप पुलिस प्रशासन की मदद से व्यापक तैयारी की गई है। इसके

बोर्ड परीक्षाओं को नकलविहीन संपन्न कराने के लिए योगी सरकार ने की तैयारी

तहत, स्ट्रांग रूम की सुरक्षा के लिए अनिवार्य रूप से सशस्त्र बल की व्यवस्था की जा रही है, ताकि पेपर लीक या किसी अन्य तरह की सिक्योरिटी ब्रीच न हो सके। इसके साथ ही, उत्तर पुस्तिका के कलेक्शन सेंटर पर भी सुरक्षा की व्यवस्था की जा रही है। प्रदेश के वो परीक्षा केंद्र जिन्हें संवेदनशील या अतिसंवेदनशील श्रेणी में रखा गया है, उनकी विशेष निगरानी एलआईयू के माध्यम से कराई जाएगी। संवेदनशील और अतिसंवेदनशील परीक्षा केंद्र वो हैं, जहां पहले नकल या अन्य तरह की अव्यवस्था का कोई ट्रैक रिकॉर्ड रहा है। इसी तरह, बाह्य नकल की रोकथाम के लिए संबंधित क्षेत्राधिकारी और थानाध्यक्ष की पेट्रोलिंग सुनिश्चित की जाएगी। इसके अतिरिक्त परीक्षा कार्य में बाधक तत्वों के विरुद्ध संज्ञेय अपराध के अंतर्गत कार्यवाही और अनुचित मुद्रण या प्रकाशन तथा अफवाह पर कठोर कार्यवाही के लिए योजना पर काम किया गया है।

सार संक्षेप

स्मार्ट फोन मिलने पर छात्र-छात्राओं के चेहरे खिले

मवाना। नगर स्थित कृषक डिग्री कॉलेज में स्मार्ट फोन वितरण को लेकर चले आ रहे विवाद पर रविवार को विराम लगा गया। उपजिलाधिकारी के हस्तक्षेप के बाद रविवार को छात्र छात्राओं को स्मार्ट फोन का वितरण किया गया। बता दे कि स्मार्ट फोन वितरण ना किये जाने पर एक सप्ताह पूर्व अंतिम वर्ष के छात्र छात्रा थाने परिसर में आयोजित समाधान दिवस में पहुंचकर उपजिलाधिकारी से कॉलेज प्रशासन के खिलाफ स्मार्टफोन वितरण ना किये जाने की शिकायत की थी। शिकायत मे पूर्व छात्र संघ महामंत्री अंकित अधाना ने कहा है की पहले तो कई माह की देरी के बाद आज स्मार्टफोन दिए गए उसमे भी सभी छात्रों को स्मार्टफोन नही दिए गए है काफी छात्रों के फोन के लिए पात्रता रखने के बाद भी स्मार्टफोन लिस्ट से नाम गायब था छात्रों ने स्मार्टफोन लिस्ट से नाम गायब होने की शिकायत जिलाधिकारी से करने की बात कही है। शनिवार को उपजिलाधिकारी के हस्तेक्षप पर रविवार को छात्र छात्राओं को स्मार्ट फोन का वितरण किया गया। वहीं अंकित अधाना का कहना है स्मार्ट फोन वितरण में कॉलेज प्रशासन द्वारा भेदभाव किया गया। एक सप्ताह पूर्व उपजिलाधिकारी से शिकायत करने वाले अधिकांश छात्र छात्राओं को रविवार को स्मार्ट फोन का वितरण नही किया गया।

गंगा कछार में मिला महिला का शव

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश में प्रयागराज के झूंसी क्षेत्र स्थित गंगा के कछार में रविवार को एक महिला का शव मिलने से सनसनी फैल गई। पुलिस सूत्रों ने बताया कि झूंसी थाना क्षेत्र के भटकार गांव की रहने वाली महिला कछार में शनिवार को सरपत काटने गई थी। काफी समय बाद घर नहीं लौटने तब परिजनो उसकी आस-पास तलाश किया। मृतका के पुत्र भारत निषाद ने गुमशुदगी की तहरीर दी थी। उन्होंने बताया कि सुबह परिजन दोबारा कछार में तलाश कर रहा थे कि उसे एक महिला को शरीर का आधा भाग बालू में दिख रहा था। पूरा बालू हटाने के बाद शव को बाहर निकाला गया । महिला की शिनाख्त बिटोलो देवी (45) के रूप में हुआ। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। उन्होंने बताया कि पुलिस को शव के पास से दो हसिया बरामद हुए हैं। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है।

श्रमिकों के बच्चों के लिए हर जनपद में बनेंगे अटल आवासीय विद्यालय

कौशांबी। उप्र के श्रम एवं सेवायोजन, समन्वय विभाग के मंत्री अनिल राजभर ने आज कहा कि प्रदेश के प्रत्येक जनपद में अटल आवासीय विद्यालय बनाये जाएंगे। राजभर ने कांशीराम गेस्ट हाउस, ओसा में श्रम विभाग के अटल आवासीय विद्यालय के संचालन एवं लेबर सेस के संबंध में समीक्षा श्रमिकों के बच्चों के लिए उप्र के 18 मण्डलों में बनाये गये अटल आवासीय विद्यालयों की उपयोगिता को देखते हुए अब इन्हें प्रदेश के प्रत्येक जनपद में बनाया जाएगा।

आने वाले समय में पुस्तकालय व सूचना विज्ञान में रोजगार के बढ़ रहे अवसर : सारिका

मेरठ, 4 फरवरी (देशबन्धु)। सामग्रीपूर्ण और तकनीकी युग में, पुस्तकालय और सूचना विज्ञान में रोजगार का क्षेत्र महत्वपूर्ण रूप से बढ़ रहा है। नई तकनीकों का आविष्कार और डिजिटल संस्कृति की बढ़ती मांग के साथ, यह क्षेत्र नौकरी के अवसरों की वृद्धि कर रहा है। पुस्तकालयों में डिजिटल पुस्तकों, इंटरनेट संस्करणों, और इंफॉर्मेशन साइंस के क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए विशेषज्ञ लोगों की आवश्यकता है। सूचना विज्ञानी, डेटा एनालिस्ट, और इंफॉर्मेशन स्पेशियलिस्टों की मांग में वृद्धि हो रही है, जो आगे बढ़ने वाले समय में रोजगार के अवसर प्रदान करेगा। इसमें स्थानीय समुदायों को सामूहिक और व्यक्तिगत स्तर पर समृद्धि के लिए अधिक संबंधित बनाने का भी अवसर है। पुस्तकालय स्थानीय समुदायों को उच्चतम गुणवत्ता वाली तकनीकी शिक्षा प्रदान करके उन्हें विकसित कर सकते हैं, जिससे नौकरियों के क्षेत्र में उत्पादकता बढ़ेगी। इस प्रकार, पुस्तकालय और सूचना विज्ञान के क्षेत्र में रोजगार का भविष्य सुरक्षित है और युवा पीढ़ी के एक रोजगार संभावनाओं से भरपूर है।

डीएवी में आशीर्वाद समारोह का हुआ आयोजन

गीतों के मेडले पर प्रस्तुत नृत्य ने विद्यार्थियों को किया रोमांचित

मेरठ, 4 फरवरी (देशबन्धु)। डीएवी सेंटेनरी पब्लिक स्कूल, मेरठ में सत्र 2023-2024 के बारहवीं के छात्रों को भावी भविष्य हेतु शुभेच्छा प्रदान करने के लिए आशीर्वाद समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक परंपरा का निर्वाह करते हुए उत्साह तथा सकारात्मक ऊर्जा का संचार करने के लिए यज्ञ आहुति द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ अल्पना शर्मा (क्षेत्रीय अधिकारी डीएवी स्कूल यूपी जोन ए) तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉक्टर विनीत त्यागी (प्रधानाचार्य डीएवी, हापुड़) उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथि का आभार व्यक्त करते हुए उन्हें सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक नई पौध भेंट किया गया। तत्पश्चात दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम को गति प्रदान की गई। डॉ विनीत त्यागी ने विद्यार्थियों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि

ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, जहां डीएवी के विद्यार्थियों ने अपना विशिष्ट स्थान न बनाया हो। उन्होंने कहा कि मंजिल उन्हें मिलती है, जिनके सपनों में जान होती है,पंखों से कुछ नहीं होता हौसलों से उड़ान होती है। सुपरवाइजर, संजीव शर्मा ने भी विद्यार्थियों को आशीर्वचन प्रदान किया। सत्र 2023-2024 की हेड गर्ल, सोनाली शर्मा तथा हेड ब्वाय, देवेश कुमार ने डॉ. अल्पना शर्मा तथा अपर्णा जैन को शाल देकर उनका अभिवादन किया। कक्षा 12वीं के सोनाली शर्मा तथा देवेश कुमार ने अपने अध्यापकों का आभार व्यक्त किया। तत्पश्चात 12वीं के विद्यार्थियों ने नृत्य प्रस्तुत कर दर्शकों को मंत्र मुग्ध कर दिया। कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों ने पंजाबी गानों की मेडले पर नृत्य प्रस्तुत कर पंजाब की संस्कृति को जीवंत कर दिया। कक्षा 12वीं के विद्यार्थियों के लिए 1 मिनट प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने रुचि पूर्वक भाग लिया।

धमकाने वालों पर होगी कार्रवाई : मुकेश राजपूत

फर्रुखाबाद, 4 फरवरी (देशबन्धु)। सपा प्रत्याशी की सभा में राम नाम का जयकारा लगाने वाले को धमकाने वाले पर कार्रवाई की जाएगी। यह बात रविवार को यहां भाजपा सांसद मुकेश राजपूत ने कहीं। सांसद राजपूत भाजपा के केंद्रीय कार्यालय आवास विकास में पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। मुकेश राजपूत ने कहा कि यह मोदी और योगी की सरकार है। यह सपा की सरकार नहीं है। जिसमें राम नाम लेने वाले को जेल में डाल दिया जाए। यहां तो राम राज्य की संरचना करने वालों की सरकार है। इस सरकार के समय जिसने राम नाम का जयकारा लगाने वाले को धमकाया है उसके विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जाएगी। किसी भी कीमत पर उसे छोड़ा नहीं जाएगा। सांसद ने कहा कि राम तो सभी के हैं। वह कण-कण में व्याप्त है। हम किसी भी धर्म के विरोधी नहीं है। जो धर्म जो व्यक्ति मानता है वह अपनी पूजा करें। लेकिन राम नाम लेने वाले को धमकाने धमकाने का काम करने वाले ने खुली कुंडली दिखाई है। इसलिए उसके विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जाएगी। किसी भी कीमत पर उसे छोड़ा नहीं जाएगा। राम का नाम लेने के लिए प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र है।

सो रहे व्यक्ति की गला रेतकर हत्या

- **पुलिस ने हत्या के 24 घटें बाद किया खुलासा**
- **गल्ले से रुपए निकालने को लेकर हुआ था एक माह पूर्व विवाद**

मवाना, 4 फरवरी (देशबन्धु)। थाना क्षेत्र के गांव नगला चांद शुक्रवार देर रात घर में सो रहे 70 वर्षीय रतन की देर रात गला रेतकर हत्या कर दी गई थी। रविवार को थाना पुलिस ने मामले का खुलासा करते हुए गांव निवासी नाबालिक किशोर को रतन की हत्या के मामले में गिरफ्तार कर लिया। थाना पुलिस ने किशोर पूछताछ में मंडल के विवाद को लेकर उसकी हत्या करने का खुलासा किया। बता दे कि नगला चंद निवासी 70 वर्षीय रतन अहेरी गांव में ही परचून की दुकान कर परिवार का पालन पोषण करता था। रोज की तरह शुक्रवार की शाम को भी वह दुकान बंद कर पीछे की ओर अपने घर में अकेला सो रहा था। मृतक का एक बेटा दिल्ली में फुल बेचने का कार्य करता है तो दुसरा बेटा बेटे श्यामसुंदर पत्नी लक्ष्मी के साथ गांव में ही रहती है। शुक्रवार की देर रात रतन की टोकरे बनाने वाली दरांती से गला रेतकर हत्या कर दी गई थीं। इस मामले में थाना पुलिस ने शनिवार को गांव के ही तीन लोगों को हिरासत में लिया था। रविवार को थाना पुलिस ने मामले खुलासा करते हुए नगला चंद निवासी 16 वर्षीय शनि पुत्र कैलाश को हिरासत मे ले लिया। थाना प्रभारी थाना प्रभारी विजय बहादुर ने बताया कि आरोपी किशोर ने पूछताछ में बताया कि उसने करीब एक महीने पूर्व मृतक दुकानदार की दुकान के गल्ले से कुछ रुपए निकाले थे। जिसे लेकर मृतक दुकानदार रतन ने उसके साथ मारपीट की उसके बाद रतन ने दुकान से मंडल देने से इन्कार किया तो दोनों में विवाद हो गया। शनि ने बताया कि रतन अकेला दुकान बंद करने के बाद घर में सोता था।

जिसका फायदा उठाकर रात को शराब के नशे में शनि ने घर में अकेले सो रहे रतन की पास ही में रखी टोकरी बनाने वाली तेज धार की दरांती से गला रेतकर हत्या कर दी और मौके से फरार हो गया था। पुलिस की टीम ने हत्या के बाद मामले की गहनता से जांच की।

लाखों के गबन में जेई गिरफ्तार

फर्रुखाबाद, 4 फरवरी (देशबन्धु)। थाना शमशाबाद पुलिस ने ग्राम पंचायत के विकास कार्यों के धन का गवन करने वाले जूनियर इंजीनियर अशोक कुमार राजपूत को गिरफ्तार कर लिया। जनपद एटा के थाना मारहरा के ग्राम सिरसा बदन निवासी अशोक कुमार राजपूत पुत्र महेंद्र पाल लघु सिंचाई विभाग फतेहगढ़ में अवर अभियंता के पद पर तैनात थे। वह थाना मऊ दरवाजा के मोहल्ला अमीन खां में रहते हैं। पुलिस ने गिरफ्तार जी राजपूत को पुलिस लाइन में मीडिया के सामने पेश किया। पुलिस अधीक्षक विकास कुमार ने मीडिया को बताया कि 5 जनवरी 23 को प्रधानों ने अधिकारियों से शिकायत की थी कि ग्राम पंचायत बेहटा बल्लू कासिमपुर तराई, समेचीपुर चितार एवं गुटेटी दक्षिण में विकास कार्य हेतु आए 1627 343 रुपयों का गबन ग्राम विकास अधिकारी कपिल देव त्रिपाठी के द्वारा किया गया। ब्लाक शमशाबाद के एडीओ पंचायत आफाक हुसैन ने थाना शमशाबाद में ग्राम पंचायत सचिव एवं ग्राम विकास अधिकारी कपिल देव त्रिपाठी के विरुद्ध विकास कार्य हेतु आए 1627 343 रूपयों के गबन करने की रिपोर्ट दर्ज कराई थी।

चौधरी चरण सिंह विवि में फैकेल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का आयोजन कल

मेरठ, 4 फरवरी (देशबन्धु)। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के सर छोटूराम अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान के कंप्यूटर साइंस व एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग विभाग के संयुक्त तत्वाधान में पांच फरवरी से एक छह दिवसीय फैकेल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का आयोजन किया जा रहा है। यह कार्यक्रम ऑनलाइन मोड में होगा जिसका विषय रहेगा द रिसेंट ट्रेंड्स आफ बिग डाटा एंड आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस इन द फील्ड ऑफ कंप्यूटर साइंस एंड एग्रीकल्चर इंजिनियरिंग। कार्यक्रम संयोजक व कंप्यूटर साइंस विभाग के समन्वयक मिलिंद तथा कार्यक्रम सहसंयोजक जे आर बैंथम के अनुसार 6 दिनों तक चलने वाले इस ऑनलाइन फैकेल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम में देश के लगभग 13 विश्वविद्यालयों से डायरेक्टर अथवा प्रोफेसर्स स्पीकर्स के रूप में हिस्सा लेंगे जिस दौरान वें अभी तक रजिस्टर्ड हुए लगभग 1000 शिक्षकों/प्रतिभागियों को वर्तमान समय में कंप्यूटर साइंस और एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग के क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और बिग डाटा से जुड़े लेटेस्ट ट्रेंड्स के बारे में जानकारी देंगे जिसका सीधा लाभ शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को होगा। पांच फरवरी से प्रात: 11:30 बजे उक्त कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र का शुभारंभ आनलाइन माध्यम से डीटीयू नई दिल्ली के कुलपति प्रो.धन्नजय जोशी द्वारा सीसीएसयू की कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला, पूर्व प्रतिकुलपति सीसीएसयू व वर्तमान में कार्यपरिषद की सदस्या प्रो. वाय. विमला, समन्वयक आइक्यूएसी सीसीएसयू प्रो. मृदुल कुमार गुप्ता, निदेशक अकादमिक सीसीएसयू प्रो. संजीव कुमार शर्मा, निदेशक शोध सीसीएसयू प्रो. बीरपाल सिंह की मौजूदी में संपन्न हुआ।

आयोजन *चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय में विशेष व्याख्यान का आयोजित*

अनुभवों के माध्यम से विभिन्न शोधार्थियों को किया प्रेरित

मेरठ, 4 फरवरी (देशबन्धु)। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ के गणित विभाग में ऑपरेशनल रिसर्च सोसाइटी मेरठ चैप्टर के द्वारा मैथमेटिकल एस्पेक्ट ऑफ इन्वेंटरी प्रॉब्लम्स विषय पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस व्याख्यान में मुख्य वक्ता के रूप मे प्रोफेसर बिस्वजीत सरकार उपस्थित रहें जो वर्तमान में योनसई विश्वविद्यालय, साऊथ कोरिया में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं।

इन्वेंटरी मैनेजमेंट और सप्लाई चैन मैनेजमेंट के क्षेत्र में सस्टेनेबिलिटी के महत्व से अवगत कराया

कार्यक्रम का शुभारंभ ऑपरेशनल रिसर्च सोसाइटी मेरठ चैप्टर के अध्यक्ष प्रोफेसर शिवराज तथा मुख्य वक्ता प्रोफेसर बिस्वजीत सरकार के द्वारा मां सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्वलन कर किया गया। इसके बाद विभाग के विभाग अध्यक्ष प्रोफेसर शिवराज सिंह ने मुख्य वक्ता प्रोफेसर विश्वजीत सरकार को पुष्प प्रदान कर उनका स्वागत किया। इस व्याख्यान में, मुख्य वक्ता ने अपने विस्तृत अनुभवों के माध्यम से विभिन्न शोधार्थियों

को प्रेरित किया और सतत विकास के लिए इन्वेंटरी मैनेजमेंट और सप्लाई चैन मैनेजमेंट के क्षेत्र में सस्टेनेबिलिटी के महत्व से सभी को अवगत कराया। इस व्याख्यान के माध्यम से, विद्यार्थियों और उद्यमियों को सतत विकास के मार्ग में इनवेंट्री मैनेजमेंट से सप्लाई चेन मैनेजमेंट तक के सफर को अपने विभिन्न शोध पत्रों के माध्यम से विस्तृत में समझाया। इस लेक्चर का मुख्य उद्देश्य प्रोत्साहित करना था कि कैसे सूची प्रबंधन से सप्लाई चेन प्रबंधन की ओर जाने के बारे में जानकारी और अध्ययन के माध्यम से विपणन और आपूर्ति चेन के प्रबंधन को सतत विकास की ओर अग्रसर कर सकते हैं। इस लेक्चर में संग्रहीत ज्ञान का उपयोग करके, बड़े उद्योग व व्यापारियों के लिए हरे आपूर्ति चेन प्रबंधन (जीएससीएम) के महत्वपूर्ण तत्वों का विश्लेषण किया गया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. धर्मेंद्र यादव ने धन्यवाद ज्ञापन कर कार्यक्रम का समापन किया। कार्यक्रम में डॉक्टर हिमानी देम, डॉ. धर्मेंद्र यादव, डॉ. संजीव कुमार, डॉक्टर नेहा सक्सैना, प्रोफेसर अशोक, डॉक्टर जयविंदर तोमर, विभाग के विभिन्न शोधार्थी गण उपस्थित रहे। कार्यक्रम के संचालन में वैशाली, उम्मेफरवा, दीप्ति, रश्मि, आस्था और दीपि ने सहयोग किया।

प्रबंध निदेशक की अध्यक्षता में बैठक आयोजित

मेरठ, 4 फरवरी (देशबन्धु)। प्रबन्ध निदेशक, श्रीमती चैत्रा वी.की अध्यक्षता में डिस्कॉम मुख्यालय, ऊर्जा भवन, मेरठ के सभागार में मासिक एसेसमेन्ट को बढ़ाए जाने की रणनीति, शतप्रतिशत मासिक बिलिंग सुनिश्चित कराने, 5 से 9 किलोवाट की एमआरआई द्वारा रीडिंग, अनुरक्षण माह एवं टैरिफ चेन्ज आदि बिन्दुओं पर समीक्षा की गयी।

प्रबन्ध निदेशक ने कहा उपभोक्ताओं को ग्रीष्म काल में बेहतर विद्युत आपूर्ति उपलब्ध कराने के मद्देनजर अनुरक्षण माह के तहत सभी बिजलीघरों का निरीक्षण, ट्रांसफार्मर की प्रिवेन्टिव मेन्टेनेन्स आदि का कार्य शीघ्रता से पूरा करा लिया जाये। लोड एनहैंसमेंट अभियान को प्रभावी रूप से लागू किया जाये। प्रबन्ध निदेशक ने निर्देश दिये कि कन्ज्यूमर टर्नअप बढ़ाकर राजस्व वसूली में तेजी लायी जाये। बैठक में प्रबन्ध निदेशक ने फीडरवार विद्युत लाईन हानियों की समीक्षा की। उन्होंने उपस्थित अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिये कि मानक से कम बिलिंग, टर्नअप एवं थ्रू-रेट किसी भी दशा में बर्दाश्त नही किया जाएगा।

'शानदार एक्ट्रेस' संजीदा शेख ने इमोशनल सीन को मेरे लिए बहुत आसान बना दिया : ऋतिक रोशन

मुंबई। बॉलीवुड स्टार ऋतिक रोशन ने अपनी 'फाइटर' की को-स्टार संजीदा शेख की प्रशंसा की और उन्हें एक 'शानदार एक्टर' कहा। एक्ट्रेस ने फिल्म के इमोशनल सीन में उनके लिए एक्टिंग को आसान बना दिया। एक फैन ने एक्स पर 'फाइटर' में संजीदा के परफॉर्मेंस की प्रशंसा की थी। यूजर ने लिखा- डियर संजीदा। यह आपके लिए एक सराहना वाला ट्वीट है। फाइटर फिल्म में आप बेदाग दिखे। ऋतिक के साथ आपका इमोशनल सीन फिल्म के बेहतरीन सीन में से एक है। इसे खूबसूरती से किया गया। ऋतिक ने बिना कुछ कहे उस फैन को जवाब दिया और लिखा, संदीप, मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूं। संजीदा एक शानदार एक्ट्रेस हैं! उन्होंने सीन में इमोशन्स को व्यक्त करना मेरे लिए बहुत आसान बना दिया।

भूल जाना और खुद को आगे बढ़ाना जरूरी है : सारा खान

मुंबई, 4 फरवरी (एजेंसियां)। एक्ट्रेस सारा अली खान ने खुद के साथ समय बिताने के लिए समय निकाला और ज्ञान की कुछ बातें साझा करते हुए कहा कि भूल जाना और खुद को आगे बढ़ाना महत्वपूर्ण है।

सारा ने अपने इंस्टाग्राम पर सनसेट को देखते हुए कई तस्वीरें साझा कीं। उन्होंने तस्वीरों को शेयर करते हुए कैप्शन दिया, कभी-कभी हम सभी बातचीत करते हुए खूबसूरत पल बिताते हैं। अपने आप को यह याद दिलाने के लिए सनसेट देखना ज़रूरी है कि समय किसी का इंतजार नहीं करता, और आप मुट्ठी में रेत को पकड़कर नहीं बैठ सकते।

उन्होंने कहा कि तो भूलने और खुद को आगे बढ़ाने का प्रयास करें।

वर्कफ्रंट की बात करें तो, सारा कई प्रोजेक्ट्स में नजर आएंगी। उनके पास 'ऐ वतन मेरे वतन', 'मेट्रो इन दिनो' और 'मर्डर मुबारक' हैं।

वैज्ञानिकों का पीसीओएस को लेकर खुलासा

पीसीओएस से पीड़ित महिलाओं को याददाश्त संबंधी समस्याएं

■ पॉलीसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम एक सामान्य प्रजनन विकार ■ रोगी को मुंहासे, बांझपन व खराब चयापचय जैसी स्वास्थ्य समस्याएं

सैन फ्रांसिस्को, 4 फरवरी (एजेंसियां)। एक शोध से यह बात सामने आई है कि पॉलीसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम (पीसीओएस) से पीड़ित महिलाओं को मध्यम आयु में याददाश्त से जुड़ी समस्याएं पैदा हो सकती हैं। जर्नल न्यूरोलॉजी में प्रकाशित एक शोध में यह बताया गया है कि पीसीओएस एक हार्मोनल डिसऑर्डर है जो अनियमित मासिक धर्म और एण्ड्रोजन नामक हार्मोन के बढ़े हुए स्तर से होता है। इसमें रोगी को मुंहासे, बांझपन और खराब चयापचय जैसी स्वास्थ्य समस्याएं आ सकती है।अमेरिका के कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के एमडी, अध्ययन लेखक हीथर जी. हडलस्टन ने कहा कि पॉलीसिस्टिक ओवरी

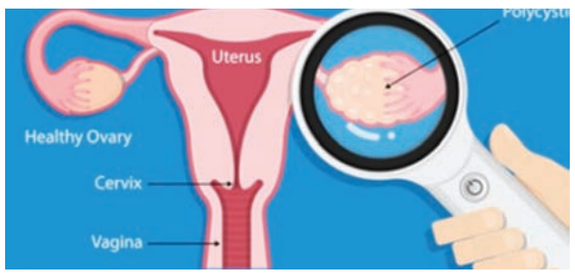

सिंड्रोम एक सामान्य प्रजनन विकार है जो लगभग 10 प्रतिशत महिलाओं को प्रभावित करता है।हीथर जी. हडलस्टन ने कहा कि इसे मोटापे और मधुमेह जैसी चयापचय संबंधी बीमारियों से जोड़ा गया है जो हृदय की समस्याओं का कारण बन सकती हैं, लेकिन इस बारे में कम ही जानकारी है कि यह स्थिति मस्तिष्क के स्वास्थ्य को कैसे प्रभावित करती है। हमारे परिणाम बताते हैं कि इस समस्या से जूझ रही महिलाओं की याददाश्त और सोचने की क्षमता कम हो जाती है और मध्य जीवन में इसका ज्यादा असर देखने को मिलता है।शोध में कहा गया है कि यह विकार किसी महिला की जीवन की गुणवत्ता, करियर की सफलता और वित्तीय सुरक्षा में बाधा नहीं बन सकता। इस शोध में 907 महिलाओं को शामिल किया गया। जिनकी आयु 18 से 30 वर्ष के बीच थी।शोध के दौरान महिलाओं को विभिन्न रंगों में शब्दों की एक सूची दिखाई गई और शब्द को पढ़ने के बजाय उसके रंग की पहचान करने के लिए कहा गया। इस परीक्षण में शोधकर्ताओं ने पाया कि पीसीओएस से पीड़ित महिलाओं का औसत स्कोर बिना इस स्थिति वाले लोगों की तुलना में लगभग 11 प्रतिशत कम था। शोधकर्ताओं ने पाया कि पीसीओएस से पीड़ित महिलाओं को स्मृति, ध्यान और मौखिक क्षमताओं में विशेष रूप से पांच परीक्षणों में से तीन में इस स्थिति से रहित लोगों की तुलना में कम स्कोर मिला। हडलस्टन ने कहा कि इस समस्या से निपटने में कार्डियोवैस्कुलर एक्सरसाइज सहायक हो सकती है।

शुरुआत में ही जांच से भारत में 80 फीसदी कैंसर का हो सकता है इलाज

नई दिल्ली, 4 फरवरी (एजेंसियां)। विश्व कैंसर दिवस पर विशेषज्ञों ने कहा है कि भारत में कैंसर के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। उन्होंने सुझाव देते हुए कहा कि अगर पहले ही कैंसर के मामलों का पता लगा लिया जाए तो इससे लोगों की जान बचाई जा सकती है। हर साल 4 फरवरी को विश्व कैंसर दिवस मनाया जाता है। ऐसे में इस बार विश्व कैंसर दिवस की थीम 'क्लोज द केयर गैप' रखा गया है।

भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद, राष्ट्रीय कैंसर रजिस्ट्री कार्यक्रम के आंकड़ों की मानें तो देश में कैंसर के मामले 2022 में 14.6 लाख थे जिनका 2025 में बढ़कर 15.7 लाख होने का अनुमान है।

2025 में बढ़कर 15.7 लाख होने का अनुमान

यूनिक हॉस्पिटल कैंसर सेंटर के मुख्य ऑन्कोलॉजिस्ट आशीष गुप्ता ने बताया कि भारत में कैंसर पर जीत हासिल करने के लिए पहला कदम लोगों को इसके प्रति जागरूक करना है, जिससे कैंसर का जल्द पता लगाने में मदद मिल सके। यदि पहली और दूसरी स्टेज में इस बीमारी का पता लगा लिया जाए तो 80 प्रतिशत से अधिक मामलों में कैंसर का इलाज संभव है।

देश में कैंसर मुक्त भारत अभियान का नेतृत्व कर रहे आशीष गुप्ता ने कहा कि लक्षण विकसित होने और इस पर ध्यान जाने तक कई मरीज कैंसर के स्टेज तीन या चार में पहुंच चुके होते हैं, तब इलाज की दर 25 प्रतिशत से भी कम हो जाती है। तीन सामान्य कैंसर ओरल, स्तन और गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर की रोकथाम, नियंत्रण और जांच के लिए जनसंख्या आधारित पहल अपनाई जानी चाहिए, जो भारत में सबसे अधिक पाए जाने वाले कैंसर हैं।

ऐसे में कैंसर जागरूकता अभियान का लक्ष्य पूरे भारत में एक मिलियन लोगों तक पहुंचना है। फोर्टिस मेमोरियल रिसर्च इंस्टीट्यूट के हेमेटोलॉजी और बोन मैरो ट्रांसप्लांट के प्रधान निदेशक राहुल भार्गव के अनुसार, मल्टी कैंसर प्रारंभिक पहचान परीक्षण, एक प्रकार की तरल बायोप्सी है जिसके जरिए प्रारंभिक चरण में कैंसर का पता लगाने में मदद मिलती है और इसके लिए ही इसका उपयोग किया जाता है। ताकि इस जानलेवा बीमारी से लोगों को बचाया जा सके।

भार्गव ने बताया कि मशीन-लर्निंग एल्गोरिदम का उपयोग कर ये परीक्षण डीएनए और प्रोटीन प्रोफाइल के आधार पर ट्यूमर की संभावित उत्पत्ति की पहचान करते हैं। एमसीईडी परीक्षण कैंसर का पता लगाने में क्रांति लाने की अपार संभावनाएं रखते हैं।

नई दिल्ली के मैक्स सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल रेडिएशन ऑन्कोलॉजिस्ट विनीत नाकरा ने बताया कि ज्यादातर कैंसर का बाद में ही पता चल पाता है। इसमें खासतौर पर कोई लक्षण नहीं दिखाई देते। ओवेरियन और गैस्ट्रोसोफेजियल कैंसर ऐसे ही खतरनाक रुप हैं जिनका देरी से पता चल पाता है। जिससे उपचार में देरी हो जाती है। विशेषज्ञों ने आगे कहा कि कैंसर के पता चलने के बाद पहले दिन से शुरू होने वाले सही उपचार सबसे महत्वपूर्ण है।

गुप्ता ने कहा कि कीमोथेरेपी, इम्यूनोथेरेपी, टारगेटेड थेरैपी और हार्मोनल थेरेपी ने कैंसर के इलाज की दर में काफी सुधार किया है।

गूगल ने एआई मॉडल में किए बड़े बदलाव, बार्ड का नाम बदलकर किया जेमिनी

नई दिल्ली, 4 फरवरी (एजेंसियां)। गूगल अपने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) मॉडल में कुछ बड़े बदलावों की योजना बना रहा है, जिसमें कथित तौर पर बार्ड का नाम बदलकर जेमिनी करना भी शामिल है। एंड्रॉइड ऐप डेवलपर डायलन रूसेल ने स्पष्ट रूप से एक कंपनी चेंज-लॉग लीक किया है जिसमें कहा गया है कि 'बार्ड अब जेमिनी है', जो ओपनएआई के जीपीटी -4 के साथ प्रतिस्पर्धा करने वाला नया मॉडल है। चेंज-लॉग में लिखा कि बार्ड अब जेमिनी है। जेमिनी गूगल एआई तक डायरेक्ट एक्सेस पाने का सबसे अच्छा तरीका है। वे सभी सहयोगी क्षमताएं जिन्हें आप जानते हैं और पसंद करते हैं, अभी भी मौजूद हैं और जेमिनी समय के साथ बेहतर होता जाएगा।

हालांकि, कंपनी ने बार्ड का नाम बदलकर जेमिनी करने पर कोई आधिकारिक टिप्पणी नहीं की।

डॉक्यूमेंट के अनुसार, हमने विजुअल डिस्ट्रेक्शन को कम करने, लेजिबिलिटी में सुधार करने और नेविगेशन को सरल बनाने के लिए यूआरएल भी विकसित किया है।

लॉग में कहा गया है कि गूगल जेमिनी के साथ वॉयस चैट की शुरुआत करेगा, साथ ही 'जेमिनी एडवांस्ड' के साथ एक नया 'अल्ट्रा 1.0' मॉडल भी लॉन्च करेगा, जो एक पेड प्लान है और यह चैटजीपीटी प्लस जैसी फाइल अपलोडिंग फीचर्स प्रदान करता है।

गूगल डॉक्यूमेंट्स के मुताबिक, जेमिनी एडवांस्ड आपको हमारे सबसे सक्षम एएल मॉडल, अल्ट्रा 1.0 तक एक्सेस प्रदान करता है। हमारे अल्ट्रा 1.0 मॉडल के साथ, जेमिनी एडवांस्ड कोडिंग, लॉजिकल रीजनिंग, इंस्ट्रक्शन और क्रिएटिव कोलैबोरेशन जैसे अत्यधिक जटिल कार्यों में कहीं अधिक सक्षम है। जेमिनी एडवांस्ड आने वाले महीनों में नए और एक्सक्लूसिव फीचर्स के साथ विस्तार करना जारी रखेगा, जिसमें विस्तारित मल्टी-मॉडल क्षमताएं, यहां तक कि बेहतर कोडिंग फीचर्स, साथ ही फाइल्स, डॉक्यूमेंट्स, डेटा और अधिक अपलोड करने और गहराई से एनालिस्ट करने की क्षमता शामिल है।

जेमिनी एडवांस्ड पेड प्लान है जो 150 से ज्यादा देशों और क्षेत्रों में उपलब्ध है। जेमिनी ऐप जल्द ही आ रहा है, जिसकी शुरुआत अंग्रेजी से होगी। गूगल, जिसने पिछले दिसम्बर में जेमिनी प्रो को अपने एआई चैटबॉट बार्ड में अंग्रेजी में लाया था, अब इसे नौ भारतीय भाषाओं सहित 40 से ज्यादा भाषाओं में 230 से अधिक देशों और क्षेत्रों में उपलब्ध कराया है। नौ भारतीय भाषाओं में हिंदी, तमिल, तेलुगु, बंगाली, कन्नड़, मलयालम, मराठी, गुजराती और उर्दू शामिल हैं।

केजीएमयू के चिकित्सकों ने पित्ताशय के कैंसर की पहचान के लिए नई विधि खोजी

लखनऊ, 4 फरवरी (एजेंसियां)। किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी (केजीएमयू) के डॉक्टरों ने पित्ताशय के कैंसर की सटीक पहचान करने के लिए एक नई विधि विकसित करने के लिए दो रक्त मार्कर्रों को जोड़ा है। केजीएमयू के पैथोलॉजी विभाग की संकाय सदस्य प्रोफेसर प्रीति अग्रवाल ने कहा कि पित्ताशय के कैंसर का निदान करने की वर्तमान विधि कार्बोहाइड्रेट एंटीजन 19-9 (सीए 19-9) नामक पदार्थ का उपयोग करती है। उन्होंने कहा कि हालांकि, इसकी सटीकता से समझौता किया गया है, क्योंकि यह अग्नाशय के कैंसर से भी जुड़ा है। यह संबंध दो प्रकार के कैंसर के बीच समानता के कारण गलत निदान का कारण बन सकता है।

इस मुद्दे को हल करने के लिए प्रोफेसर प्रीति और उनकी टीम ने सीए 19-9 के साथ एक और मार्कर, कार्बोहाइड्रेट एंटीजन 242 (सीए242) को शामिल किया। इन दोनों मार्करों के संयोजन से लगभग 100 प्रतिशत सटीकता प्राप्त हुई, जो एकल मार्कर दृष्टिकोण की 82 प्रतिशत सटीकता से अधिक थी।

अध्ययन के निष्कर्ष और कार्यप्रणाली को दिसम्बर में इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन मेडिकल साइंसेज में 'कार्सिनोमा पित्ताशय के सीरोलॉजिकल वर्कअप में कार्बोहाइड्रेट एंटीजन 19-9 के अलावा = एक केस श्रृंखला विश्लेषण' शीर्षक के तहत प्रकाशित किया गया है।

प्रोफेसर प्रीति ने कहा कि पित्ताशय के कैंसर का शीघ्र पता लगाना, जिसकी मृत्युदर लगभग 70 प्रतिशत है, महत्वपूर्ण है। अध्ययन में 50-55 आयु वर्ग के 83 लोगों का रक्त विश्लेषण शामिल था, जिनमें स्वस्थ स्वयंसेवक, क्रोनिक कोलेसिस्टिटिस के मामले और पित्ताशय के कैंसर के रोगी शामिल थे। परिणामों से पता चला कि पित्ताशय के कैंसर के रोगियों में सीए 19-9 और सीए242 दोनों का स्तर काफी अधिक था, जिसमें ट्यूमर के आकार और सीए242 के स्तर के बीच एक मजबूत संबंध था। यह स्वीकार करते हुए कि यह शोध अभी भी प्रारंभिक चरण में है, प्रोफेसर अग्रवाल ने इस दृष्टिकोण को नियमित नैदानिक अभ्यास में शामिल करने से पहले अतिरिक्त सत्यापन और बड़े अध्ययन की जरूरत पर प्रकाश डाला।

उन्होंने कहा कि सफल होने पर डुअल-मार्कर दृष्टिकोण प्रारंभिक पहचान में क्रांतिकारी बदलाव ला सकता है, गलत निदान को कम कर सकता है और रोगियों के लिए बेहतर परिणाम ला सकता है।

अपना काम करो, अगर वह सफलता के योग्य है, तो जरुर मिलेगी : अमिताभ बच्चन

मुंबई, 3 फरवरी (एजेंसियां)। मेगास्टार अमिताभ बच्चन ने कहा कि उन्होंने कभी भी इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि उनकी फिल्में कैसी चल रही हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि अपना काम करें। अगर वह सफलता के योग्य है, तो जरुर मिलेगी। बिग बी ने अपने ब्लॉग पर 1988 की फिल्म 'शहंशाह' के बारे में लिखा, जिसकी 'हिस्टोरिक एडवांस बुकिंग' थी।

उन्होंने लिखा शहंशाह! फिल्म की ऐतिहासिक एडवांस बुकिंग हुई थी जो हिंदी फिल्म इतिहास में नहीं दोहराई गई फ़िल्म की रिलीज से दो सप्ताह पहले 1 फरवरी 1988 तक सभी सिनेमाघरों की टिकटें बिक गईं!! सौजन्य ईएफ सैकरुन और उसका ट्रेंड मार्क एमओडीडी सिने आइकन ने कहा कि उन्हें इसकी जानकारी कभी नहीं थी। उन्होंने कहा कि हे भगवान, यह जानकारी पढ़कर खुशी हुई.. मुझे स्वीकार करना होगा कि मुझे इसके बारे में कभी नहीं पता था.. और ईमानदारी से कहूं तो मैंने कभी इस तरह की बातचीत पर ध्यान नहीं दिया था। फिर उन्होंने इस बारे में कुछ ज्ञान साझा किया कि काम पर ध्यान केंद्रित करना कैसे मायने रखता है और बाकी सब उसके बाद आता है।

उन्होंने लिखा कि अपना काम करो और बस इतना ही बाकी अपना ख्याल खुद रख लेंगे अगर यह योग्यता के लायक है, तो इसे मिलेगा.. प्यार और बहुत कुछ बाद में। वर्कफ्रंट की बात करें तो, बिग बी अगली बार प्रभास, कमल हासन और दीपिका पादुकोण के साथ 'कल्कि 2898 एडी' में नजर आएंगे।

'कलिंगा कला महोत्सव' 9 फरवरी से

नई दिल्ली, 4 फरवरी (एजेंसियां)। कलिंगा कला महोत्सव 'लीजेंड्स ऑफ एंशिएंट भारत एंड बियॉन्ड इंस्पायरिंग लाइव्स एक्सपीरियंस इन द 21 सेंचुरी' थीम के साथ 9 फरवरी से 11 फरवरी तक आयोजित किया जाएगा। इसमें इला पांडा सेंटर फॉर आर्ट्स (आईपीसीए) अपनी भागीदारी दे रहा है। आठवें संस्करण में 60 प्रदर्शक, प्रमुख कलाकार और छह चर्चा सत्र होंगे जिसमे रंजन मल्लिक, विजय एम. ढोरे, लालतेन्दु रथ, पारमिता महापात्रा, प्रो. रंजन कुमार मल्लिक, पंचमी मनु उकिल, सोनिया मलिक, गौरहरि राउत, मीनाकेतन पटनायक, ब्रुंदावन मोहराना, प्रियदर्शनी मोहंती, प्रियदर्शनी दास अधिकारी, नमिता पटनायक, संगीता पटनायक, ममता सामंतराय, रबीनाराना रथ, प्रणब अखंड, संजीब बिस्वाल, जनार्दन परमगुरु, संजय पट्टनायक, राजकिशोर मोहराना, बासेन टुडू, कुमार मिश्रा, बिनोदिनी बेहरा, दुर्गा माधब कर, वर्षा बारिक, पूजा दास, प्रीतम नायक, सुभाश्री स्वैन, दिब्यज्योति राउत, नरेंद्र माझी, ज्योतिष देबता, सुभाश्री पी. साहू, राकेश डे, बिबेक दास, संतोष साहू, संजय सामंत, अतासी बसु, लिपिश्री नायक, ससाधर पति, स्थितिधि रथ, मनारंजन जेना, प्रदीप पात्रा, जगेंद्र पाढ़ी, प्रदीप कुमार, उमेश नायक, स्मृति रंजन नायक, सुशांत, बिपिन मार्था, सुब्रत मुलिक, गंगा महराना, सरिता, चिंतामणि बिस्वाल, चंदन सामल, प्रबीर दलेई, पंचानन सामल, हृदयानंद, प्रताप जेना, जयंत दास, मुक्तिपदा नंदी, नितिया, रबी प्रधान, अरुण पालुर, सुभाष पुझारी, फ्रिडस आलम, काली पाढ़ी शामिल हैं।

प्रदर्शनी ओडिशा की रचनात्मक विरासत का एक प्रमाण है, जिसमें पेंटिंग, ड्राइंग, मूर्तिकला, फोटोग्राफी और अन्य कलाकारों के कार्यों सहित विभिन्न कलात्मक माध्यमों का प्रदर्शन किया गया है।

कलिंगा कला महोत्सव की संस्थापक, रश्मी रंजन परिदा ने कहा कि पिछले आठ वर्षों से यह मेला कलिंगन की सर्वोत्तम रचनात्मकता का उत्सव रहा है और 2024 में हम इसे और भी आगे ले जा रहे हैं। गैलरी डिस्प्ले को पूरक करते हुए हम पूरे भारत से कलात्मक प्रतिभा की विविधता और शक्ति को प्रदर्शित करने वाली वार्ता और कार्यशालाओं की भी मेजबानी कर रहे हैं।

पूरे भारत से आए पत्थरों पर कला को उजागर करता है 'स्टोनमार्ट 2024'

जयपुर, 4 फरवरी (एजेंसियां)। एक तरफ जहां दुनिया भर के लेखक जयपुर में लिटरेचर फेस्टिवल में अपनी विशिष्ट कहानियां सुना रहे हैं, वहीं गुलाबी शहर पत्थरों के कारीगरों की उत्कृष्ट कलात्मकता की कहानी भी बता रहा है। यहां देशभर से कारीगर एकत्र हुए हैं। इन पत्थर कारीगरों को अपने कारोबार में तेजी आने की पूरी उम्मीद है। शिल्पग्राम में कुछ स्टॉलों पर पत्थर कारीगर अपनी कला का जीवंत प्रदर्शन कर रहे हैं।

देहरादून के पत्थर कारीगर अजीत कुमार प्रसाद ने कहा कि वे अपनी कल्पना का उपयोग कर नदी के पत्थरों से शिल्प बनाते हैं। उन्होंने यहां अपनी कला का प्रदर्शन किया है और वहीं पर्यटक उनकी कला की जमकर तारीफ कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रतिक्रिया उत्साहजनक है और उन्हें अपने कारोबार में बढ़ोतरी की उम्मीद है। उन्होंने बताया कि पत्थरों को नदी से चुना जाता है और उन पर किसी कृत्रिम रंग का इस्तेमाल नहीं किया जाता।

इन पत्थरों पर वार्निश लगाया जाता है जिससे इनकी चमक बढ़ जाती है।वहीं, जयपुर के सुनील जांगिड़ ने कहा कि वे स्टोन विद नेचर कॉन्सेप्ट पर काम करते हैं। वह सिर्फ चट्टानों पर कलाकारी करते है। उन्होंने कहा कि नदी के पत्थर, समुद्री चट्टानें, कांगो चट्टानें, लावा चट्टानें मुख्य रूप से सजावटी प्लांटर्स बनाने के साथ-साथ पत्थर के टुकड़ों से मोजेक कला के माध्यम से विभिन्न कलाकृतियां बनाने के लिए उपयोग की जाती हैं।उन्होंने सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ स्टोन्स (सीडीओएस) का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उन्हें बहुत सहयोग मिला और शिल्पग्राम में उन्हें अच्छी प्रतिक्रिया मिली। इस चार दिवसीय प्रदर्शनी में उन्हें पूरे साल के ऑर्डर मिलने की उम्मीद है।मकराना के पत्थर कारीगर शब्बीर ने कहा कि लोग उनके काम की प्रशंसा कर रहे हैं, वहीं उन्हें बहुत सारे आर्डर भी मिले है।सिकंदरा के पवन सैनी ने बताया कि उन्हें पत्थरों से नक्काशीदार लाइट लैंप और फव्वारे बनाने में महारत हासिल है। शिल्पग्राम में नि:शुल्क स्टॉल लगाने के कारण देश के अन्य शहरों और विदेशों में भी उनके ग्राहकों की संख्या बढ़ रही है। शिवदासपुरा के पप्पूलाल शर्मा संगमरमर से विभिन्न देवी-देवताओं की मूर्तियां बनाते हैं और पिछले 20 वर्षों से वह इस व्यवसाय में हैं। उन्होंने कहा कि कारोबार ठीक चल रहा है और अयोध्या में भगवान राम की प्राण-प्रतिष्ठा समारोह के बाद मूर्तियों के कारोबार में बढ़ोतरी हुई है। उन्होंने कहा कि पिछले तीन दिनों में उनके स्टॉल पर अच्छा रिस्पॉन्स मिला है।

स्टोनमार्ट प्रदर्शनी में खान विभाग का स्टॉल बना लोगों के आकर्षण का केन्द्र

राजस्थान के सीतापुरा में चल रहे स्टोन मार्ट में राज्य के खान विभाग के स्टॉल पर सोने की खान का सैंपल यहां आने वाले दर्शकों का प्रमुख आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। प्रदर्शनी के अवलोकन के लिए आने वाले लोगों को यह विश्वास ही नहीं हो रहा कि राजस्थान की धरा में भी सोने की खान हो सकती है। खान विभाग के अधिकारियों ने भूकिया के सोने के संभावित डिपोजिट खान के सेंपल में लेंस के माध्यम से सोने के चमकते कण इस स्टॉल पर सजाकर रखे है। खान विभाग से जुड़े लोगों के साथ ही प्रदर्शनी में आने वाले दर्शकों के लिए राजस्थान माइनिंग विभाग का पवेलियन इस लिए भी आकर्षण का केन्द्र बन रहा है कि यहां पर राजस्थान की धरा द्वारा उगले जाने वाले सभी तरह के माइंस और इससे जुड़ी संदर्भ सामग्री सैंपल और डिसप्ले पैनल्स के माध्यम से प्रभावी तरीके से प्रस्तुत की गई है। खान सचिव आनन्दी ने भी स्टोनमार्ट का अवलोकन करने के बाद इसकी प्रस्तुति और संदर्भ सामग्री की सराहना की है। उन्होंने कहा कि राजस्थान की माइनिंग संपदा देश-दुनिया से रुबरु कराने में स्टोन मार्ट जैसे आयोजन उपयोगी सिद्ध होते हैं। खान निदेशक प्रज्ञा केवलरमाणी ने बताया कि स्टोन मार्ट में विभागीय पवेलियन में प्रदेश में खनन किए जा रहे सभी 57 खनिजों के सैंपल प्रदर्शित किए गए हैं। इसके साथ ही डायमेंशनल स्टोन की स्लैब भी प्रदर्शित करते हुए उनकी उपलब्धता की जानकारी दी जा रही है। राज्य में मेटेलिक, नोनमेटेलिक और फर्टिलाइजर केमिकल खनिज का भण्डार उपलब्ध है। एक ही प्रदेश में इतने प्रकार के खनिजों की वेरायटी देखकर अन्य प्रदेशों और विदेशों से स्टोनमार्ट में हिस्सा लेने आये प्रतिभागी अचंभित है।

इशिता अरुण, मिलिंद गुनाजी का 21 साल बाद रियूनियन, 'आइका दाजिबा' को किया रिक्रिएट

मुंबई, 4 फरवरी (एजेंसियां)। एक्टर इशिता अरुण, मिलिंद गुनाजी, सिंगर वैशाली सामंत और कंपोजर अवधूत गुप्ते ने साथ मिलकर दो दशकों के बाद अपने 90 के दशक के आइकोनिक नंबर 'आइका दाजिबा' को रिक्रिएट किया। इशिता ने वैशाली सामंत द्वारा गाए गए और अवधूत गुप्ते द्वारा कंपोज ट्रैक के म्यूजिक वीडियो में काम किया है। इंस्टाग्राम पर एक वीडियो उन्होंने साझा किया। वीडियो में, इशिता, मिलिंद, वैशाली और अवधूत ने नंबर को रिक्रिएट किया।मराठी ट्रैक ओरिजिनल रूप से 2002 में रिलीज किया गया था। इस पेप्पी नंबर के इंटरनेट पर कई रीमेक हैं। इस ट्रैक को दो लवर्स के बीच की बातचीत के तौर पर समझा जा सकता है। ट्रैक में सामंत गा रही है कि उसे वास्तव में प्यार में कोई दिलचस्पी नहीं है। इशिता एक्ट्रेस इला अरुण की बेटी हैं। वह स्कूप, राणा नायडू, गुड बैड गर्ल और द मर्चेंट्स ऑफ बॉलीवुड में अपने काम के लिए जानी जाती हैं।

वहीं मिलिंद ने कई टीवी शो और फिल्मों में काम किया है। उन्होंने 1996 की फरेब से सुर्खियां बटोरीं। उन्होंने 'देवदास', 'एलओसी' और 'द गाजी अटैक' जैसी कई अन्य फिल्मों में भी काम किया है।

देशबन्धु

अर्थ जगत

पेट्रोल और डीजल की कीमतों में टिकाव

नई दिल्ली, 4 फरवरी (एजेंसियां)। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में घटबढ़ के बीच घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम में आज टिकाव रहा, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपये प्रति लीटर तथा डीजल 89.62 रुपये प्रति लीटर पर पड़े रहे। तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपये प्रति लीटर पर और डीजल 94.27 रुपये प्रति लीटर पर रहा।

सर्वाधिक बढ़ने वाले शेयर

टाटा स्टील	3.88 प्रतिशत
पावरग्रिड	3.49 प्रतिशत
एचसीएल टेक	3.44 प्रतिशत
इंडसइंड बैंक	3.23 प्रतिशत
टेक महिंद्रा	3.09 प्रतिशत

सर्वाधिक घटने वाले शेयर

आईसीआईसीआई बैंक	2.94 प्रतिशत
एक्सिस बैंक	2.77 प्रतिशत
एशियन पेंट	1.91 प्रतिशत
टीसीएस	0.36 प्रतिशत
बजाज फाइनेंस	0.17 प्रतिशत

सर्राफा

सोना (प्रति दस ग्राम)स्टैंडर्ड	47,310
बिदुर	47,320
गिन्नी (प्रति आठ ग्राम)	31,400
चांदी (प्रति किलो) टंच हाजिर	70,096
वायदा	70,183
चांदी सिक्का लिवाली	870
बिकवाली	880

मुद्रा विनिमय

मुद्रा	क्रय	विक्रय
अमेरिकी डॉलर	67.77	78.57
पौंड स्टर्लिंग	90.94	105.45
यूरो	76.54	88.78
चीन युआन	08.24	13.38

अनाज

देसी गेहूँ एमपी	2400-3000
गेहूं दडा	2750-2850
आटा	2800-2900
मैदा	2900-2950
चोकर	2000-2100

मोटा आनाज

बाजरा	1300-1305
मक्का	1350-1500
ज्वार	3100-3200
जौ	1430-1440
काबुली चना	3500-4000

शुगर

चीनी एस	3590-3690
चीनी एम	4150-4250
मिल डिलीवरी	3470-3570
गुड़	4600-4700

दाल-दलहन

चना	5500-5600
दाल चना	6500-6600
मसूर काली	7350-7450
उड़द दाल	10000-10100
मूंग दाल	9550-9650
अरहर दाल	12500-12600

'श्रमिकों के बच्चों के लिए प्रदेश के हर जिले में बनेंगे अटल आवासीय विद्यालय'

कौशांबी, 4 फरवरी (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के श्रम एवं सेवायोजन, समन्वय विभाग के मंत्री अनिल राजभर ने आज कहा कि प्रदेश के प्रत्येक जनपद में अटल आवासीय विद्यालय बनाये जायेंगे। श्री राजभर ने कांशीराम गेस्ट हाउस, ओसा में श्रम विभाग के अटल आवासीय विद्यालय के संचालन एवं लेबर सेस के संबंध में समीक्षा बैठक में बताया कि श्रमिकों के बच्चों के लिए उप्र के 18 मण्डलों में बनाये गये अटल आवासीय विद्यालयों की उपयोगिता को देखते हुए अब इन्हें प्रदेश के प्रत्येक जनपद में बनाया जायेगा। अटल आवासीय विद्यालय की प्रधानमंत्री ने स्वयं प्रशंसा की है एवं पूरे देश में श्रमिकों के बच्चो के लिए अटल आवासीय विद्यालय बनाये जाने की योजना पर विचार किया जा रहा है।

बैठक में उप श्रमायुक्त ने मंत्री

को मानक संचालन प्रक्रिया के तहत वर्ष 2024-25 में कक्षा-6 व कक्षा-9 हेतु प्रत्येक में 140 (कुल 240) बच्चों के प्रवेश हेतु प्रवेश परीक्षा कराये जाने के सम्बंध में जानकारी दी गयी, जिसपर उन्होंने प्रवेश परीक्षा का प्रचार-प्रसार कर ज्यादा से ज्यादा फार्म/आवेदन पत्र प्राप्त करने के निर्देश दिए है, जिससे कि ज्यादा से ज्यादा बच्चे प्रवेश परीक्षा में सम्मिलित हो सके। उन्होंने प्रवेश परीक्षा का प्रश्न पत्र कक्षा-6 व कक्षा-9 के स्तर का ही बनाये जाने के लिए कहा है।

उन्होंने भवन एवं सनिर्माण कर्मकार के अन्तर्गत जनपद व सेस/उपकर संग्रहण की स्थिति की समीक्षा करते हुए निजी क्षेत्र से उपकर संग्रहण बढ़ाये जाने के लिए निर्देशित किया। उन्होंने कार्यदायी संस्थाओं एवं विभागों द्वारा उपकरण संग्रहण का भुगतान एवं उपकर की फीडिंग किए जाने के लिए बनाये गये उपकर संग्रहण पोर्टल पर कार्य करने की जानकारी के लिए मण्डलायुक्त व जिलाधिकारी की अध्यक्षता में सभी सम्बंधित अधिकारियों की कार्यशाला आयोजित कराकर ज्यादा से ज्यादा अधिष्ठान पंजीयन कराये जाने के लिए कहा।

उन्होंने नक्शा बनवाकर ही भवन निर्माण कराने व उपकर संग्रहण की जागरूकता ग्रामीण क्षेत्रों में कराये जाने के लिए व भवन व अन्य निर्माण के लिए बैंक से लोन लेने वालों की सूचना संग्रहीत किए जाने के लिए कहा।

स्वदेशी रूप से विकसित 3 तकनीक भारत में 12 उद्योगों को हस्तांतरित की गई

नई दिल्ली, 4 फरवरी (एजेंसियां)। तीन स्वदेशी रूप से विकसित प्रौद्योगिकियां - थर्मल कैमरा, सीएमओएस कैमरा और फ्लीट मैनेजमेंट सिस्टम - रविवार को भारत में 12 उद्योगों को हस्तांतरित कर दी गईं। आईआईआईटी-दिल्ली में आयोजित 'डिजिटल इंडिया फ्यूचरलैब्स समिट 2024' के लॉन्च के दौरान इन उद्योगों को इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (एमईआईटीवाई) के इनट्रांस कार्यक्रम के तहत सीडीएसी (उन्नत कंप्यूटिंग विकास केंद्र), तिरुवनंतपुरम द्वारा डिजाइन और विकसित प्रौद्योगिकियों को स्थानांतरित किया गया। मंत्रालय के अनुसार, यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विकसित भारत@ 2047 पहल के नवाचार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विषय की दिशा में एक कदम है। थर्मल स्मार्ट कैमरा तकनीक में विभिन्न एआई-आधारित एनालिटिक्स चलाने के लिए एक इनबिल्ट डीपीयू है। स्वदेशी प्रौद्योगिकी को स्मार्ट शहरों, उद्योगों, रक्षा, स्वास्थ्य और अन्य सहित कई डोमेन में अनुप्रयोगों के लिए लक्षित किया गया है। इस कैमरे का क्षेत्रीय कार्यान्वयन, परीक्षण और सत्यापन सड़क यातायात अनुप्रयोगों के लिए किया गया था। यह तकनीक एक साथ आठ उद्योगों को हस्तांतरित की गई। सीएमओएस कैमरा तकनीक एक औद्योगिक विज़न सेंसर iVISvfiGigE है - अगली पीढ़ी के औद्योगिक मशीन विज़न अनुप्रयोगों को निष्पादित करने के लिए एक शक्तिशाली ऑन-बोर्ड कंप्यूटिंग इंजन के साथ एक सीएमओएस आधारित विजन प्रोसेसिंग सिस्टम है। इस तकनीक को एक उद्योग में स्थानांतरित कर दिया गया। तीसरी तकनीक, फ्लीट मैनेजमेंट सिस्टम, जिसमें फ्लेक्सीफ्लीट, पर्सनलाइज्ड ट्रांजिट रूट गाइडेंस सिस्टम और हेडवे विश्वसनीयता के लिए परिचालन रणनीतियां शामिल हैं। फ्लेक्सीफ्लीट का उद्देश्य संचालन को अनुकूलित करना और बेड़े ऑपरेटरों और पारगमन एजेंसियों की दक्षता में वृद्धि करना है। वाहन स्थान ट्रैकिंग के अलावा, यह ओवरस्पीडिंग, जियोफेंस, इग्निशन, निष्क्रिय, रुकना और रैश ड्राइविंग जैसी विभिन्न स्थितियों के लिए अलर्ट प्रदान करता है। पर्सनलाइज्ड ट्रांजिट रूट गाइडेंस सिस्टम एक मोबाइल ऐप है जिसका उद्देश्य यात्रियों के लिए यात्रा अनुभव को बेहतर बनाना है क्योंकि यह यात्रियों को उनकी पसंद के सबसे कुशल या वैयक्तिकृत मार्ग चुनने का विकल्प प्रदान करता है।

हेडवे विश्वसनीयता के लिए परिचालन रणनीतियां ट्रांजिट ऑपरेटरों के लिए एक गतिशील शेड्यूलिंग निर्णय समर्थन उपकरण के रूप में कार्य करती है, जिसका लक्ष्य बस बंचिंग की घटनाओं को कम करके सार्वजनिक पारगमन सेवाओं की विश्वसनीयता को बढ़ाना है। यह तकनीक एक साथ तीन उद्योगों को हस्तांतरित की गई।

पुदुमजी पेपर प्रोडक्ट्स लिमिटेड ने 47,681 मीट्रिक टन कागज का उत्पादन किया

नई दिल्ली, 4 फरवरी (देशबन्धु)। पुदुमजी पेपर प्रोडक्ट्स लिमिटेड ने 31 दिसंबर, 2023 को समाप्त अवधि के लिए अब तक के उच्चतम परिणामों की सूचना दी है। कंपनी ने नौ महीनों के दौरान, कंपनी ने 47,681 मीट्रिक टन कागज का उत्पादन किया, जो पिछली अवधि के दौरान उत्पादित 43,918 मीट्रिक टन से 9 फीसदी अधिक है। इसी अवधि में टर्नओवर लगभग 1 फीसदी बढ़कर 57965 लाख रुपए (57597 लाख रुपये) हो गया। कर पूर्व कुल लाभ में 25 फीसदी की वृद्धि देखी गई और यह 8161 लाख रुपए (6523 लाख रुपये) रहा। कंपनी पिछले 4 वर्षों की समान अवधि में लगातार अपनी लाभप्रदता में सुधार कर रही है।

कंपनी विभिन्न बायोडिग्रेडेबल और कम्पोस्टेबल विशेष कागजों का निर्माण करती है, जिनका उपयोग विभिन्न खाद्य उत्पादों, फार्मास्युटिकल और अन्य उत्पादों, अस्पताल की आपूर्ति, स्वच्छता क्षेत्रों, भोजन, कन्फेक्शनरी आदि के लिए टिकाऊ पैकेजिंग समाधान के लिए इनपुट के रूप में किया जाता है।

एप्पल अपने विजन प्रो को मजबूत करने के लिए बना रहा एआई स्टार्टअप खरीदने की योजना

सैन फ्रांसिस्को, 4 फरवरी (एजेंसियां)। एप्पल एक जर्मन एआई स्टार्टअप - ब्राइटर एआई का अधिग्रहण करने की योजना बना रहा है, जो चेहरे और लाइसेंस प्लेट डेटा को अज्ञात करने में विशेषज्ञता रखता है। यह बात एक मीडिया रिपोर्ट में कही गई है। tozMac ने सूत्रों का हवाला देते हुए बताया कि तकनीकी दिग्गज का लक्ष्य इस अधिग्रहण का उपयोग अपने मिश्रित वास्तविकता (एमआर) हेडसेट विज़न प्रो पर गोपनीयता सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए करना है।

कथित तौर पर ऐप्पल सार्वजनिक फ़ोटो या वीडियो में पहचान योग्य जानकारी कैप्चर करने वाले ऐप्पल विज़न प्रो के जोखिम को कम करने के लिए ब्राइटर एआई तकनीक का उपयोग करने पर विचार कर रहा है। फुटेज कैप्चर करने के लिए आईफोन का उपयोग करते समय ये चिंताएं आमतौर पर मौजूद नहीं

होती हैं। हालांकि, एप्पल विजन प्रो चिंताएं बढ़ा सकता है, क्योंकि यह स्मार्टफोन की तुलना में अधिक सावधानी से वीडियो शूट कर सकता है।

यह तकनीक भविष्य के उपकरणों में भी उपयोगी हो सकती है, जो फोटो और वीडियो कैप्चर को कम ध्यान देने योग्य बनाते हैं। रिपोर्ट में बताया गया है कि विजन प्रो के साथ मीडिया कैप्चर करते समय फ्रंट पैनल पर एक सूक्ष्म दृश्य संकेत दिखाई देता है। ब्राइटर एआई परिष्कृत एआई तकनीक प्रदान करता है जो डेटा के सभी निशानों को बिना अस्पष्ट किए हटा सकता है, जिससे कंपनी का अधिग्रहण विशेष रुचि का हो जाता है। रिपोर्ट के अनुसार, ब्राइटर एआई द्वारा उपयोग की जाने वाली विधि विषयों की प्राकृतिक उपस्थिति को बनाए रखते हुए उनकी पहचान को बनाए रखती है। इसके बजाय, Brighter AI छवियों को बदल सकता है ताकि विषय अब पहचाने जाने योग्य न रहें। यह प्राकृतिक दिखावे को बनाए रखते हुए इसे पूरा करता है। इस बीच, एप्पल ने आधिकारिक तौर पर 2 फरवरी को अमेरिका में विजन प्रो लॉन्च किया। इसकी कीमत 3,500 डॉलर से शुरू होती है। तकनीकी दिग्गज ने एप्पल विज़न प्रो हेडसेट के लिए डिजाइन किए गए 600 से अधिक ऐप्स और गेम की घोषणा की है।

बजट, फेड के फैसले और तिमाही परिणाम का बाजार पर रहेगा असर

मुंबई, 4 फरवरी (एजेंसियां)। नये वित्त वर्ष के अंतरिम बजट में समग्र विकास के लिए उठाए गए ठोस कदम से उत्साहित निवेशकों की दमदार लिवाली की बदौलत बीते सप्ताह दो प्रतिशत तक उछले घरेलू शेयर बाजार पर अगले सप्ताह अमेरिकी फेडरल रिजर्व के ब्याज दरों को यथावत रखने और कंपनियों की तीसरी तिमाही के परिणाम का असर रहेगा। बीते सप्ताह बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 1384.96 अंक अर्थात 1.95 प्रतिशत की छलांग लगाकर सप्ताहांत पर 72085.63 अंक रहा। इसी तरह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 501.2 अंक यानी 2.34 प्रतिशत की तेज़ी के साथ 21853.80 अंक हो गया।

समीक्षाधीन सप्ताह में दिग्गज कंपनियों की तरह मझौली और छोटी कंपनियों में भी लिवाली का जोर रहा। इससे बीएसई का मिडकैप 1181.82 अंक अर्थात 3.13 प्रतिशत मजबूत होकर सप्ताहांत पर 38928.11 अंक और स्मॉलकैप 1486.06 अंक यानी 3.34 प्रतिशत उठकर 45849.80 अंक पर रहा। विश्लेषकों के अनुसार, बजट में लोकलुभावन वादों की बजाय देश के समग्र विकास के लिए उठाए गए ठोस कदम से बीते सप्ताह निवेशकों में ख़ासा उत्साह रहा। यह उत्साह अगले सप्ताह भी बरकरार रहने की उम्मीद है। इसके अलावा फेड रिजर्व ने 30-31 जनवरी को हुई मौद्रिक नीति समीक्षा बैठक में ब्याज दरों को 5.25 से 5.50 प्रतिशत के बीच यथावत रखा है। बैठक के बाद जारी बयान में कहा गया कि पिछले साल के मुकाबले महंगाई कम हुई है लेकिन उसकी दर अभी ऊंची बनी हुई है। आने वाले महीनों में ब्याज दरों को कम

करने के लिए अर्थव्यवस्था के अन्य जोखिमों के साथ मुद्रास्फीति को भी ध्यान में रखना होगा। ऐसे कोई संकेत नहीं थे जिसके मुताबिक ब्याज दरों में कटौती अपरिहार्य थी। हालांकि फेड ने रोजगार के बारे में चिंताओं पर सहमति व्यक्त करते हुए और संकेत दिया कि यदि आने वाले महीनों में मुद्रास्फीति की दर कम होती है तो ब्याज दरों को कम किया जा सकता है। अगले सप्ताह इसका असर भी बाजार पर रहेगा।

साथ ही स्थानीय स्तर पर सीआईएल, बैंक ऑफ इंडिया, भारती एयरटेल, नेस्ले इंडिया, अशोक लेलैंड, बायोकॉन, लुपिन और इरकॉन समेत कई दिग्गज कंपनियों के वित्त वर्ष 2023-24 के दिसंबर में समाप्त तीसरी तिमाही के परिणाम जारी होने वाले हैं। अगले सप्ताह बाजार को दिशा देने में इन कारकों की अहम भूमिका रहेगी। अमेरिकी फेड रिजर्व के ब्याज दरों में कटौती शुरू करने की उम्मीद, बांड यील्ड में गिरावट और चीन के बाज़ार को समर्थन देने के लिए उपाय शुरू करने के बीच स्थानीय स्तर पर रिलायंस समेत 25 दिग्गज कंपनियों के करीब सात प्रतिशत तक चढ़ने से सोमवार को सेंसेक्स 1240.90 अंक की उड़ान भरकर 71,941.57 अंक और निफ्टी 385 अंक की छलांग लगाकर 21,737.60 अंक हो गया।

वहीं, फेडरल रिजर्व की मौद्रिक नीति समीक्षा बैठक के निर्णय और स्थानीय स्तर पर नये वित्त वर्ष के लिए पेश होने वाले आम बजट से पहले हुई चौतरफा बिकवाली के दबाव में मंगलवार को सेंसेक्स 801.67 अंक का गोता लगाकर 71,139.90 अंक और निफ्टी 215.50 अंक लुढ़ककर 21,522.10 अंक रह गया। विश्व बाजार की गिरावट के बीच स्थानीय स्तर पर हेल्थकेयर, रियल्टी, ऑटो और सर्विसेज समेत 18 समूहों में हुई जबरदस्त लिवाली की बदौलत बुधवार को सेंसेक्स 612.21 अंक की छलांग लगाकर 71,752.11 अंक और निफ्टी 203.60 अंक उछलकर 21,725.70 अंक हो गया।

चुनावी साल होने के बावजूद नये वित्त वर्ष के अंतरिम बजट में लोकलुभावन वादों की बजाय देश के समग्र विकास के लिए उठाए गए ठोस कदम से गुरुवार को शेयर बाजार पूरे दिन उतार-चढ़ाव से गुजरते हुए अंत में गिरकर बंद हुआ। सेंसेक्स 106.81 अंक टूटकर 71,645.30 अंक और निफ्टी 28.25 अंक फिसलकर 21,697.45 अंक रह गया। बजट में लोकलुभावन वादों की बजाय देश के समग्र विकास के लिए उठाए गए ठोस कदम से उत्साहित निवेशकों की तेल एवं गैस, ऊर्जा, धातु, आईटी और टेक समेत सोलह समूहों में हुई दमदार लिवाली की बदौलत शुक्रवार को सेंसेक्स 440.33 अंक की तेजी के साथ 72,085.63 अंक और निफ्टी 156.35 अंक उछलकर 21,853.80 अंक पर रहा।

स्पेसटेक स्टार्टअप ने चंद्रमा से प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करने को 15.5 मिलियन डॉलर जुटाए

सैन फ्रांसिस्को, 4 फरवरी (एजेंसियां)। ब्लू ओरिजिन के पूर्व नेताओं के नेतृत्व में एक स्पेसटेक स्टार्टअप इंटरल्यून ने नई फंडिंग में 15.5 मिलियन डॉलर जुटाए हैं और 2 मिलियन डॉलर और का लक्ष्य रखा है। यह जानकारी यूएस सिक्योरिटीज एंड एक्सचेंज कमीशन (एसईसी) के साथ इसकी फाइलिंग से मिली। टेकक्रंच की रिपोर्ट के अनुसार, इंटरल्यून का नेतृत्व एक एयरोस्पेस कार्यकारी रॉब मेयर्सन द्वारा किया जा रहा है, जो 15 वर्षों तक ब्लू ओरिजिन के अध्यक्ष थे। स्टार्टअप चंद्रमा से संसाधनों के दोहन पर केंद्रित है। इसने 2022 में 1.85 मिलियन डालर का सीड राउंड पूरा किया। हालिया रिपोर्टों में इंटरल्यून सीटीओ गैरी लाई के हवाले से कहा गया है, 'हमारा लक्ष्य ऐसी पहली कंपनी बनना है, जो पृथ्वी पर उपयोग करने के लिए चंद्रमा से प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करती है।' हम उन संसाधनों को कुशलतापूर्वक, लागत प्रभावी ढंग से और जिम्मेदारी से निकालने के लिए एक पूरी तरह से नया दृष्टिकोण बना रहे हैं। लक्ष्य वास्तव में एक स्थायी अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था बनाना है। लाई का जेफ बेजोस द्वारा संचालित ब्लू ओरिजिन में 20 साल का कार्यकाल था, जहां वह लॉन्चर और चंद्र लैंडर सहित अंतरिक्ष परिवहन प्रणालियों के मुख्य वास्तुकार बन गए। अपनी वेबसाइट पर स्टार्टअप की ओर से कहा गया, 'पृथ्वी को लाभ पहुंचाने और अंतरिक्ष में अर्थव्यवस्था स्थापित करने के लिए अंतरिक्ष से प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करना।' इसमें कहा गया है, 'पृथ्वी का भविष्य हमारी कक्षा में है।' इंटरल्यून को हाल ही में यूएस नेशनल साइंस फाउंडेशन (एनएसएफ) से अनुदान प्राप्त हुआ। 246,000 डॉलर की राशि वाला यह अनुदान एक ऐसी प्रणाली विकसित करने के प्रयासों का समर्थन करता है, जो कण आकार के आधार पर चंद्रमा की गंदगी को सुलझा सकती है।

खाद्य तेल और दालें महंगी

नई दिल्ली, 4 फरवरी (एजेंसियां)। विदेशी बाजारों में गिरावट के बावजूद स्थानीय पर उठाव कमजोर रहने से बीते सप्ताह दिल्ली थोक जिंस बाजार में खाद्य तेलों के साथ ही दालें महंगी हो गईं। तेल-तिलहन : वैश्विक स्तर पर मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में पाम ऑयल का फरवरी वायदा सप्ताहांत पर 230 रिंगिट उतरकर 3790 रिंगिट प्रति टन रह गया। इसी तरह फरवरी का अमेरिकी सोया तेल वायदा 1.02 सेंट की गिरावट के साथ 45.58 सेंट प्रति पौंड बोला गया।

सप्ताहांत पर सरसों तेल 146 रुपए, मूंगफली तेल 147, सोया रिफाइंड 146 रुपए, पाम ऑयल 66 रुपए और वनस्पति तेल 67 रुपए प्रति क्विंटल चढ़ गया। वहीं, सूरजमुखी तेल के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ।

सप्ताहांत पर सरसों तेल 13259 रुपए प्रति क्विंटल, मूंगफली तेल 19780 रुपए प्रति क्विंटल, सूरजमुखी तेल 12088 रुपए प्रति क्विंटल, सोया रिफाइंड 11135 रुपए प्रति क्विंटल, पाम ऑयल 8066 रुपए प्रति क्विंटल और वनस्पति तेल 9733 रुपए प्रति क्विंटल पर रहा।

भारतीय स्टार्टअप्स ने जनवरी में 107 सौदों के जरिए 732 मिलियन डॉलर जुटाए

नई दिल्ली, 4 फरवरी (एजेंसियां)। छंटनी, शटडाउन और शीर्ष स्तर पर निकास के बीच भारतीय स्टार्टअप्स ने इस साल जनवरी में 107 सौदों के जरिए 732.7 मिलियन डॉलर जुटाए। आंकड़ों के अनुसार, 314.4 मिलियन डॉलर के कुल मूल्य के 70 प्रारंभिक चरण के सौदे थे, और 418.3 मिलियन डॉलर के मूल्य के 21 विकास-चरण के सौदे थे। इसमें 16 ऐसे राउंड रहे जिनका कोई विवरण नहीं है। एनट्रैकर की रिपोर्ट के अनुसार, जनवरी में स्टार्टअप्स के लिए कुल फंडिंग में 2023 के आखिरी महीने में 1.7 बिलियन डॉलर की उल्लेखनीय कमी देखी गई। एनट्रैकर की रिपोर्ट के अनुसार, पिछले तीन वर्षों की तुलना में जनवरी के लिए यह सबसे कम फंडिंग राशि थी। विशेष रूप से जनवरी में कोई भी स्टार्टअप 100 मिलियन डॉलर से अधिक की फंडिंग हासिल करने में कामयाब नहीं हुआ। फिनटेक स्टार्टअप, विविफाई को जनवरी में सबसे अधिक 75 मिलियन डॉलर की फंडिंग प्राप्त हुई। एआईडैश, वाह, मोमो, इम्पैक्ट

एनालिटिक्स और ब्लूस्मार्ट पिछले महीने पांच सबसे अधिक वित्त पोषित कंपनियों में से थी।

आंकड़ों के अनुसार, विकास चरण में तीन कंपनियों, वनकार्ड, इंफ्रा.मार्केट और युलु ने ऋण निधि जुटाई है। भाविश अग्रवाल के नेतृत्व में कृत्रिम एसआई डिजाइन्स ने 50 मिलियन डॉलर की फंडिंग की घोषणा की है, जिससे यह भारतीय स्टार्टअप इकोसिस्टम में सबसे तेज यूनिकॉर्न बन गया है।

रिपोर्ट में कहा गया, इंटरनेशनल बैटरी फाइनेंस और तीन फिनटेक स्टार्टअप स्टॉकग्रो, फिनएजीजी और इकोफी ने शीर्ष पांच की सूची में जगह बनाई। स्टॉकग्रो ने पिछले महीने सबसे ज्यादा कर्ज जुटाया। ऑनलाइन फूड डिलीवरी प्लेटफॉर्म स्विगी 350 कर्मचारियों की छंटनी के साथ सबसे आगे रही, उसके बाद कल्ट डॉट फिट और इनमोबी रहे। ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस फ्लिपकार्ट भी 1,000 से अधिक कर्मचारियों को नौकरी से निकालने के कारण खबरों में रही। छंटनी के अलावा, कई शीर्ष स्तर के कर्मचारियों ने भारतीय स्टार्टअप छोड़ दिया। अकेले उड़ान में सीएफओ आदित्य पांडे और एफएमसीजी बिजनेस हेड विनय श्रीवास्तव सहित दो लोगों की विदाई हुई। फोन पे के स्वामित्व वाले 'इंडस ऐपस्टोर' और नॉलेजहट के सीईओ और डीलशेयर और फैशिन्जा के सह-संस्थापक चले गए हैं। छंटनी के अलावा, नॉन-फन्जिबल टोकन (एनएफटी) प्लेटफॉर्म रारियो और बाइटडांस के रेसो ने परिचालन बंद करने की घोषणा की।

सार संक्षेप

दिल्ली के करोल बाग में दिखीं टेस्ला कार

नई दिल्ली। भारतपे के पूर्व एमडी अशनीर ग्रोवर ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर दिल्ली की पहली 'क्रॉस-ब्रीड' टेस्ला कार की तस्वीर साझा की है। पोस्ट के अनुसार, ये कार, बोल्डर ग्रे कलर में बीवाईडी (बिल्ड योर ड्रीम्स) एट्टो 3 है, ये करोल बाग में देखी गई और इसके पीछे 'टेस्ला' लिखा हुआ है। ग्रोवर ने शनिवार को लिखा, 'दुनिया की पहली 'क्रॉस-ब्रीड' टेस्ला! दिल्ली के किसी लड़के ने सचमुच करोल बाग में 'अपना सपना पूरा किया।' अशनीर ग्रोवर की पोस्ट को एक्स पर दो लाख से ज्यादा बार देखा गया और चार हजार से ज्यादा लाइक मिले। उनके पोस्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए कई यूजर्स ने अपने विचार साझा किए। एक यूजर ने लिखा, 'करोल बाग के पास हर बात का जवाब है। निर्वाण यहीं है।' एक अन्य यूजर ने कहा, 'इसे देखने के बाद एलन अपना प्लांट करोल बाग में स्थापित करेंगे। एक अन्य यूजर ने कहा, 'हम भारतीय हैं सर। हम किसी भी तरह से अपने सपनों को साकार कर सकते हैं।' बीवाईडी एट्टो 3 बीवाईडी ऑटो द्वारा निर्मित एक इलेक्ट्रिक एसयूवी है। कीमत 33,99,000 रुपए से शुरू होती है। पिछले साल दिसंबर में, टेस्ला मॉडल एक्स स्पोर्ट्स यूटिलिटी व्हीकल (एसयूवी) को बेंगलुरु की एक सड़क पर देखा गया था और इसकी तस्वीरें तेजी से सोशल मीडिया पर वायरल हो गईं।

हुंडई, किआ की ईवी बिक्री 1.5 मिलियन यूनिट से अधिक

सियोल। दक्षिण कोरिया की हुंडई मोटर और उसकी छोटी सहयोगी कंपनी किआ ने रविवार को कहा कि हुंडई द्वारा अपना पहला ईवी मॉडल पेश करने के 12 साल बाद उनकी संयुक्त इलेक्ट्रिक वाहन बिक्री दिसंबर तक 1.5 मिलियन यूनिट से अधिक हो गई है। हुंडई ने जुलाई 2011 में घरेलू बाजार में अपना पहला ईवी मॉडल, ब्लूऑन लॉन्च किया, जो आई10 मिनी कार पर आधारित था। योनहाप समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, हुंडई और किआ ने 2023 में 516,441 ईवी बेचीं, इससे पिछले साल के अंत में उनकी संचित ईवी बिक्री 1.53 मिलियन यूनिट हो गई। पिछले साल 10 हुंडई और किआ ईवी में से आठ विदेशों में बेची गईं। सबसे अधिक बिकने वाले मॉडलों में हुंडई की कोना इलेक्ट्रिक और आईओएनआईक?यू 5, और किआ की नीरो और ईवी6 शामिल हैं। ईवी की बिक्री में मंदी के बावजूद, हुंडई ने इस साल के अंत में कैस्पर मिनी कार का विद्युतीकृत संस्करण लॉन्च करने की योजना बनाई है, और किआ दूसरी तिमाही में अपने घरेलू संयंत्र में ईवी 3 कॉम्पैक्ट ईवी मॉडल का उत्पादन शुरू करेगी। 2024 में, हुंडई का लक्ष्य 4.24 मिलियन ऑटो बेचने का है, जो पिछले साल के 4.21 मिलियन से थोड़ा अधिक है, और किआ का लक्ष्य 3.2 मिलियन यूनिट बेचने का है, जो 3.08 मिलियन से 3.6 प्रतिशत अधिक है। टोयोटा मोटर कॉर्प और वोक्सवैगन समूह के बाद दोनों मिलकर बिक्री के मामले में दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी कार निर्माता कंपनी हैं।

खेल जगत

श्रीलंका के खिलाफ आगामी घरेलू श्रृंखला से बाहर हो सकते हैं शाकिब

नई दिल्ली, 4 फरवरी (एजेंसियां)। बांग्लादेश के ऑलराउंडर शाकिब अल हसन ने अपनी आंखों की समस्या के कारण श्रीलंका के खिलाफ आगामी घरेलू श्रृंखला में भाग लेने को लेकर अनिश्चितता व्यक्त की है। उन्होंने यह भी कहा कि वह बांग्लादेश वनडे प्रारूप के कप्तान के रूप में अपने भविष्य के बारे में बोर्ड से बात करेंगे। आंखों में दिक्कत को लेकर शाकिब अल हसन काफी समय से परेशान हैं। बांग्लादेश के लिए उनकी आखिरी उपस्थिति भारत में वनडे विश्व कप 2023 के दौरान हुई थी। मौजूदा बांग्लादेश प्रीमियर लीग में शाकिब रंगपुर राइडर्स के लिए एक ऑलराउंडर के बजाय एक स्पिनर के रूप में खेल रहे हैं।

इंग्लैंड को जीत के लिए 332 रन की दरकार

■ सत्येन्द्र पाल सिंह

नई दिल्ली, 4 फरवरी (देशबन्धु)। आलोचनाओं से जूझ रहे शुभमन गिल के तीसरे टेस्ट शतक की बदौलत पहली पारी में 143 रन की बढ़त हासिल करने वाली भारतीय टीम ने विशाखापट्टनम के वाईएस राजशेखर रेड्डी एसीए-वीडीसीए क्रिकेट स्टेडियम में रविवार को दूसरे क्रिकेट टेस्ट तीसरे दिन सुबह बिना क्षति 28 रन से आगे खेलना शुरू कर चायकाल के बाद अपनी दूसरी पारी में 255 रन बनाकर इंग्लैंड के सामने जीत के लिए 399 रन का लक्ष्य रखा। रविचंद्रन अश्विन (29 रन,61 गेंद, एक छक्का, दो चौके)के इंग्लैंड के लेग स्पिनर रेहान अहमद (3/88) की ऑफ स्टंप पर पड़ कर नीची रहती गेंद पर विकेटकीपर बेन फॉक्स को कैच थमा आउट होने के साथ भारत की दूसरी पारी 78.3 ओवर में तीसरे दिन का खेल खत्म होने से करीब एक घंटा पहले समाप्त हुई। शुभमन गिल ने ड्रिंक्स के बाद ऑफ स्पिनर शोएब बशीर की गेंद पर दो रन लेकर 132 गेंद खेल कर दो छक्कों और 11 चौकों की मदद से अपना शतक पूरा कर भारत के स्कोर को 200 के पार पहुंचाया। शुभमन गिल ने रेहान अहमद के एक ओवर में एक छक्के व दो चौके सहित 16 रन बटोरे। शुभमन गिल का तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी करते हुए यह पहला टेस्ट शतक है। भारत की पहली पारी के 396 रन के जवाब में इंग्लैंड की टीम दूसरे दिन अपनी पारी में 253 रन बनाकर आउट हो गई थी। भारत को पहली पारी में 143 रन की बढ़त मिली थी।

इंग्लैंड ने तीसरे दिन का खेल बंद होन तक सलामी बल्लेबाज बेन डकेट बेन डकेट (28 रन, 27 गेंद, छह चौके)का विकेट खोकर 67 रन और उसे जीत के लिए 332 रन और

■ शुभमन के शतक से भारत ने इंग्लैंड के सामने जीत के लिए रखा 399 का लक्ष्य
■ इंग्लैंड को जीत के लिए चाहिए और 332 रन, दूसरी पारी में नौ विकेट बाकी

बनाने हैं दूसरी पारी में नौ विकेट बाकी हैं और तब जैक क्राली 50 गेंद खेल कर एक छक्के और तीन चौकों की मदद 29 और रात्रिप्रहरी के रूप में भेजे गए रेहान अहमद 9 गेंद खेल कर दो चौके की मदद से आठ रन बनाकर खेल रहे थे। बराबर तेज प्रहार करने के अंदाज में उतरे इंग्लैंड के सलामी बल्लेबाज बेन डकेट (28 रन, 27 गेंद, छह) ने आफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन की तेजी से भीतर आती गेंद को रक्षात्मक ढंग से खेलने की कोशिश की और सीधी रही गेंद उनके बल्ले का बाहरी किनारा लेकर उछली और विकेटकीपर केएस भरत ने गोता लगा बढ़िया कैच लपका और इंग्लैंड ने पहला विकेट 50 रन पर खोया। अश्विन अब 500 टेस्ट विकेट से मात्र तीन विकेट दूर हैं और भारत की पकड़ फिलहाल दूसरे टेस्ट पर मजबूत है क्योंकि अब आगे गेंद के और स्पिन और रिवर्स स्विंग होने की उम्मीद है और इसका भारतीय स्पिनरों के साथ तेज गेदबाज जसप्रीत बुमराह के पूरा लाभ उठाने की उम्मीद है। जैक क्राली और बेन डकेट की सलामी जोड़ी ने आक्रामक अंदाज में इंग्लैंड की दूसरी पारी शुरू की और खासतौर पर तेज गेंदबाज मुकेश कुमार को निशाना बना खुलकर चौके बटोरे। भारत के लिए नई गेंद से आगाज करने वाले तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने बेहतरीन गेंदबाजी की और उनकी गेंद पर बराबर जाक क्राली ऑफ स्टंप के बाहर बाहर बराबर चूके लेकिन किसी तरह बचते रहते और उन्होंने शुरू के पांच ओवर में मात्र 9 रन दिए। इससे पूर्व शुभमन गिल (104, 147 गेंद, 2 छक्के व 11 चौके)ने चायकाल के बाद पांचवें बल्लेबाज के रूप में शोएब बशीर की गेंद को रिवर्स स्वीप कर विकेटकीपर बेन फॉक्स को कैच थमाने से पहले आउट होने से पहले श्रेयस अय्यर (29 रन,52 गेंद 2 चौके)की तीसरे विकेट के 81 और अक्षर पटेल (45 रन, 84 गेंद, छह चौके) के साथ पांचवें विकेट के लिए 89 रन की भागीदारी कर भारत को दूसरी पारी में 250 रन के पार पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई। शुभमन गिल के रूप में 56 वें ओवर में पांचवां विकेट 211 रन पर खोने के बाद भारत ने अपने बाकी के पांच विकेट मात्र 44 रन जोड़ कर खो दिए। इंग्लैंड के बाएं हाथ के स्पिनर टॉम हार्टले (4/77) ने श्रेयस अय्यर को अपने कप्तान बेन स्टोक्स के पीछे दौडते हुए लॉन्ग ऑफ पर लपके एक मुश्किल कैच के जरिए आउट कर अपना पहला विकेट लेने के बाद अक्षर पटेल को नीची रहती गेंद पर एलबीडब्ल्यू आउट कराने के बाद कुलदीप यादव(0)को मिड विकेट पर और जसप्रीत बुमराह (0)को गली में लपकवाया। इंग्लैंड के अनुभवी तेज गेंदबाज जेम्स एंडरसन(2/29)ने शनिवार के अविजित बल्लेबाज कप्तान रोहित शर्मा (13 रन, 21 गेंद, तीन चौके) को कोण बनाती तेजी बनाती गेंद पर बोल्ड किया और भारत ने पहला विकेट 29 रन पर खो दिया। एंडरसन ने अपने अगले ओवर में पहली पारी में दोहरा शतक जड़ने वाले यशस्वी जायसवाल (17 रन, 27 गेंद, 3 चौके) को ड्राइव करने पर मजबूर कर पहली स्लिप में जो रूट के हाथों कैच कराया और भारत ने शुरू के दो विकेट मात्र 30 रन पर खो दिए। यशस्वी दूसरे दिन के स्कोर में मात्र दो रन और जोड़ कर आउट हो गए श्रेयस अय्यर के हार्टले का पहला शिकार बन तीसरा विकेट 111 रन पर गंवाने के बाद भारत के स्कोर में 11 रन और जुड़े कि रजत पाटीदार(9) ने लेग स्पिनर रेहान अहमद की नीची रहती गेंद को कट करने की कोशिश में विकेटकीपर बेन फॉक्स को कैच थमा बैठे। भारत ने लंच तक अपनी दूसरी पारी में चार विकेट खोकर 130 रन बनाए। शुभमन गिल और अक्षर पटेल ने लंच और चायकाल के बीच अच्छी बल्लेबाजी की और इस दौरान भारत ने 97 रन जोडे लेकिन बदकिस्मती से ये दोनों चायकाल से पहले नौ रन के भीतर आउट होने से भारत की दूसरी पारी लड़खड़ा सी गई। चायकाल के समय भारत ने अपनी दूसरी पारी में छह विकेट पर 227 रन बनाए थे। लेग स्पिनर रेहान अहमद ने चायकाल के बाद श्रीकर भरत (6) को कप्तान बेन स्टोक्स के मिड ऑन पर कुलदीप यादव(0) को मिडविकेट पर डकेट के हाथों कैच करा भारत का स्कोर आठ विकेट पर 229 कर दिया।

एकदिवसीय मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया ने वेस्टइंडीज को 83 रनों से हराया

सिडनी 4 फरवरी (एजेंसियां)। जॉश हेजलवुड और शॉन ऐबट ने तीन-तीन विकेट की बदौलत ऑस्ट्रेलिया ने रविवार को दूसरे एकदिवसीय मुकाबले में वेस्टइंडीज को 83 रन से हराते हुए तीन मैचों की श्रृंखला में 2-0 की अजेय बढ़त बना ली है। 259 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी वेस्टइंडीज की शुरुआत बेहद खराब रही और उसने 19 रन पर अपना पहला विकेट गंवा दिया था। नौवें ओवर में वेस्टइंडीज के 87 रनों पर चार खिलाड़ी पवेलियन लौट चुके थे। वेस्टइंडीज के केसी कार्टी ने सर्वाधिक 40 रन बनाये। इसके अलावा कप्तान शे हॉप 29 रन, रॉस्टन चेज 25 रन, अल्जारी जोसेफ19 रन और ऐलेक ऐथनेज 10 रन बनाकर

आउट हुये। शेष कोई भी बल्लेबाज दहाई आंकड़े तक नहीं पहुंच सका। ऑस्ट्रेलिया ने वेस्टइंडीज को 43.3 ओवर में 175 रन पर ढ़ेर कर मुकाबला जीत लिया।

ऑस्ट्रेलिया की ओर से हेजलवुड और ऐबट को तीन-तीन विकेट मिले। विल सदरलैंड ने दो विकेट लिये। ऐडम जैम्पा और ऐरन हार्डी ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

इससे पहले आज यहां टॉस जीतने के बाद वेस्टइंडीज ने गेंदबाजी करने का फैसला किया। पहले बल्लेबाजी करने उतरी ऑस्ट्रेलिया ने 91 रन पर अपने पांच विकेट गंवा दिये थे। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये शॉन ऐबट 69 की अर्धशतकीय पारी और मैथ्यू शॉर्ट के 41 रन ने ऑस्ट्रेलियाई पारी को संभाला। कैमरन ग्रीन 33 रन, मार्नस लाबुशेन और ऐरन हार्डी 26-26 रन, विल सदरलैंड 18 रन और जेक फ्रेसर-मक्गर्क 10 रन बनाका आउट हुये। ऑस्ट्रेलिया की टीम निर्धारित 50 ओवर में नौ विकेट पर 258 बना सकी। वेस्टइंडीज की ओर से गुडाकेश मोटेय ने तीन विकेट लिये। रोमारियो शेफर्ड और अल्जारी जोसेफ को दो-दो विकेट मिले। मैथ्यू फोर्ड और ओशेन थॉमस ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

रियल मैड्रिड में शामिल हो सकते हैं कीलियन एम्बाप्पे : रिपोर्ट

नई दिल्ली, 4 फरवरी (एजेंसियां)। ले पेरिसियन और ईएसपीएन सहित कई रिपोर्टों के अनुसार किलियन एम्बाप्पे ने सीजन के अंत में लीग 1 को छोड़ने और जून में पेरिस सेंट-जर्मेन के साथ अनुबंध समाप्त होने के बाद रियल मैड्रिड में शामिल होने का फैसला किया है।

ले पेरिसियन की रिपोर्ट में कहा गया है, एमबप्पे ने सीजन के अंत में लीग 1 को छोड़ने और दुनिया के सबसे बड़े क्लब में शामिल होने का फैसला किया है, जो हमेशा से उनका इंतजार कर रहा था। कीलियन एम्बाप्पे 2022 से ही रियल में जाना चाहते थे, लेकिन ट्रांसफर विंडो खुलने से कुछ हफ्ते पहले ही उन्होंने पीएसजी के साथ अनुबंध विस्तार की घोषणा कर दी। ईएसपीएन ने सूत्रों का हवाला देते हुए कहा कि कीलियन एम्बाप्पे ने अभी तक पीएसजी या रियल मैड्रिड को अपने फैसले के बारे में सूचित नहीं किया है, लेकिन अगले हफ्ते घोषणा

करने की उम्मीद है। पिछले साल, 25 वर्षीय फ्रांसीसी कप्तान ने कहा था कि वह पीएसजी में अपने अनुबंध को रिन्यू नहीं करेंगे, जो 2023-24 सीज़न के अंत में समाप्त हो रहा है। वह अब एक नए क्लब के साथ अनुबंध-पूर्व समझौते पर साइन करने के लिए फ्री है। ईएसपीएन की रिपोर्ट में सूत्रों का हवाला देते हुए बताया गया है कि पीएसजी ने अपनी भविष्य की योजनाओं के लिए दो परिदृश्य तैयार किए हैं। एक जिसमें कीलियन एम्बाप्पे का क्लब में रहना शामिल था। हालांकि, सूत्रों के अनुसार, कुछ हफ्तों से क्लब में यह भावना थी कि वह क्लब छोड़ देंगे।

सार संक्षेप

विनेश फोगाट ने राष्ट्रीय कुश्ती चैंपियनशिप में जीता स्वर्ण पदक

जयपुर। दो बार की विश्व चैंपियनशिप की कांस्य पदक विजेता विनेश फोगाट ने 16 महीने के लंबे अंतराल के बाद मैट पर वापसी करते हुए रविवार को राष्ट्रीय कुश्ती चैंपियनशिप में महिलाओं की 55 किग्रा फ्रीस्टाइल स्पर्धा में ज्योति को हरा कर स्वर्ण पदक जीता। आज यहां हुए 55 किग्रा वर्ग के मुकाबले में विनेश फोगाट ने ज्योति को हराने में दो मिनट से भी कम समय लिया। विनेश ने पिछले वर्ष अगस्त में घुटने की सर्जरी कराई थी और उसके बाद दिसंबर में ही ट्रेनिंग पर वापस लौट आईं थी। वहीं एक अन्य मुकाबले में 2021 विश्व चैंपियनशिप और 2022 राष्ट्रमंडल खेलों की रजत पदक विजेता अंशू मलिक ने महिलाओं के 59 किग्रा वर्ग के खिताब पर कब्जा किया। उन्होंने चार बार की एशियाई पदक विजेता सरिता मोर को 8-3 से हराया। 2010 एशियाई चैंपियनशिप और राष्ट्रमंडल खेलों में रजत पदक जीतने वाली निर्मला ने 50 किग्रा वर्ग का खिताब हासिल करने के लिए अंडर -23 एशियाई चैंपियन नीलम को हराया।

रोमांचक मैच में बांग्लादेश को हराकर सेमीफाइनल में पहुंचा पाकिस्तान

जोहान्सबर्ग। पाकिस्तान ने बांग्लादेश को रोमांचक मुकाबले में पांच रन से हराकर आईसीसी अंडर19 पुरुष क्रिकेट विश्व कप 2024 में चौथे सेमीफाइनलिस्ट के रूप में अपनी जगह बनाई। सुपर सिक्स के आखिरी मुकाबले में पाकिस्तान ने बांग्लादेश को शनिवार को 5 रन से हराकर अंडर 19 विश्व कप के सेमीफाइनल में प्रवेश किया जहां उसका सामना ऑस्ट्रेलिया से होगा। पाकिस्तान को 40.4 ओवर में 155 रन पर आउट करने के बाद बांग्लादेश की बल्लेबाजी बेहद खराब रही। टीम पाकिस्तान के खिलाफ 35.5 ओवर में 150 रन पर सिमट गई और पांच रन से मैच और सेमीफाइनल की टिकट हार गई। इस करो मरो मैच मुकाबले में पाकिस्तान ने अंतिम क्षणों में मैच का पासा पलटा। हालांकि, उसके लिए पाकिस्तान को एड़ी चोटी का जोर लगाना पड़ा। बांग्लादेश ने पाकिस्तान को 155 रन पर ढेर कर चौंकाया जरूर लेकिन बाद में पाकिस्तान ने बेहतरीन गेंदबाजी कर मुकाबले को अपने नाम कर लिया। पाकिस्तान के उबैद शाह को 44 रन देकर 5 विकेट लेने के लिए प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया। जबकि अली रजा ने 3 विकेट लेकर पाकिस्तान को नॉकआउट में पहुंचाया।

भारत ने पाकिस्तान को हराकर विश्व ग्रुप वन में किया प्रवेश

इस्लामाबाद 4 फरवरी (एजेंसियां)। भारतीय टेनिस टीम ने रविवार को पाकिस्तान के खिलाफ जीत के साथ डेविस कप 2024 विश्व ग्रुप वन में प्रवेश किया। आज यहां पाकिस्तान स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में भारतीय खिलाड़ियों ने दूसरे दिन 2-0 की बढ़त के साथ शुरुआत की। युकी भांबरी और साकेत माइनेनी ने पाकिस्तान के अकील खान और मुजम्मिल मुर्तजा की जोड़ी को दो घंटे तक चले इस युगल मुकाबले में 6-2, 7(7)-6(6) से हराया। यह 2024 डेविस कप विश्व ग्रुप वन प्ले-ऑफ मुकाबले में पाकिस्तान के खिलाफ भारत की लगातार आठवीं जीत है। भारतीय युगल जोड़ी ने पहले सेट के पहले गेम में ही बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए पाकिस्तानी जोड़ी की सर्विस ब्रेककर 1-0 की बढ़त ले ली। पांचवें गेम में विपक्षी टीम की सर्विस ब्रेक करने के बाद भारतीय टेनिस खिलाड़ियों ने 4-1 की बढ़त बना ली। भारतीय खिलाड़ियों ने पहला सेट 26 मिनट में

6-2 से जीत लिया।

दूसरे सेट में पाकिस्तानी खिलाड़ियों ने वापसी करने का प्रयास किया और बेहतरीन तालमेल के साथ अपनी सर्विस बरकरार रखी। दूसरे और तीसरे गेम में दोनों टीमों ने बिना कोई अंक गंवाए अपनी-अपनी सर्विस बनाए रखी। हालांकि, भांबरी और माइनेनी ने विपक्षी टीम पर अपना दबदबा बनाये रखा। भारतीय जोड़ी ने केवल एक अंक गंवाया और शेष पांच अंक हासिल कर मैच में जीत दर्ज की और सितंबर में होने वाले डेविस कप विश्व ग्रुप वन में प्रवेश किया। उल्लेखनीय है कि डेविस कप विश्व ग्रुप वन प्ले-ऑफ के पहले दिन रामकुमार रामनाथन ऐसाम-उल-हक कुरैशी को 6(7)-7(3), 7(7)-6(4), 6-0 से हराया था। जबकि श्रीराम बालाजी ने अकील खान को सीधे सेटों में 7-5, 6-3 से पराजित किया। दूसरे दिन भारत ने युगल मुकाबले में जीत दर्ज करते हुए 3-0 की अजेय बढ़त ले ली।

पीकेएल 10 में सुमित के हाई 5 से यूपी योद्धाओं की यू मुंबा पर महत्वपूर्ण जीत

नई दिल्ली, 4 फरवरी (एजेंसियां)। यहां के त्यागराज इंडोर स्टेडियम में शनिवार को प्रो कबड्डी लीग (पीकेएल) के सीजन 10 के मैच में यूपी योद्धाओं ने सुमित के कुछ अच्छे बचाव को रेडर गगना गौड़ा और महिपाल की मदद से यू मुंबा पर 38-23 से प्रभावशाली और महत्वपूर्ण जीत हासिल की।

पूरे मैच के दौरान यू मुंबा के कई बदलावों से टीम को ज्यादा फायदा नहीं हुआ, शिवम के ऑफ द बेंच से पांच अंक लेने के बावजूद, लेकिन यूपी योद्धाओं को प्लेऑफ की दौड़ में अहम लाइफलाइन मिली।

मैच दोनों तरफ झुक गया, क्योंकि शुरुआत में रक्षकों का दबदबा कायम रहा। यूपी योद्धा और यू मुंबा के रेडर मैच की शुरुआत में अपने-अपने करो या मरो रेड में असफल रहे, यहां तक कि यू मुंबा ने सुपर टैकल हासिल करने के लिए स्टार रेडर परदीप नरवाल को भी मैट से बाहर

भेज दिया। पहले हाफ यूपी योद्धा अपने रक्षात्मक और आक्रामक आक्रमणों का अधिकतम लाभ उठाते हुए अंक अर्जित करने की होड़ में लग गए। एक और डू-ऑर-डाई रेड और फिर ऑल-आउट उनके पक्ष में गया, जिसका नेतृत्व महिपाल और गगना गौड़ा ने चार-चार अंकों के साथ किया। यूपी योद्धाओं के डिफेंडरों में स्टार लेफ्ट कॉर्नर सुमित थे, जिन्होंने भी चार अंक बनाए और उनकी टीम ने दूसरे हाफ में 18-11 की बढ़त बना ली। यू मुंबा ने दूसरे हाफ की शुरुआत में अपनी गलतियों की भरपाई करते हुए कुछ असाधारण बचाव किया और दूसरा सुपर टैकल अपने नाम कर लिया। हरफनमौला खिलाड़ी अमीरमोहम्मद जफरदानेश और संथापन सेल्वम ने अपनी टीम को खेल में वापस लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यूपी योद्धाओं ने रणनीतिक समय समाप्ति के बाद यू मुंबा के खिलाफ एक और ऑल-आउट के साथ शुरुआत की, जिसके बाद सुमित ने रेडर शिवम को आउट करके अपना हाई 5 पूरा किया। तब तक मैच यू मुंबा के हाथ से निकल चुका था, क्योंकि परदीप नरवाल की अगुवाई वाली टीम ने बड़ी जीत हासिल कर अपनी हार का सिलसिला खत्म कर दिया।

बुमराह का सामना करना दुनिया में किसी और गेंदबाज का सामना करने जैसा नहीं है : स्टुअर्ट ब्रॉड

विशाखापत्तनम, 4 फरवरी (एजेंसियां)। इंग्लैंड के पूर्व तेज गेंदबाज स्टुअर्ट ब्रॉड ने भारत के तेज गेंदबाजी आक्रमण के अगुआ जसप्रीत बुमराह की प्रशंसा करते हुए कहा है कि उनका सामना करना दुनिया में किसी और गेंदबाजका सामना करने जैसा नहीं है और उन्हें अपने खेल के दिनों में बल्लेबाजी के दौरान उनकी गेंदों का सामना करना पसंद नहीं था। 6-45 के अपने जादुई स्पैल में, जहां बुमराह ने रिवर्स-स्विंग गेंदबाजी में मास्टरक्लास का प्रदर्शन किया, उन्होंने जो रूट, ओली पोप, जॉनी बेयरस्टो, बेन स्टोक्स, टॉम हार्टले और जेम्स एंडरसन को आउट किया। रूट और पोप को उनके आउट करने से हर कोई मंत्रमुग्ध हो गया - रूट ने एक गेंद पर प्रहार किया और पहली स्लिप में आउट हो गए, जबकि पोप को इनस्विंगिंग यॉर्कर ने मध्य और लेग स्टंप को चीरते हुए आउट कर दिया। स्टोक्स के विकेट से इस प्रारूप में बुमराह ने 150वां विकेट हासिल किया। उनका सामना करना दुनिया में किसी और का सामना करने जैसा नहीं है और मैं इससे नफरत करता था। श्रीलंका के लसिथ मलिंगा, अपने स्लिंग राउंड-आर्म रिलीज के साथ, उनके बारे में एक अलग बात रखते थे और बुमराह की गेंदों में भी कुछ ऐसा ही है। क्योंकि वह बहुत शांत, छोटे, फेरबदल वाले रन-अप से आता है, वह कोई वास्तविक ऊर्जा उत्पन्न नहीं करता है और इसलिए स्ट्राइकर के अंत में गेंद के अचानक आपके पास आने का कोई वास्तविक निर्माण नहीं होता है। यह बहुत परेशान करने वाला हो सकता है.

ब्रॉड ने कहा, कुछ सर्वश्रेष्ठ तेज गेंदबाजों के बारे में सोचें जिन्होंने खेल खेला है और उनमें क्रीज पर इतनी तेजी से आने की एक आम बात है कि आपका दिमाग आपको तेज गति की उम्मीद करने के लिए कह रहा है। ब्रॉड ने रविवार को डेली मेल के लिए अपने कॉलम में लिखा, बुमराह इसके विपरीत है, लेकिन वह अपने सामने के पैर को मोड़कर क्रीज पर ऐसा कोण बनाता है - हमेशा तेज गेंदबाजी के लिए

एक अच्छा संकेत - और फिर गेंद को अपने सिर के ऊपर या यहां तक कि अपने सामने के पैर के ऊपर से नहीं, बल्कि बल्लेबाज के लिए पैर के करीब छोड़ता है। विशाखापत्तनम में उनके स्पैल के बारे में विस्तार से बात करते हुए, ब्रॉड ने कहा, रूट के लिए जो गेंद गई वह इस प्रकार की क्लासिक थी- लगातार चार गेंदें डक हुई, उसके बाद एक बाहर गई। मूवमेंट का आधे-बल्ले की चौड़ाई का अंतर घातक साबित हुआ। यात्रा की दिशा के बारे में अनिश्चित होने के कारण रूट को खेलना पड़ा और वे विकेट के पीछे आउट हो गए। यह एक उच्च श्रेणी के गेंदबाज द्वारा एक सुंदर सेट-अप था। समान रूप से, मुझे नहीं लगता कि दुनिया के किसी भी खिलाड़ी को इनस्विंगिंग यॉर्कर पर बल्ला मिलता है जो ओली पोप के लिए था। फिर, यह बूमरैंग नहीं था, यह बस था उसने बिल्कुल सही मात्रा में काम किया और सबसे प्रतिष्ठित चित्रों में से एक का निर्माण किया जिसे एक तेज़ गेंदबाज़ देखना चाह सकता था - एक नहीं, बल्कि दो स्टंप बिखरे हुए। वह पिछले साल ही पीठ की गंभीर चोट से उबरकर वापस आए थे और जिस तरह से उन्होंने टेस्ट विकेट लिए हैं, वह उन सभी गेंदबाजों के लिए प्रेरणा है, जो लंबे समय से टीम से बाहर हैं। ब्रॉड ने इस बारे में अधिक बात की कि तकनीकी दृष्टि से कौन सी चीज बुमराह को सभी प्रारूपों में एक घातक गेंदबाज बनाती है। एक तेज गेंदबाज के लिए असामान्य रूप से, उसका हाथ गेंद डालने में सख्त होता है, लेकिन यह सब उसके लिए बहुत स्वाभाविक है और उसके पास जो अनुकरणीय नियंत्रण है वह छोटी गेंद फेंकने से आता है, एक ऐसी सुविधा जो क्रीज पर शानदार संतुलन सुनिश्चित करती है। तो जबकि उनके एक्शन के पहलू विरोधियों के लिए उनके ट्रिगर मूवमेंट को समय पर पहचानना बहुत मुश्किल बनाते हैं, तथ्य यह है कि यह सीधा और संतुलित है, इसका मतलब है कि बड़ी मात्रा में गलत नहीं हो सकता है। बुमराह के पास भी कौशल की पूरी श्रृंखला है। वह नई गेंद को दोनों तरफ स्विंग करने में सक्षम है - 2018 में रोज़ बाउल में छोड़े गए प्रसिद्ध इन-डकर कीटन जेनिंग्स को याद करें, जो मध्य स्टंप के बीच में हिट करता था - विकेट के चारों ओर से बाएं हाथ के बल्लेबाजों से दूर या, जैसा कि हम करते हैं शनिवार को देखा गया, पुरानी गेंद रिवर्स-स्विंग कराती है।